

शेयर बाजार में सफल कैसे हों ?

महेश चंद्र कौशिक

शेयर बाजार में सफल कैसे हों?

महेश चंद्र कौशिक



प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

ISO 9001:2008 प्रकाशक

प्रस्तावना

यह पुस्तक महेश चंद्र कौशिक का एक उत्कृष्ट कार्य है। यह पुस्तक छोटे खुदरा निवेशकों पर केंद्रित है और उन्हें निवेश के बारे में कारगर सुझाव देती है।

इस पुस्तक के लेखक ने बहुत सरल भाषा का प्रयोग किया है और तकनीकी शब्दों के प्रयोग से बचते हुए इस पुस्तक को समझने में सुगम और पढ़ने में दिलचस्प बना दिया है।

शेयर बाजार के प्रत्येक शुरुआती को यह पुस्तक निश्चित रूप से पढ़नी और खरीदनी चाहिए, क्योंकि यह शेयर बाजार के बारे में आपके सभी प्रश्नों के उत्तर देगी।

यह पुस्तक पढ़ने के बाद आप समझ जाएंगे कि क्यों कुछ लोग हमेशा शेयर बाजार से पैसे बनाते हैं और कुछ लोग हमेशा शेयरों में पैसे गंवाते हैं।

यह पुस्तक शेयर बाजार के बारे में आपके दृष्टिकोण को बदल सकती है और मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यदि कोई महेश चंद्र कौशिक के सिद्धांत का पूरे अनुशासन के साथ पालन करता है तो उसका \$ 100 का शुरुआती निवेश बीस वर्षों में बढ़कर \$ 7,18,03,722 हो जाएगा, जैसाकि इस पुस्तक का लेखक अध्याय-2 में दावा करता है।

इसलिए मैं 'शेयर बाजार में सफल कैसे हों?' की प्रत्येक निवेशक की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में स्पष्ट रूप से सिफारिश कर रहा हूँ।

— डॉ. रामस्वरूप पारीक

एम.एस-सी., एम.ए. (अर्थशास्त्र), पी-एच.डी., अर्थशास्त्र व्याख्याता

भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) अनुसंधान विश्लेषक

भूमिका

मैं एक सरकारी नौकरी में हूँ, लेकिन मैं हमेशा से अपना खुद का व्यवसाय करना चाहता था। जब मैंने शेयर बाजार व्यापार के बारे में सुना तो मुझे यह दुनिया का सबसे आसान और सबसे स्मार्ट व्यवसाय लगा, क्योंकि हम इस व्यवसाय को न्यूनतम निवेश के साथ आरंभ कर सकते हैं और इस स्मार्ट व्यवसाय के लिए किसी अलग स्थान की भी आवश्यकता नहीं होती।

शेयर बाजार निवेश में अधिक समय निवेश करने की आवश्यकता नहीं होती। आप अंशकालिक आधार पर अपना शेयर बाजार व्यवसाय प्रबंधित कर सकते हैं।

मैंने अपना शेयर बाजार निवेश वर्ष 2005 में आरंभ किया।

मैं इसे 'शेयरों का अपना खुदरा स्टोर' कहता था। इस खुदरा स्टोर शैली में मेरा पोर्टफोलियो एक खुदरा स्टोर की तरह लगता है, जहाँ अधिकांश कीमती शेयरों की एक छोटी मात्रा बिक्री के लिए उपलब्ध रहती है। विस्तृत जानकारी के लिए इस पुस्तक का पहला अध्याय पढ़ें।

जब मैं बाजार में आया तो मेरे दोस्तों ने कहा कि शेयर बाजार मेरे जैसे एक छोटे निवेशक के लिए बहुत खतरनाक है। उन्हें लगा, मैं बाजार में अपना निवेश खो बैठूँगा और दिवालिया हो जाऊँगा।

मेरे दोस्त सही हैं, क्योंकि अधिकांश छोटे निवेशक अपने शेयर बाजार निवेश को व्यापार की दृष्टि से नहीं देखते। वे इसे एक सट्टे की तरह समझते हैं और कुछ आसान पैसे बनाना चाहते हैं। लेकिन मैं हमेशा अपने शेयर बाजार निवेश को व्यापार की तरह और एक खुदरा दुकान की तरह देखता हूँ।

मैं शेयर बाजार में जीत रहा हूँ और हमेशा उससे पैसे बनाता हूँ।

निवेश के अपने शुरुआती वर्षों में मैं शेयर बाजार का विशेषज्ञ नहीं था। मैं आपकी तरह एक छोटा निवेशक था और मैंने शेयर बाजार में जीतने का अपना सिद्धांत खुद विकसित किया।

अब मैंने अनुसंधान विश्लेषकों के लिए एन.आई.एस.एम. प्रमाणीकरण पास कर लिया है और एक सेबी पंजीकृत शोध विश्लेषक बन गया हूँ।

मैंने पिछले सात वर्षों से शेयर बाजार में जीतने के बारह साल के अनुभव अपने ब्लॉग www.maheshkaushik.com पर व्यक्त किए हैं।

हाल ही में मैंने छोटे निवेशकों की मदद करने के लिए यह पुस्तक लिखी। यदि आप इस पुस्तक को कदम-कदम पढ़ेंगे और इसमें दिए सुझावों का पालन करेंगे तो आप शेयर बाजार में कभी नुकसान नहीं उठाएँगे।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप जानेंगे कि कैसे शेयर बाजार में 100 डॉलर का एक आरंभिक निवेश बीस वर्षों में 7,18,03,722 डॉलर हो सकता है।

तो शेयर बाजार में निवेश करने का आनंद लें और मुझे इस पुस्तक के बारे में अपनी टिप्पणियाँ एवं सुझाव और मेरे सिद्धांत के बारे में अपने प्रश्न भेजें। मुझे आपके ई-मेल के जवाब देने में खुशी होगी।

— महेश चंद्र कौशिक

टी.आर.ए.

पिंडवारा, जिला सिरोही

राजस्थान (भारत)

ई - मेल : mahesh2073@yahoo.com

मेरा विशेष आभार



1. श्री श्री 1008 सतनारायणजी फलाहारी बाबा को, जो मेरे गुरु हैं (आध्यात्मिक शिक्षक)।
2. आदरणीय श्री मनीराम सेतिया, अवकाश-प्राप्त प्रधानाध्यापक को, जिन्होंने मुझे मेरे बचपन में मार्गदर्शन दिया और मुझमें नैतिक मूल्यों का बीजारोपण किया और मुझे सिखाया कि कर्म ही पूजा है।

अपने शेयर बाजार निवेश को किसी खुदरा व्यापार के रूप में देखें

अधिकांश खुदरा निवेशक (छोटे निवेशक) अपने सारे पैसे एक ही शेयर में निवेश कर देते हैं और कुछ छोटे निवेशक अपनी सारी बचत बारह से पंद्रह लोकप्रिय शेयरों में निवेश करते हैं।

यदि दुर्भाग्यवश, वे शेयर बाजार में अच्छा प्रदर्शन नहीं करते तो उनका पोर्टफोलियो मूल्य कुछ ही समय में 40 से 60 प्रतिशत तक नीचे चला जाता है।

फिर ये छोटे निवेशक अपनी किस्मत को दोष देते हैं और शेयर बाजार निवेश की आलोचना करते हैं।

मुझे लगता है कि यह रणनीति एक अच्छी निवेश रणनीति नहीं है, इसलिए मैंने एक खुदरा दुकान की तरह सबसे अच्छी निवेश रणनीति का मूल विचार खोजा—

क्यों न खुदरा निवेशक अपने शेयर बाजार निवेश को एक खुदरा दुकान की तरह समझें?

मुझे लगता है कि वे शेयर बाजार से आसानी से पैसे बनाना चाहते हैं और शेयर बाजार की मदद से बहुत कम समय में करोड़पति बनना चाहते हैं।

वे इस बारे में गलत तरीके से जा रहे हैं। शेयर बाजार आसानी से पैसे बनाने का कोई उपकरण नहीं है। यदि आप शेयर बाजार में गलत तरीके से निवेश करेंगे तो आप अपने सारे पैसे खो देंगे; लेकिन मैं आपको विविधीकरण और धैर्य की मदद से करोड़पति बनने का उपाय बताऊंगा।

मैं अपने शेयर कारोबार की रणनीति में खुद को शेयरों के दुकानदार के रूप में देखता हूँ।

मैं एक अकेले शेयर में सिर्फ भारतीय मुद्रा के 6,400 रुपए निवेश करता हूँ।

मैं जानता था कि आप पूछना चाहेंगे कि 6,400 रुपए के पीछे कौन सा तर्क है? यह राशि भारतीय मुद्रा के 5,000 रुपए या 10,000 रुपए या कोई और राशि क्यों नहीं हो सकती? कृपया चिंता न करें। मैं यहाँ हर बात को स्पष्ट करूंगा। यहाँ मैंने प्रत्येक शेयर में अपनी बुनियादी निवेश राशि बताई है। यह राशि एक निश्चित राशि नहीं है।

वर्ष 2005 में जब मैंने अपना पहला शेयर खरीदा तो मैंने प्रत्येक शेयर की मूल राशि के रूप में 2,700 रुपए निश्चित किए और प्रत्येक वर्ष इस मूल राशि में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि करना तय किया। इसलिए वर्ष 2017 के लिए यह मूल राशि भारतीय मुद्रा के 6,400 रुपए है। मैंने इस बिंदु के बारे में विस्तृत जानकारी अध्याय-13 में दी है। कृपया पूरी पुस्तक पढ़ें और एक भी पृष्ठ न छोड़ें, क्योंकि मेरे साथ शेयर बाजार की यात्रा करने के लिए आपका प्रत्येक पृष्ठ पढ़ना आवश्यक है।

मेरा पोर्टफोलियो एक खुदरा दुकान की तरह है, जहाँ लाभांश प्रदान करनेवाले स्टॉक्स के विभिन्न प्रकार बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

मैं कभी स्टॉप लॉस का इस्तेमाल नहीं करता, न ही कभी चिंता महसूस करता हूँ, यदि मेरे किसी शेयर का खरीद मूल्य से कम में कारोबार होता है; क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं एक अच्छा मौलिक लाभांश देनेवाला शेयर खरीदता हूँ और एक दिन मैं अपना शेयर 15 प्रतिशत + लाभ के साथ बेचूंगा। यदि मेरा शेयर अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं करता तो मैं अपनी होल्डिंग अवधि में लाभांश का आनंद लेता हूँ।

दुकानदार दलीप भाई माली का उदाहरण

करीब दस वर्ष पहले मैं एक जनरल स्टोर में गया और मैंने स्टोर मालिक से कुछ प्रश्न पूछे। दुकानदार दलीप भाई माली के जवाबों ने मेरा दिल छू लिया। उन जवाबों ने मेरी व्यापार नीति डिजाइन करने में मेरी मदद की और मुझे लगा कि एक खुदरा दुकानदार की तरह शेयर बाजार में निवेश करना एक बहुत सफल नीति है।

उनसे मेरा पहला प्रश्न था—“क्या आपकी दुकान में कुछ ऐसी चीजें हैं, जिनकी माँग नहीं है या फिर ऐसी चीजें, जिनकी पिछले दो-तीन सालों में बिक्री नहीं हुई है?”

उन्होंने जवाब दिया, “साहब, मेरे पास कई ऐसी चीजें हैं, जो पिछले तीन सालों से नहीं बिकी हैं।”

(फिर हम क्यों चिंता करते हैं, यदि हमारे शेयर दो-तीन महीने नहीं बिकते?)

मैंने उनसे पूछा, “क्या आप इन चीजों पर नुकसान उठाने को तैयार हैं, यदि मैं आपको इनकी आधी कीमत देता हूँ?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं साहब, मैं इन चीजों को सिर्फ लाभ में बेचता हूँ; क्योंकि एक दिन इन चीजों की दोबारा माँग हो सकती है। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है, और अगर मैं इस तरह की चीजों पर नुकसान उठाता हूँ तो मैं कभी लाभ नहीं कमा पाऊंगा।”

(याद रखें कि उनकी दुकान का सामान उन्हें लाभांश नहीं देता, जबकि मेरे स्टॉक मुझे लाभांश देते हैं; क्योंकि मैं हमेशा लाभांश देनेवाली मजबूत कंपनियों के स्टॉक खरीदता हूँ।)

उनसे मेरा तीसरा सवाल था—“क्या आप उन चीजों की अधिक मात्रा खरीदने के लिए तैयार हैं, जिनकी बिक्री अच्छी नहीं है?”

(शेयर बाजार की भाषा में, शेयरों की कीमत गिरने पर उनका औसत)।

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।” और मेरी ओर ऐसे देखा, जैसे मैं दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख हूँ!

अब मैंने उनसे पूछा, “आप प्रत्येक वस्तु पर कितना लाभ कमाते हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “प्रत्येक वस्तु, जिसे मैं बेचता हूँ उस पर लगभग 15 प्रतिशत।”

(फिर हम अपने शेयरों की रिटर्न के बारे में लालची क्यों हैं?)

मैंने फिर पूछा, “क्या आप किसी लाभ कमानेवाली चीज से भावनात्मक लगाव महसूस करते हैं और सोचते हैं कि वह सोने की तरह है और इसलिए आप उसे किसी भी कीमत पर नहीं बेचना चाहते, क्योंकि आपको लगता है कि यदि आप उसे अपने पास लंबे समय तक रखेंगे तो वह आपको करोड़पति बना देगी?”

दुकानदार ने मुझे अजीब नजरों से देखा और जवाब दिया, “साहब, मुझे लगता है, आप ठीक से सो नहीं पा रहे हैं और आपको जल्दी ही किसी मनोचिकित्सक के पास जाने की आवश्यकता महसूस हो सकती है, क्योंकि पूरी दुनिया में कोई भी दुकानदार अपनी दुकान की किसी भी चीज से भावनात्मक लगाव नहीं महसूस करता।”

मैं हँसने लगा और फिर मैंने ऐसे मुखतापूर्ण प्रश्न पूछने के लिए उनसे खेद प्रकट किया और उन्हें बताया कि मैं तो सिर्फ अपने शेयर बाजार के कारोबार की तुलना उनकी खुदरा दुकान के कारोबार से करना चाहता था।

मैंने उनकी दुकान में भोजन पकाने के कुछ मसाले, जैसे—लाल मिर्च, सूखा धनिया इत्यादि देखे और उनसे पूछा, “आपने अपने सप्लायर से ये मसाले कब खरीदे?”

उन्होंने जवाब दिया, “मैंने ये मसाले सप्लायर से तब खरीदे थे, जब नई फसल आने के कारण इनमें से प्रत्येक मसाले की कीमत कम हो गई थी। इसलिए हर साल बाजार मुझे मौका देता है, जब मैं कम कीमतों पर मसाले खरीदकर उन्हें पूरे साल के लिए 15 से 30 प्रतिशत के फायदे पर बेच सकता हूँ।”

मुझे लगता है कि एक खुदरा दुकानदार वास्तव में बाजार को समझता है, क्योंकि वह अपने सारे पैसे 1-10 मर्दों में कभी नहीं लगाता।

वह कभी अच्छी गुणवत्तावाले सामानों में स्टॉप लॉस नहीं डालता। वह कभी भी एक गैर-निष्पादित वस्तु का औसत नहीं करता और हमेशा कम कीमत पर खरीदने और अधिक पर बेचने की नीति का पालन करता है। वह एक चीज को 15 प्रतिशत से अधिक लाभ पर बेचता है और अपने पैसे को घुमाता है। वह किसी चीज के प्रति लालच नहीं रखता।

फिर मैंने इस नीति को अपनाया और पाया कि एक खुदरा निवेशक के लिए यह सबसे अच्छी नीति है।

इसलिए मैंने सिफारिश की है कि आप एक विशेष स्टॉक में अपने पैसे का एक छोटा सा हिस्सा निवेश करें। मेरी आपको सलाह है कि आप अपने पोर्टफोलियो में विविधता तब लाएँ जब आपके पास अधिक धन हो। अपने पोर्टफोलियो का विविधीकरण इसलिए करने का प्रयास न करें, क्योंकि शेयर बाजार में इतनी सारी अच्छी सूचीबद्ध कंपनियाँ हैं।

यदि आप एक नए निवेशक हैं, जो शेयर बाजार में निवेश करना शुरू ही करनेवाला है तो सबसे पहले अपनी निवेश की राशि को छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर लें। उदाहरण के लिए, प्रत्येक कंपनी के स्टॉक में अपनी मासिक आय का सिर्फ 10 प्रतिशत निवेश करें।

इसका अर्थ है—प्रत्येक स्टॉक के लिए अपनी मूल राशि तय करना और आपकी मासिक आय का 10 प्रतिशत इस मूल राशि का महत्वपूर्ण संकेत है।

उदाहरण के लिए, यदि आपकी मासिक आय 27,000 रुपए प्रतिमाह है तो इस राशि ‘27,000 रुपए’ का 10 प्रतिशत प्रत्येक स्टॉक के लिए अपनी मूल निवेश राशि निर्धारित करें।

तो यदि आपकी मासिक आय भारतीय मुद्रा के 27,000 रुपए है और आप शेयर बाजार में 50,000 रुपए निवेश करना चाहते हैं तो पूरी राशि एक अकेले शेयर में निवेश करने के बजाय सोलह कंपनियों में 2,700 रुपए निवेश करें।

($2,700 \times 16 = 48,600$ होल्ड, 1,400 नकद में बचते हैं और प्रत्येक वर्ष अपनी मासिक आय का 10 प्रतिशत अपने निवेश में वृद्धि के लिए बचाएँ। मैं इस बिंदु को अगले अध्याय में स्पष्ट करूँगा।)

दुकानदार के दृष्टिकोण की ताकत

यदि आपके पास अच्छी गुणवत्तावाले 200 शेयर हैं, जिन्हें आपने विभिन्न निचले स्तरों पर खरीदा है, तो प्रतिदिन 15 प्रतिशत लाभ के साथ 2 शेयर बेचना मुश्किल नहीं है। मान लीजिए, आपके सभी शेयर 100 डॉलर के लॉट में हैं, अब यदि आप प्रतिदिन सिर्फ 2 शेयर बेचते हैं तो आपका लाभ प्रति लॉट 15 डॉलर होगा, जिसका मतलब है—आपकी दैनिक आय 30 डॉलर प्रतिदिन या 900 डॉलर प्रतिमाह होगी। और जब आपकी खुदरा दुकान में 2,000 शेयर होंगे तो आप प्रतिदिन 20 लॉट्स में 15 प्रतिशत लाभ अर्जित करने में सक्षम होंगे, जिसका

मतलब है—आपको दैनिक कमाई 300 डॉलर होंगी। यहाँ दिया गया उदाहरण गारंटीशुदा आय नहीं है। पारेणाम बाजार की स्थिति और आपके खरीद मूल्य के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।

इन उदाहरणों की मदद से मैं सिर्फ आपको धैर्य और विविधीकरण की शक्ति सिखाना चाहता हूँ। जब आप एक शेयर बेचें तो अपने मूल धन को एक अच्छी गुणवत्ता वाले शेयर में पुनः निवेश करें, जिसने कम कीमत पर कारोबार किया था। इस पुस्तक के कुछ आगे के अध्यायों में मैं आपको कम कीमत में अच्छी गुणवत्ता वाले शेयरों की पहचान करने के बारे में और जानकारी दूँगा।

इस अध्याय का सारांश

1. अपनी पूरी पूँजी को कभी भी एक अकेले शेयर में निवेश न करें, बल्कि 2-10 शेयरों का चुनाव करें और अपने पोर्टफोलियो में एक खुदरा दुकान की तरह विविधता लाने का प्रयास करें।
2. हमेशा एक अच्छा लाभांश देनेवाला शेयर खरीदें और उस समय खरीदें, जब उसका कारोबार कम कीमत पर हो रहा हो।
3. कभी भी एक गैर-निष्पादित शेयर से औसत न निकालें। बस, कुछ समय के लिए उसे भूल जाएँ और कंपनी में सुधार आने की प्रतीक्षा करें।
4. लालच न करें। जब कोई शेयर आपको 15 प्रतिशत + लाभांश देता है तो उसे बेच दें और अपने पैसे को घुमाएँ।
5. हमेशा एक भरोसेमंद कंपनी के कम कीमतवाले शेयर से अपनी खरीदारी की शुरुआत करें।
6. किसी विशेष स्टॉक के लिए एक न्यूनतम निवेश राशि तय करें। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास 50,000 डॉलर हैं तो आप प्रत्येक कंपनी में निवेश के लिए 100 डॉलर का उपयोग करेंगे और अपने स्वयं के शोध के आधार पर 500 अच्छा लाभांश देनेवाली कंपनियों के स्टॉक खरीदेंगे।
7. एक कारोबारी सप्ताह में एक से अधिक कंपनियों से शेयर न खरीदें, क्योंकि उससे आपको कंपनियों के मूल सिद्धांतों के बारे में शोध करने का समय मिल जाएगा और कम कीमत पर शेयर खरीदने का अवसर भी मिलेगा।
8. याद रखें कि शेयर बाजार में निवेश करने को एक सक्रिय व्यवसाय के रूप में समझा जाना चाहिए। आपको प्रतिदिन 1-2 घंटे यह शोध करने में खर्च करने की आवश्यकता होगी कि कौन से शेयर लाभांश दे रहे हैं और यह पता करने में कि मूल रूप से मजबूत कंपनियों से कौन से मौजूदा शेयर विकल्प कम कीमत पर उपलब्ध हैं?
9. धैर्य और विविधीकरण की शक्ति के साथ अपनी शेयर बाजार खुदरा दुकान का निर्माण करें। एक खुदरा दुकानदार वास्तव में बाजार को समझता है, क्योंकि वह कभी अपनी पूरी पूँजी 1-10 चीजों में नहीं लगाता। वह कभी भी अच्छी गुणवत्ता वाले सामानों में स्टॉप लॉस नहीं लगाएगा। वह कभी एक गैर-निष्पादित वस्तु से औसत नहीं निकालता और हमेशा कम कीमत पर खरीदने और अधिक पर बेचने की नीति अपनाता है। वह एक वस्तु को 15 प्रतिशत से अधिक लाभ पर बेचता है और अपने पैसे को घुमाता है। वह एक औसत उपभोक्ता की तरह किसी एक चीज के लिए लालची नहीं होता।

□

शेयर बाजार में 100 डॉलर के शुरुआती निवेश से 7,18,03,722 डॉलर कैसे बनाएँ?

इस पुस्तक के पहले अध्याय में मैंने आपको दुकानदार के दृष्टिकोण की शक्ति के बारे में बताया था। इस दुकानदार के दृष्टिकोण को संक्षेप में इन शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है—

“यदि आपके पास अच्छी गुणवत्ता वाले 200 शेयर हैं, जिन्हें आपने विभिन्न निचले स्तरों में खरीदा है तो 15 प्रतिशत लाभ के साथ प्रतिदिन 2 शेयर बेचना मुश्किल नहीं है। मान लीजिए, आपके सभी शेयर 100 डॉलर के लॉट्स में हैं। यदि आप प्रतिदिन सिर्फ 2 शेयर बेचते हैं तो आपका लाभ 15 डॉलर प्रति लॉट है, यानी आपकी दैनिक कमाई 30 डॉलर प्रतिदिन या 900 डॉलर प्रतिमाह है। जब आपके पास आपकी खुदरा दुकान में 2,000 शेयर होंगे, तब आप प्रतिदिन 20 लॉट्स में 15 प्रतिशत लाभ बुक करने में सक्षम होंगे, यानी आपकी दैनिक कमाई 300 डॉलर होगी।”

इस अध्याय में मैं आपको यह समझाऊँगा कि यदि आपके पास शेयर बाजार में निवेश करने के लिए सिर्फ 100 डॉलर हैं तो आप अपना शेयर बाजार कारोबार कैसे शुरू कर सकते हैं!

यह कैसे संभव है? आइए, पता करते हैं।

अपने 100 डॉलर को 25 डॉलर के चार हिस्सों में विभाजित कर दें। हर महीने अपने 25 डॉलर से अच्छा लाभांश देनेवाला कम कीमत का एक स्टॉक खरीदें (जब आप इस पुस्तक के अन्य अध्याय पढ़ेंगे तो अपने आप सीख जाएँगे कि कम कीमत पर अच्छा लाभांश देनेवाले स्टॉक की पहचान कैसे की जा सकती है)।

इसके अलावा, अपने शेयर बाजार निवेश में वृद्धि करने के लिए अपने बचत खाते में प्रतिमाह 10 डॉलर डालें।

(यदि आपने पहला अध्याय पढ़ा है तो आपको याद होगा, मैंने आपके शेयर बाजार निवेश को बढ़ाने के लिए आपकी मासिक आय का 10 प्रतिशत उसमें जोड़ने का सुझाव दिया था।)

प्रतिमाह यह 10 डॉलर की अतिरिक्त बचत आपके निवेश खाते में 30 डॉलर बढ़ा देगी। इस 30 डॉलर की अतिरिक्त बचत से आप प्रत्येक तीन माह में एक अतिरिक्त शेयर खरीद पाएँगे।

मेरा मानना है कि खरीद के तीन महीनों के भीतर, 15 प्रतिशत लाभ के साथ एक अच्छा शेयर बेचना मुश्किल नहीं है। यदि आप अपने 15 प्रतिशत लाभ को पुनः निवेश करते हैं और अपने पैसे को प्रत्येक तीन माह में 15 प्रतिशत लाभ के साथ घुमाते हैं तो आपका एक वर्ष का वार्षिक लाभ 74 प्रतिशत होगा।

लाभांश लाभ के रूप में अतिरिक्त 10 प्रतिशत मान लें तो लाभांश के साथ शुद्ध वार्षिक रिटर्न 84 प्रतिशत होगा।

यदि आप शुरुआत में 100 डॉलर निवेश करते हैं और उसमें प्रत्येक माह 10 डॉलर जोड़ते हैं और आपके पैसे 84 प्रतिशत सालाना बढ़ रहे हैं तो बीस वर्ष के बाद आपके पास लगभग 7,18,03,722 डॉलर होंगे।

इस पुस्तक का पहला संस्करण वर्ष 2013 में प्रकाशित हुआ था। उस संस्करण के एक पाठक मेरे विचार से सहमत नहीं थे, इसलिए उन्होंने अमेजन साइट पर यह नकारात्मक समीक्षा डाली थी—

“यदि आप शेयर बाजार के बारे में नहीं जानते तो कृपया उसके बारे में न लिखें या कम-से-कम लोगों को गुमराह न करें। आप प्रत्येक शेयर के लिए 15 प्रतिशत लाभ की बात कर रहे हैं। क्या आप लोगों से मजाक कर रहे हैं? यह मेरी अब तक की पढ़ी हुई सबसे बुरी पुस्तक है।”

“यदि मैं आपकी गुमराह करनेवाली पुस्तक के बारे में अमेजन में शिकायत कर सकता हूँ तो इस बेकार पुस्तक के बारे में अवश्य लिखूँगा।”

इसलिए पुस्तक के इस संस्करण में मैं इस समीक्षा का जवाब जोड़ना चाहता हूँ—“यहाँ दिया गया उदाहरण गारंटीकृत आय नहीं है। परिणाम आपके खरीद मूल्य और बाजार की स्थिति के आधार पर भिन्न हो सकते हैं; लेकिन यदि आप शेयर खरीदने से पहले इस पूरी पुस्तक की अवधारणा का पालन करेंगे तो आपको एक तिमाही में औसतन 15 प्रतिशत लाभ मिल सकता है।”

यदि आपको अभी भी इस सिद्धांत पर विश्वास नहीं हो रहा है तो कृपया मेरे ‘शेयरजीनियस’ ब्लॉग पर जाएँ, जहाँ मैंने व्यावहारिक उदाहरणों के साथ एक पूरी कहानी कदम-दर-कदम लिखी है और बताया है कि कैसे एक धारणात्मक लड़की (चिंकी) ने भारतीय मुद्रा के 6,600 रुपए (100 डॉलर) के आरंभिक निवेश से 4,73,90,45,652 रुपए (7,18,03,722 डॉलर) कमाए। मैं आपको इस कहानी का लिंक दे रहा हूँ—

<http://sharegenius.maheshkaushik.com/2016/10/how-chinki-earn-inr-4739045652-from.html>

यदि आप इस पुस्तक का पेपरबैक संस्करण खरीदते हैं और आपको उपयुक्त लिंक टाइप करने में मुश्किल होती है तो सिर्फ 'हाऊ चिंकी अर्न' गूगल करें और आपको इस कहानी का लिंक मिल जाएगा।

आइए, इस विचार को सरल शब्दों में दोहराएँ—

आपका आरंभिक निवेश 100 डॉलर है और आप प्रत्येक तिमाही के लिए 15 प्रतिशत लाभ बुक करते हैं और लाभ को बाजार में पुनः निवेश करते हैं।

इस तरीके से आपको आसानी से एक वर्ष में 74 प्रतिशत का रिटर्न मिल सकता है।

अब लाभांश राशि के रूप में 10 प्रतिशत जोड़ें।

इस प्रकार आपका शुद्ध वार्षिक रिटर्न 84 प्रतिशत होगा।

अपना पोर्टफोलियो बढ़ाने के लिए प्रतिमाह अतिरिक्त 10 डॉलर बचाएँ।

मेरा अनुसरण करनेवालों में से एक सज्जन शिकायत करते हैं कि यह संभव नहीं है कि हमें प्रत्येक शेयर में लाभ मिले। मैं मानता हूँ कि शेयर बाजार अनिश्चित है और यह संभव नहीं है कि हमें प्रत्येक शेयर में लाभ मिले; लेकिन यदि आप यह पूरी पुस्तक बिना कोई पृष्ठ छोड़े पढ़ेंगे और कोई शेयर खरीदने से पहले मेरे सिद्धांतों का पालन करेंगे तो हमें अपनी खरीद में से 80-90 प्रतिशत में लाभ मिलेगा। आप मेरी वेबसाइट www.maheshkaushik.com पर जाकर मेरी पिछली सिफारिशों की जाँच करेंगे तो आपको पता चलेगा कि मेरी सिफारिशों में से 80-90 प्रतिशत को 15 प्रतिशत से लेकर 300 प्रतिशत, या उससे भी अधिक लाभ प्राप्त हुआ है। तो यदि आप अपनी खरीद के 80 प्रतिशत में 15 प्रतिशत से 300 प्रतिशत तक लाभ बुक करते हैं और शेष 20 प्रतिशत खरीद में कुछ नुकसान बुक करते हैं तो भी आपका शुद्ध लाभ 15 प्रतिशत से ऊपर होगा। इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि धैर्य रखें और कोई नकारात्मक समीक्षा देने से पहले पूरी पुस्तक पढ़ लें और मेरी वेबसाइट की जाँच कर लें। मुझे यकीन है कि अगर आप मेरे पूरे सिद्धांत को समझ जाएँगे तो कभी इसकी आलोचना नहीं करेंगे और शेयर बाजार को अपनी 'कैश काऊ' की तरह इस्तेमाल करेंगे।

इस अध्याय का सारांश

1. जब आप कोई स्टॉक बेचें तो अपनी मूल राशि को किसी अच्छी गुणवत्ता के स्टॉक में पुनः निवेश कर दें।
2. यदि आप एक स्टॉक खरीद के तीन माह के भीतर 15 प्रतिशत लाभ के साथ बेचते हैं और अपने 15 प्रतिशत लाभ को पुनः निवेश कर देते हैं, साथ ही अपने पैसे को प्रत्येक तीन माह में 15 प्रतिशत लाभ के साथ घुमाते हैं तो एक वर्ष के लिए आपका वार्षिक लाभ 74 प्रतिशत होगा। इसके अलावा, 10 प्रतिशत अतिरिक्त को लाभांश आय के रूप में मान लें तो लाभांश के साथ आपका शुद्ध वार्षिक रिटर्न 84 प्रतिशत होगा।
3. यदि आप शुरू में 100 डॉलर निवेश करते हैं और उसमें प्रत्येक माह 10 डॉलर जोड़ते हैं और आपके पैसे वार्षिक रूप से 84 प्रतिशत बढ़ रहे हैं तो बीस वर्ष के बाद आपके पास लगभग 7,18,03,722 डॉलर होंगे।
4. जब आपका कारोबार आपको 15 प्रतिशत लाभ देता है तो उसे पिछले स्टॉप लॉस के साथ होल्ड करें। 15 प्रतिशत लाभ की न्यूनतम सीमा है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप 15 प्रतिशत लाभ के बाद अपने शेयर 15 प्रतिशत की ट्रिगर कीमत पर बेच दें। अपने स्टॉक पर बारीकी से नजर रखें।

□

बेस प्राइस (आधार मूल्य) सिस्टम का नवाचार

मैं शेयर बाजार में वर्ष 2005 से काम कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि शेयर प्रकृति से अस्थिर होते हैं। शेयर बाजार में कोई भी स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता कि एक शेयर खरीदने की सही कीमत क्या है, या शेयर बेचना शुरू करने का सही समय क्या है?

मैं टेक्निकल्स, 200 डी.एम.ए. और फंडामेंटल एनालिसिस (मौलिक विश्लेषण) जैसे विभिन्न तकनीकी स्टॉक विश्लेषण विधियों की जाँच करता हूँ और उन्हें सीखता हूँ; लेकिन कोई भी विधि 50 प्रतिशत-70 प्रतिशत से अधिक समय सफल नहीं रहती। इसलिए मेरा शोध P/E, EPS, बुक वैल्यू, DMA, ROCE जैसे पुराने मानदंडों के साथ पूरा नहीं हुआ है।

अंत में, मुझे एक अभिनव नया शब्द मिला—बेस प्राइस या आधार मूल्य (तीन वर्ष का औसत मूल्य) और मुझे लगता है कि यह आपकी सोच को पूरी तरह बदल सकता है और आप हमेशा शेयरों में निवेश करने से पहले बेस प्राइस की जाँच करना चाहेंगे।

बेस प्राइस या आधार मूल्य क्या है?

मान लीजिए, आप एक औसत सुविधाओं वाला एंड्रॉइड मोबाइल फोन खरीदना चाहते हैं। एक औसत सुविधाओं वाले मोबाइल फोन की मूल कीमत लगभग 10,000 रूपए है, लेकिन आपको उसकी मूल कीमत के बारे में जानकारी नहीं है और दुकानदार आपसे उस एंड्रॉइड मोबाइल के लिए 50,000 रूपए माँगता है।

यदि आपको मूल कीमत के बारे में जानकारी नहीं है और दुकानदार आपको पाँच गुना अधिक कीमत पर अपना फोन बेचता है तो क्या होता है?

शेयर बाजार में खरीदने के लिए भी यही सिद्धांत उपयोगी है। इसका मतलब है, कोई शेयर खरीदने से पहले यह आवश्यक है कि आपके पास उस शेयर के पिछले तीन वर्षों के औसत बाजार मूल्य की मूल जानकारी हो।

तो एक शेयर का बेस प्राइस या आधार मूल्य पिछले तीन साल के ट्रेडिंग सत्र के समापन मूल्य का औसत मूल्य है।

बेस प्राइस बाजार के अनुसार शेयर के वास्तविक उचित मूल्य को दर्शाता है।

दूसरे शब्दों में, हम कहते हैं कि बेस प्राइस का अर्थ है—तीन वर्ष के स्टॉक का डी.एम.ए.।

बेस प्राइस की गणना में बोनस और स्टॉक विभाजन के लिए समायोजन करना न भूलें।

उदाहरण के लिए, यदि 10 रूपए अंकित मूल्य के शेयर का बाजार मूल्य 100 रूपए है और स्टॉक 2 रूपए के अंकित मूल्य में विभाजित है तो आप विभाजित मूल्य से 100 के बजाय 20 के रूप में गणना करेंगे।

याद रखें कि बेस प्राइस या तीन वर्ष के डी.एम.ए. की गणना के लिए आपका शेयर तीन वर्ष के लिए सूचीबद्ध होना चाहिए, क्योंकि यदि आप तीन वर्ष के मूल्य से नीचे बेस प्राइस की गणना करेंगे तो गणना ठीक से काम नहीं करेगी।

आधार मूल्य का उपयोग क्यों करें? मान लीजिए कि आप 165 लीटर का एक फ्रिज खरीदना चाहते हैं। आप फ्रिज की दुकान में जाते हैं। सेल्समैन आपको मॉडल दिखाता है और आप अपने लिए एक अच्छा मॉडल पसंद कर लेते हैं। जब आप कीमत के बारे में पूछते हैं तो दुकानदार कहता है, “सर, इस फ्रिज की कीमत सिर्फ 60,000 रूपए है।”

फिर क्या होता है?

आपको क्यों लगता है कि 165 लीटर फ्रिज के लिए 60,000 रूपए की कीमत उचित नहीं है?

आपको ऐसा इसलिए लगता है, क्योंकि आप फ्रिज की बेस प्राइस जानते हैं। आप जानते हैं कि भारतीय बाजार में फ्रिज का मूल्य 10,000 से 14,000 रूपए है और 60,000 रूपए एक अनुचित कीमत है।

शेयर बाजार में भी ऐसा ही होगा। यदि आपको शेयर की बेस प्राइस की जानकारी होगी तो आपको शेयर के उचित मूल्य की जानकारी भी होगी और आप आसानी से अधिक मूल्य वाले शेयरों की पहचान कर लेंगे।

निवेश के लिए शेयर के चुनाव में बेस प्राइस या तीन वर्ष के डी.एम.ए. का उपयोग कैसे करें?

यदि एक शेयर अपनी बेस प्राइस को ऊपर की ओर पार कर जाता है और बेस प्राइस से 10 से 20 प्रतिशत अधिक कारोबार करता है तो मुझे लगता है कि खरीद मूल्य एक अच्छा मूल्य है; लेकिन दूसरी ओर, यदि एक शेयर अपनी बेस प्राइस को ऊपर से नीचे की ओर पार करता है तो उस शेयर को खरीदना जाँखिम का काम है।

यदि आप आधार मूल्य से कम कीमत पर शेयर खरीदते हैं तो वह सस्ता है; लेकिन एक अच्छे रिटर्न के लिए आपकी प्रतीक्षा अवधि एक से दो वर्ष हो सकती है और यदि आपके शेयर का बाजार मूल्य बेस प्राइस से 20 प्रतिशत अधिक है तो शेयर का मूल्यांकन पहले से ही उच्च स्तर पर है।

निवेश क्षितिज के लिए मेरा आसान-सा फॉर्मूला है—बेस प्राइस से 20 प्रतिशत कम मूल्य पर खरीदना और बेस प्राइस से 20 प्रतिशत अधिक मूल्य पर बेचना।

लेकिन व्यापारिक प्रयोजनों के लिए अप ट्रेंड में ('अप ट्रेंड' का मतलब है कि स्टॉक अपनी बेस प्राइस को कम मूल्य से अधिक मूल्य पर पार करता है) बेस प्राइस से 5 प्रतिशत अधिक मूल्य पर खरीदें और बेस प्राइस से 15 प्रतिशत अधिक में बेचें।

बेस प्राइस या तीन वर्ष के डी.एम.ए. की गणना कैसे करें?

बेस प्राइस या तीन वर्ष का चालू औसत मेरे लिए एक नई अवधारणा है, इसलिए इसकी गणना करने के लिए कोई सॉफ्टवेयर उपलब्ध नहीं है। हम इसकी गणना एम.एस. एक्सल स्प्रेडशीट की मदद से मैनुअली करते हैं।

बेस प्राइस की गणना करने के लिए हम एक एक्सचेंज (विनिमय) वेबसाइट से किसी विशेष स्टॉक के पिछले तीन वर्षों के समापन मूल्य को डाउनलोड कर लेते हैं और जब हम पिछले तीन वर्षों की समापन कीमत के योग को व्यापारिक दिनों की संख्या से विभाजित करते हैं तो हमें तीन वर्षों का औसत मूल्य प्राप्त होता है।

बेस मूल्य की गणना करने के तरीके को सीखने के लिए आप मेरा यू-ट्यूब वीडियो भी देख सकते हैं, जिसका लिंक है—

<https://www.youtube.com/watch?v=qR6EQk1f1cM>

या फिर आप यू-ट्यूब पर 'महेश कौशिक बेस प्राइस' सर्च भी कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, हम NOCIL के एक शेयर का चयन करते हैं। NOCIL की बेस प्राइस 20.52 है (12 अप्रैल, 2012 को), इसलिए NOCIL का CMP 16.50 6 से 24 महीने की सीमा के निवेश के लिए उचित मूल्य है और लाभ बुक करने के लिए लक्ष्य 24+ है। लेकिन कारोबार के लिए मैं इसे CMP पर नहीं खरीदूँगा और इसके 21 पार करने की प्रतीक्षा करूँगा—और 21 पार करने के बाद मैं इसे कारोबारी प्रयोजन के लिए खरीदूँगा और लघु अवधि में 23 से 25 के आसपास लाभ बुक करूँगा। कारोबार में बेस प्राइस स्टॉप लॉस का काम भी करती है।

इस पुस्तक के नए संस्करण में नया अपडेट

मेरे एक फॉलोअर ने, जिन्होंने इस पुस्तक का पिछला संस्करण खरीदा था, मुझसे इसके बेस प्राइस भ्रम के बारे में एक प्रश्न पूछा। मैंने उस प्रश्न और मेरे उत्तर को इस नए संस्करण में शामिल किया है, ताकि पाठक इस अवधारणा को बेहतर तरीके से समझ पाएँ।

मेरे फॉलोअर ने लिखा—

“आपकी पुस्तक पढ़ने के बाद बेस प्राइस को लेकर मेरे कुछ प्रश्न हैं :

अध्याय-3 में

1. यदि बेस प्राइस 20 प्रतिशत CMP से कम है तो खरीद लें। यह बात मेरी समझ में आती है।
2. यदि बेस प्राइस 20 प्रतिशत CMP से अधिक है तो न खरीदें। मुझे यह भी समझ में आता है।

3. लेकिन, जैसा कि पुस्तक में लिखा है, यदि बेस प्राइस 20 प्रतिशत से अधिक है तो वह 'वैल्यू बाय' है, यानी उसका मूल्य उचित है।

तो हम दूसरे और तीसरे बिंदु में कैसे समझ सकते हैं कि उस स्टॉक को 'नहीं खरीदना' है या उसका 'उचित मूल्य' है?

इसके अलावा, आप पुस्तक के अनुसार सभी बुनियादी बातों को देखने के बाद खरीदने के लिए सबसे अच्छे मूल्य का अनुमान कैसे लगा सकते हैं?"

मेरा जवाब—

कृपया पुस्तक में इस पूरे उद्धरण को पढ़ें—

“यदि एक शेयर अपनी बेस प्राइस को ऊपर की ओर पार कर जाता है और बेस प्राइस से 10 से 20 प्रतिशत अधिक कारोबार करता है तो मुझे लगता है कि खरीद मूल्य एक अच्छा मूल्य है; लेकिन दूसरी ओर, यदि एक शेयर अपनी बेस प्राइस को ऊपर से नीचे की ओर पार करता है तो उस शेयर को खरीदना जोखिम का काम है।”

इसका मतलब है कि अगर स्टॉक का मूल्य उसकी निचली कीमत से ऊपरी कीमत तक बढ़ा है और उसने बेस प्राइस से 10 प्रतिशत ऊपर कारोबार किया है, लेकिन फिर भी वह बेस प्राइस से 20 प्रतिशत ऊपर पार नहीं करता, तब वह सही खरीद मूल्य है। यदि वह बेस प्राइस से 20 प्रतिशत ऊपर पार कर लेता है, तब मैं उसे नहीं खरीदूंगा, क्योंकि मुझे लगेगा कि इस स्टॉक का मूल्यांकन पहले ही बेस प्राइस से ऊँचा है।

इस अध्याय का सारांश

1. एक स्टॉक को हमेशा उसके तीन वर्ष के औसत मूल्य से 20 प्रतिशत कम में खरीदें (जिसे मैंने 'बेस प्राइस' कहा है) और बेस प्राइस से 20 प्रतिशत ऊपर लाभ बुक करने का प्रयास करें।
2. बेस प्राइस की गणना करने के लिए कंपनियों से ऐतिहासिक मूल्य डेटा और एक एम.एस. एक्सेल शीट का उपयोग करें।
3. व्यापारी बेस प्राइस को स्टॉप लॉस की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।
4. यदि एक स्टॉक ने अपनी बेस प्राइस को ऊपर की ओर पार कर लिया है और बेस प्राइस से 10 से 20 प्रतिशत ऊपर कारोबार किया है तो मुझे लगता है कि खरीद मूल्य उचित मूल्य है; लेकिन विपरीत स्थिति में, यदि एक स्टॉक अपनी बेस प्राइस को निचले स्तर में पार करता है तो उसे खरीदने में जोखिम है।



एक शेयर के मौलिक लक्ष्य मूल्य के लिए प्रति शेयर शुद्ध मूल्य की अवधारणा

पिछले अध्याय में आपने सीखा कि कोई भी शेयर खरीदने से पहले आपको उस शेयर के बेस प्राइस की जाँच करनी चाहिए और उसे तभी खरीदना चाहिए, यदि उस शेयर ने बेस प्राइस से 20 प्रतिशत नीचे से 20 प्रतिशत ऊपर कारोबार किया हो।

यदि आप खरीदने से पहले बेस प्राइस की जाँच करते हैं तो आप अपने आप ही अधिक मूल्य वाले शेयरों से बच जाएँगे।

अब अगली महत्वपूर्ण चीज, जो आपको खरीदने से पहले जाँचनी चाहिए, वो है प्रति शेयर शुद्ध बिक्री।

शेयर बाजार में बहुत से औसत निवेशक किसी शेयर का मूल्यांकन करने के लिए EPS और P/ E अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। लेकिन में स्टॉक का मूल्यांकन करने के इन पुराने मानदंडों से संतुष्ट नहीं हूँ। (EPS का अर्थ है—प्रति शेयर आय। जब हम शुद्ध लाभ को शेयरों की कुल संख्या से विभाजित करते हैं तो EPS प्राप्त करते हैं और P/ E का अर्थ है मूल्य/आय, जो शेयर बाजार मूल्य और EPS का अनुपात है)।

अगर हम EPS और P/ E की जाँच करते हैं तो सिर्फ लाभ कमानेवाली कंपनियों पर विचार करते हैं, क्योंकि EPS की गणना शुद्ध लाभ के आधार पर की जाती है और लाभ कमानेवाली कंपनियाँ हमेशा उच्च मूल्यांकन पर कारोबार करती हैं। इसलिए बुद्धिमानों इसमें है कि निवेश एक नुकसान उठानेवाली, लेकिन मजबूत आधार वाली कंपनी में किया जाए, जिसकी लाभ में घूम जाने की संभावना हो।

मान लीजिए, एक अच्छी कंपनी 'एक्स' की 10 करोड़ डॉलर की अच्छी शुद्ध बिक्री है, लेकिन कंपनी की विस्तार योजनाओं के कारण (नई शाखाओं और दुकानों में निवेश) कंपनी 12 करोड़ डॉलर का खर्च दिखाती है तो आपको 2 करोड़ डॉलर का शुद्ध घाटा दिखाई देता है और ई.पी.एस. या ई/पी भी शून्य है (या माइनस चिह्न में है)। दूसरी ओर, एक धोखाधड़ी कंपनी 'वाई' की शुद्ध बिक्री सिर्फ 2 करोड़ की है, लेकिन कंपनी 5.5 करोड़ की संपत्ति बेचकर और 1 करोड़ का खर्च दिखाकर असाधारण आय दिखाती है। फिर यह कंपनी 6.5 करोड़ का शुद्ध लाभ दिखाती है (20 शुद्ध बिक्री + 55 असाधारण आय = 75 - (1 करोड़ खर्च) = 6.5 करोड़ का शुद्ध लाभ।

तो कौन सी कंपनी अच्छी है—एक्स या वाई?

'एक्स' अच्छी है, क्योंकि कंपनी की विस्तार योजनाओं की अवधि के बाद कंपनी का खर्च घट जाएगा और कंपनी नुकसान के बदले फायदा देने लगेगी।

तो यदि आप शुद्ध बिक्री प्रति शेयर अनुपात का प्रयोग करते हैं तो ऐसा करना काफी दिलचस्प होगा और आप बदलाव की संभावना के साथ एक अच्छी, लेकिन नुकसान में चल रही कंपनी का चयन कम मूल्यांकन में कर सकते हैं।

इस विधि के विश्लेषण के लिए अपनी कंपनी की पिछली तिमाही के शुद्ध बिक्री आँकड़े (शुद्ध आय या शुद्ध राजस्व) लें और उसे शेयरों की कुल संख्या से विभाजित करें। यह अनुपात एक तिमाही के लिए 'प्रति शेयर शुद्ध विक्रय' कहलाता है।

इस एक तिमाही के लिए प्रति शेयर शुद्ध विक्रय (शुद्ध राजस्व) को 4 से गुणा करने पर हमारा प्रति वर्ष का अनुमानित शुद्ध विक्रय आएगा।

आप पिछले वर्ष के प्रति वर्ष शुद्ध विक्रय (NSPY) की गणना सीधे भी कर सकते हैं। पिछले वर्ष की शुद्ध बिक्री के आँकड़े लें और उसे शेयरों की कुल संख्या से विभाजित करें। आपको पिछले वर्ष का NSPY मिल जाएगा।

मैं इसे 'स्टॉक मूल्य का आकलन मीटर' भी कहता हूँ।

यदि आपका स्टॉक मूल्य NSPY से कम है तो आपका स्टॉक मूल्यांकन अच्छा है और यदि CMP NSPY से ऊँचा है तो स्टॉक का कारोबार उच्च मूल्यांकन पर हुआ है।

उदाहरण के लिए, जून 2012 की तिमाही में अरविंद लिमिटेड की शुद्ध बिक्री 8,52,07,00,000 है, और शेयरों की कुल संख्या 25,80,43,069 है। तो जब हम शुद्ध बिक्री को शेयरों की कुल संख्या से विभाजित करेंगे तो हमें फ्रेक्शन 33.02 मिलेगा। अब हम इस 33.02 को 4 से गुणा करेंगे तो हमें 132.08 प्राप्त होगा।

तो एक वर्ष की अनुमानित बिक्री प्रति शेयर 132.08 है और यह अरविंद लिमिटेड के लिए उचित मूल्यांकन है। इस सिद्धांत के अनुसार, 71 की CMP खरीदने के लिए सस्ती है और अरविंद लिमिटेड का मूल लक्ष्य मूल्य 132+ है।

कृपया याद रखें कि यदि बिक्री साल-दर-साल बढ़ती है तो NSPS भी बढ़ता है। इस पुस्तक का पहला संस्करण वर्ष 2013 में प्रकाशित हुआ था, इसलिए उपर्युक्त उदाहरण अरविंद लिमिटेड की वर्ष 2012 की प्रति शेयर शुद्ध बिक्री का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

यदि हम अरविंद लिमिटेड की वर्ष 2017 की शुद्ध बिक्री प्रति शेयर का पुनर्मूल्यांकन करेंगे तो हमें NSPS =209.29 प्राप्त होगा और 5 मई, 2017 का वर्तमान बाजार मूल्य 408 है। इसलिए कृपया याद रखें कि हम शुद्ध बिक्री प्रति शेयर का उपयोग कम मूल्यांकन वाले शेयरों की पहचान के लिए करते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि किसी शेयर द्वारा अपनी शुद्ध बिक्री प्रति शेयर के ऊपर कारोबार नहीं किया गया है।

आप शुद्ध बिक्री प्रति शेयर के बारे में और अधिक जानने के लिए मेरा यू-ट्यूब वीडियो भी देख सकते हैं, जिसका लिंक है—

https://www.youtube.com/watch?v=1rdWmenk_wM

या फिर आप यू-ट्यूब पर 'महेश कौशिक नेट सेल पर शेयर' भी खोज सकते हैं।

इस अध्याय का सारांश

1. जब आपकी कंपनी की पिछली तिमाही के शुद्ध बिक्री डेटा (शुद्ध आय या शुद्ध राजस्व) को शेयरों की कुल संख्या से विभाजित किया जाता है तो उस अनुपात को 'नेट सेल पर शेयर फार ए क्वार्टर' या 'एक तिमाही के लिए शुद्ध बिक्री प्रति शेयर' कहते हैं। इसको 4 से गुणा करेंगे तो हमें हमारा प्रति वर्ष का अनुमानित नेट सेल मिल जाएगा।
2. एक कंपनी के शुद्ध लाभों की ओर न देखें। हमेशा कंपनी के शुद्ध राजस्व की ओर देखें।
3. ऐसे शेयरों का चुनाव करें, जिनका प्रति शेयर शुद्ध राजस्व ऊंचा हो।
4. शेयर की खरीद तब करें, जब उसका बाजार मूल्य उसके एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व से कम हो। और बेचें तब, जब एक स्टॉक का बाजार मूल्य एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व को पार कर ले।

□

किसी स्टॉक के लक्ष्य मूल्य की भविष्यवाणी के लिए मौलिक गणना

पिछले अध्याय में आपने सीखा कि प्रति शेयर शुद्ध बिक्री की सहायता से सस्ते शेयरों की पहचान कैसे की जा सकती है।

कुछ फॉलोअर्स मुझे इ-मेल करते हैं कि इन्फोसिस की प्रति शेयर शुद्ध बिक्री 258.12 रुपए है और स्टॉक का कारोबार 1,278 में हुआ। यह कैसे संभव है?

मैं एक बार फिर स्पष्ट करता हूँ कि कई शेयर अपनी प्रति शेयर शुद्ध बिक्री के ऊपर कारोबार करते हैं। हम प्रति शेयर शुद्ध बिक्री को कम मूल्य वाले शेयरों की पहचान के लिए उपयोग करते हैं।

यदि इन्फोसिस की प्रति शेयर शुद्ध बिक्री 258 है और स्टॉक ने 1,278 पर कारोबार किया तो इससे सिर्फ यह संकेत मिलता है कि स्टॉक का मूल्यांकन 1,278 में अधिक कीमत पर हुआ है और इस शेयर को खरीदने का यह सही समय नहीं है।

उदाहरण के लिए, मैंने वर्ष 2005 में मारुति के शेयर की कम मूल्यवाले शेयर के रूप में पहचान की। मारुति सुजुकी की वर्ष 2005 के शेयर की कीमत लगभग 450 थी और वर्ष 2017 में CMP लगभग 6,600 था।

अब इस अध्याय में मैं आपको एक स्टॉक के लक्ष्य की पहचान करना बताऊँगा।

अधिकांश निवेशक शेयरों के मौलिक लक्ष्यीकरण के बारे में नहीं जानते।

शेयर बाजार के बारे में उपलब्ध कई पुस्तकें हमें सिर्फ शेयरों के तकनीकी विश्लेषण और तकनीकी लक्ष्य के बारे में सिखाती हैं; लेकिन कोई हमें एक शेयर के मौलिक लक्ष्यीकरण के बारे में नहीं सिखाता।

तो इस पुस्तक में मैं आपको एक स्टॉक के मौलिक लक्ष्यीकरण की भविष्यवाणी करने का अपना अनूठा तरीका बताऊँगा।

1. मौलिक लक्ष्य की गणना करने के लिए सबसे पहले प्रति शेयर वार्षिक शुद्ध राजस्व की जाँच करें और एक डायरी में नोट कर लें। मान लीजिए, कंपनी 'ए' का पिछले वर्ष का शुद्ध राजस्व 1,000 करोड़ है और कंपनी 'ए' में शेयरों की कुल संख्या 10 करोड़ है तो शुद्ध राजस्व प्रति शेयर प्रति वर्ष $1,000/10=100$ होगा। तो आप 100 नोट कर लें।

(इस पुस्तक के अध्याय-4 में मैंने आपको प्रति शेयर शुद्ध राजस्व की अवधारणा समझाई थी। जब आपकी कंपनी की पिछली तिमाही के शुद्ध बिक्री डेटा को शेयरों की कुल संख्या से विभाजित किया जाता है तो यह अनुपात 'एक तिमाही के लिए प्रति शेयर शुद्ध बिक्री' कहलाता है। इसे 4 से गुणा करने पर हमें हमारी अनुमानित प्रति वर्ष शुद्ध बिक्री मिलती है। अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक का अध्याय-4 पढ़ें।)

2. एक स्टॉक की बुक वैल्यू एक महत्वपूर्ण मूल शब्द है। तो अब, जबकि आपने इस स्टॉक की बुक वैल्यू अपनी डायरी में नोट कर ली है तो मान लीजिए, आपकी कंपनी 'ए' की बुक वैल्यू 67 है।

3. अब तीन वर्ष का DMA (बेस प्राइस, जिसका वर्णन मैंने इस पुस्तक के अध्याय-2 में किया है) जाँचें और मान लें कि वह 85 है।

4. अब हमारे पहले आँकड़े 100 (शुद्ध वार्षिक राजस्व प्रति शेयर) और दूसरे आँकड़े 67 (बुक वैल्यू) और तीसरे 85 (बेस प्राइस) का औसत निकालें, जो होगा— $100 + 67 + 85 = 252/3 + 84$ ।

5. श्रेष्ठ परिणामों के लिए इस आँकड़े का 10 प्रतिशत बाजार के उतार-चढ़ाव के रूप में घटा दें तो 84 का 10 प्रतिशत अब 8.40 हो जाएगा। आप मान सकते हैं कि आपका मौलिक लक्ष्य $84.00 - 8.40 = 75.60$ है।

6. तो अगर स्टॉक ने 75.60 के नीचे कारोबार किया है तो यह आपके खरीदने के लिए है और 80 प्रतिशत से ज्यादा मामलों में मैं देखता हूँ कि स्टॉक यह लक्ष्य एक वर्ष से तीन वर्ष के बीच प्राप्त कर लेते हैं।

खरीदने से पहले हमेशा अपना मौलिक लक्ष्य निर्धारित करें, जो कि आपके खरीद मूल्य से 15 प्रतिशत ऊपर होना चाहिए।

इस अध्याय का सारांश

1. हमेशा प्रति शेयर शुद्ध राजस्व, बुक वैल्यू और शेयर की बेस प्राइस का औसत निकालें और फिर उसे 10 प्रतिशत घटा दें। यही आपके स्टॉक का मौलिक लक्ष्य होगा।

2. लाभ अर्जित करने के लिए स्टॉक हमेशा मौलिक लक्ष्य से 15 प्रतिशत कम पर खरीदें।

3. यादे स्टॉक ने अपने मौलिक लक्ष्य से 20 प्रतिशत या अधिक पर कारोबार किया है तो उसे खरीदने से सख्ती से बचना चाहिए।

इस पुस्तक में थ्योरी है और मैं जानता हूँ कि मेरे पाठक थ्योरी पढ़ने में ऊब महसूस करते होंगे। इसलिए मैंने कुछ यू-ट्यूब वीडियो अपलोड किए हैं, जो हर सिद्धांत को स्पष्ट करेंगे। आप इस अध्याय के बारे में वीडियो देखने के लिए यू-ट्यूब पर 'फंडामेंटल टारगेट प्राइस महेश कौशिक' सर्च कर सकते हैं या सीधे यह लिंक खोल सकते हैं—

<https://www.youtube.com/watch?v=vsrNYQ9ToJM>

“हमेशा खरीदने से पहले अपना मौलिक लक्ष्य निर्धारित करें,
जो कि आपके खरीद मूल्य से 15 प्रतिशत ऊपर होना चाहिए।”



एक स्टॉक में अटकलों की पहचान कैसे करें?

अब आप अपना वह स्टॉक चुनें, जिसने बेस प्राइस से 20 प्रतिशत कम या अधिक पर कारोबार किया था और जिसने अपने मौलिक लक्ष्य मूल्य से नीचे कारोबार किया था। लेकिन खरीदने से पहले थोक सौदों की जाँच करें, क्योंकि जब कुछ अच्छा या बुरा सौदा आगे बढ़ने वाला होता है तो भविष्य की उस घटना की खबर ऑपरेटरों तक पहुँच सकती है और ये अफवाहें स्टॉक की कीमत को अस्थिर बना सकती हैं।

स्टॉक में ऑपरेटर की गतिविधि कैसे पहचानें?

स्टॉक में ऑपरेटर की गतिविधि को पहचानना बहुत आसान है, क्योंकि वे बड़ी मात्रा में बेचते व खरीदते हैं और ये बड़ी खरीद व बिक्री शेयर बाजार की भाषा में 'बल्क (थोक) या ब्लॉक डीलस (सौदे)' कहलाती हैं।

थोक सौदों या बल्क डीलस का मतलब है—प्रमुख दलाल-डीलर अपने संस्थागत ग्राहकों को अकसर 'ब्लॉक ट्रेडिंग' सेवाएँ, जिन्हें कभी-कभी 'अपस्टेयर्स (ऊपरी) ट्रेडिंग डेस्क' कहा जाता है, प्रदान करते हैं।

ब्लॉक कारोबार एक स्वीकार्य, गैर-प्रतिस्पर्धी, निजी तौर पर बातचीत द्वारा किया जानेवाला सौदा है, शेयरों की एक्सचेंज द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा मात्रा पर या उससे अधिक, जो खुली बोली या इलेक्ट्रॉनिक बाजारों से अलग और दूर किया जाता है। संयुक्त राज्य और कनाडा में ब्लॉक कारोबार आमतौर पर कम-से-कम स्टॉक के 10,000 शेयरों या 2,00,000 डॉलर के बांड्स पर होता है, लेकिन व्यवहार में यह काफी बड़ा होता है।

प्रत्येक स्टॉक एक्सचेंज इन बड़े सौदों का इतिहास उपलब्ध कराता है, इसलिए यदि आप एक स्टॉक में ऑपरेटर की गतिविधि जाँचना चाहते हैं तो बस, स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट पर जाइए, और जिन थोक व ब्लॉक सौदों का इतिहास देखना चाहते हैं, देख लीजिए और यदि आपको पिछले 24 महीनों में कोई बड़े सौदे दिखाई देते हैं तो उस स्टॉक को नजरअंदाज कर दें।

कुछ स्टॉक एक्सचेंज प्रतिदिन बड़े सौदे प्रदान करते हैं, लेकिन उन सौदों का इतिहास उपलब्ध नहीं कराते। ऐसी स्थिति में आपको ऐसे थोक और ब्लॉक सौदों के लिए एक डायरी शुरू करने की आवश्यकता है।

जब आपका डेटा या ऑपरेटर गतिविधि के स्टॉक तैयार हो जाएँ तो मेरे सामान्य मानदंड का उपयोग करें। मैं हमेशा ऐसे स्टॉक्स से बचता हूँ, जो पिछले दो वर्षों के थोक और ब्लॉक सौदे दर्ज करते हैं; क्योंकि हम हाथी नहीं हैं, बल्कि चींटियों जैसे छोटे निवेशक हैं।

ऑपरेटर स्टॉक्स में अटकलें लगाते हैं। वे वॉल्यूम और व्यापारी की गतिविधि बढ़ने के लिए किसी विशेष स्टॉक में बड़ी मात्राएँ खरीदते या बेचते हैं। कम-से-कम स्टॉक के बहुत बड़ी कीमतों पर कारोबार करने से वे मुनाफा बुक करते हैं, लेकिन छोटे निवेशक फँस जाते हैं।

यदि आप इस चाल को याद रखेंगे और इसका पालन करेंगे, तो आप ऊँची कीमत होने पर कभी फँसेंगे नहीं।

आप पिछले थोक/ब्लॉक सौदों के लिए स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट भी देख सकते हैं और यदि आपको एक्सचेंज वेबसाइट पर थोक/ब्लॉक सौदों का पिछला इतिहास मिल जाता है तो आपको इस तरह के सौदों के लिए एक डायरी बनाए रखने की आवश्यकता नहीं होगी।

इस अध्याय का सारांश

1. शेयर बाजार में मूल्य-निर्धारण की अटकलें समझने का प्रयास करें।
2. ऐसे स्टॉक से बचें, जिसका हाल ही में थोक (ब्लॉक) सौदा हुआ हो।
3. स्टॉक स्क्रीनिंग के अपने मानदंडों में मैं हमेशा ऐसे स्टॉक से बचता हूँ, जिसका पिछले दो वर्षों में थोक सौदा हुआ हो। (स्टॉक की ट्रेडिंग के लिए मैंने इस समय-सीमा को पिछले दो वर्षों से घटाकर पिछला एक वर्ष कर दिया है।)
4. जब किसी ऐसे स्टॉक में थोक सौदे होते हैं, जिसने अपने वर्ष के उच्च और हर समय के उच्च के करीब कारोबार किया है तो आनेवाले एक-दो महीनों में इस स्टॉक में गिरावट शुरू हो सकती है।

□

क्या अंकित मूल्य के नीचे स्टॉक खरीदना अच्छा होता है?

अधिकांश निवेशक अंकित मूल्य के नीचे स्टॉक खरीदना पसंद करते हैं। जब मैं शेयर बाजार में नया था तो मैंने अपने पैनी शेयर निवेश में कई बार इस अवधारणा को लागू करने की कोशिश की; लेकिन पाया कि जब मैंने 20 पैनी स्टॉक्स अंकित मूल्य से कम बाजार मूल्य पर खरीदे तो उनमें से 4-5 शेयरों ने अच्छा प्रदर्शन किया और 3 से 12 महीनों में हमें 25 प्रतिशत से अधिक रिटर्न दिया; लेकिन शेष 15-16 शेयर एक खराब निवेश साबित हुए और उनकी कीमतों में कोई बदलाव नहीं दिखाई दिया।

तो मेरे अनुसार, अंकित मूल्य से नीचे के स्टॉक्स का समग्र प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहता है।

मुझे लगता है कि इस प्रकार के स्टॉक्स को खरीदने का प्रयास करने से पहले (अंकित मूल्य से नीचे कारोबार करनेवाले स्टॉक) आपको जांच के इन सात बिंदुओं पर विचार कर लेना चाहिए—

1. प्रोमोटर्स की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत से अधिक है।
2. बुक वैल्यू स्टॉक के वर्तमान बाजार मूल्य से तीन गुना से अधिक नहीं है। कृपया नकारात्मक बुक वैल्यू वाले स्टॉक से भी बचें।
3. 52 हफ्ते का उच्च-निम्न अनुपात 2 से कम है।
4. स्टॉक ने अपनी एक वर्ष की शुद्ध बिक्री प्रति शेयर से नीचे कारोबार किया है।
5. स्टॉक ने अपनी बेस प्राइस से 20 प्रतिशत से अधिक कारोबार नहीं किया है।
6. पिछले दो वर्षों में कोई थोक सौदा नहीं हुआ है।
7. पिछले दो वर्षों में कोई स्टॉक विभाजन और बोनस नहीं रहा है।

स्टॉक का कारोबार उसके 200 डी.एम.ए. से अधिक पर होना चाहिए।

यदि इस प्रकार के स्टॉक में (जिसका बाजार मूल्य अंकित मूल्य से कम है) 30 प्रतिशत से अधिक प्रोमोटर होल्डिंग है, उच्च बुक वैल्यू और 52 हफ्ते का उच्च बाजार मूल्य के निकट है (52 हफ्ते के उच्च पर 10 से 20 प्रतिशत की छूट सीमा में) तो यह अच्छा है।

यदि स्टॉक ने 52 हफ्ते के उच्च पर 60 से 80 प्रतिशत का कारोबार किया है तो यह दीर्घकालिक साइडवेज मूवमेंट का संकेत है और मैं अपने पिछले अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस प्रकार के स्टॉक 1 से 2 वर्ष की समय-सीमा में बेहतर प्रदर्शन नहीं करते।

इस अध्याय का सारांश

1. अंकित मूल्य से कम में स्टॉक खरीदना एक अच्छा विचार नहीं है।
2. यदि एक स्टॉक ने अपने अंकित मूल्य से नीचे कारोबार किया है, लेकिन प्रोमोटर होल्डिंग अच्छी है और स्टॉक अपने वार्षिक उच्च के निकट पहुंच जाता है (निचली कीमत से ऊपरी कीमत पर), तब आप अंकित मूल्य से नीचे स्टॉक खरीद सकते हैं।
3. अंकित मूल्य से कम के स्टॉक में जोखिम होता है। इसलिए खरीदने से पहले हमेशा आधार मूल्य, प्रति शेयर एक वर्ष का शुद्ध राजस्व, हालिया थोक सौदे, हालिया स्टॉक विभाजन और बोनस जैसे अन्य मूलभूत बिंदुओं की जांच कर लें।



निवेश के लिए शेयर का चुनाव कैसे करें?

इस पुस्तक के पिछले सात अध्यायों में आपने शेयर बाजार निवेश के पहले सिद्धांत के बारे में सीखा, जो बाजार के मंद होने पर एक विविध पोर्टफोलियो बनाता है।

अब शायद आप यह प्रश्न पूछना चाहेंगे कि मैं निवेश के लिए एक शेयर का चुनाव कैसे करूँ? तो इस अध्याय में मैं आपको कुछ शेयर स्क्रीनिंग मानदंडों के बारे में बताऊँगा।

1. अंकित मूल्य या फेस वैल्यू : अंकित मूल्य आपकी मूल राशि है, जो आप कंपनी में निवेश करते हैं। दूसरे शब्दों में, अंकित मूल्य कंपनी की इक्विटी साझेदारी में आपकी वास्तविक हिस्सेदारी है। उदाहरण के लिए, यदि कंपनी के पास 10 रुपए अंकित मूल्य के 10,00,000 शेयर हैं तो कंपनी की शेयर पूँजी $10,00,000 \times 10 = 1,00,00,000$ होगी, और यदि आप 100 रुपए के बाजार मूल्य पर इस कंपनी के 50 शेयर खरीदते हैं तो आप $50 \times 100 = 50,000$ रुपए निवेश करते हैं; लेकिन कंपनी की शेयर पूँजी में आपकी हिस्सेदारी सिर्फ $50 \times 10 = 500$ होगी, शेष 4,500 उस विक्रेता को प्रीमियम के रूप में दिए जाते हैं, जो आपको अपने स्टॉक बेचता है।

यदि आप 3,500 में एक शेयर खरीदते हैं, जिसका अंकित मूल्य 1 रुपया है तो कंपनी में आपका निवेश सिर्फ 1 रुपया होगा और शेष 3,499 रुपए विक्रेता का प्रीमियम होंगे।

मान लीजिए मैं एक इन्फ्रा शेयर खरीदना चाहता हूँ और स्क्रीनिंग के लिए तीन शेयरों—ए, बी, सी—का चुनाव करता हूँ। मान लीजिए, शेयर 'ए' का अंकित मूल्य 10 रुपए है और बाजार मूल्य 68 है, शेयर 'बी' का अंकित मूल्य 2 रुपए है और बाजार मूल्य 48 है, शेयर 'सी' का अंकित मूल्य 1 रुपए है और बाजार मूल्य 12 है।

तीनों में से सबसे सस्ता शेयर कौन सा है—ए, बी या सी?

इस समय हम 1 रुपए के अंकित मूल्य में शेयरों के बाजार मूल्य की तुलना कर रहे हैं, इसलिए हम प्रत्येक शेयर के बाजार मूल्य को उसके अंकित मूल्य से विभाजित करेंगे और 1 रुपए के समान अंकित मूल्य में शेयर ए का बाजार मूल्य $68/10 = 6.80$, बी का $48/2 = 24$, 'सी' का $12/1 = 12$ होगा और इसलिए शेयर 'ए' सबसे सस्ता शेयर है।

2. वर्ष का उच्च और निम्न : अब मैं प्रत्येक शेयर के लिए वर्ष का उच्च और निम्न देखता हूँ और यदि एक शेयर एक वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से नीचे होता है तो मैं इस शेयर से बचता हूँ। उदाहरण के लिए, शेयर 'ए' का वर्ष का उच्च 256.55 है, निम्न 96 है और शेयर ने 108.55 का कारोबार किया है तो मैं इस शेयर से बचूँगा; क्योंकि अच्छी कंपनियाँ एक वर्ष के अंदर 50 प्रतिशत से नीचे कभी नहीं जातीं, जब तक कि कोई गड़बड़ी न हो।

दूसरी ओर, यदि एक शेयर ने वर्ष के निम्न से 100 प्रतिशत ऊपर पर कारोबार कर रहा है तो मैं उससे बचता हूँ। उदाहरण के लिए, कंपनी 'बी' ने 56 पर कारोबार किया और इस कंपनी का वर्ष का उच्च 65.25 है और वर्ष का निम्न 19.55 है तो मैं इससे बचूँगा; क्योंकि मुझे लगता है कि यह शेयर पहले ही बहुत तेज भाग रहा है और बाजार में गिरावट का इंतजार करना बेहतर होगा।

3. प्रोमोटर्स की होल्डिंग : यदि प्रोमोटर की होल्डिंग 15 से 20 प्रतिशत से कम है तो मुझे लगता है, स्टॉक निवेश के लिए अच्छा नहीं है। यदि प्रोमोटर की होल्डिंग पिछली एक से चार तिमाहियों से घट रही है तो मुझे लगता है, कुछ गड़बड़ है और मैं ऐसे स्टॉक खरीदने से बचता हूँ, क्योंकि प्रोमोटर अपने स्टॉक खुदरा निवेशकों को बेचते हैं; लेकिन यदि प्रोमोटर अपनी होल्डिंग बढ़ा देते हैं तो मुझे लगता है, यह अच्छा है; क्योंकि वे अपनी कंपनी के मूल सिद्धांतों को अच्छी तरह जानते हैं।

यू.एस.ए. से मेरे एक फॉलोअर ने मुझे लिखा—“मैं भारतीय बाजार और अमेरिकी बाजार में अंतर के कारण आपकी प्रोमोटर होल्डिंग की धारणा को अच्छी तरह नहीं समझता। कृपया मुझे उदाहरण दें कि एक प्रोमोटर का अमेरिका में क्या मतलब होगा?”

इसलिए मैं आपको 'प्रोमोटर' का अर्थ भी बताना चाहता हूँ—“प्रोमोटर वह व्यक्ति होता है, जो कंपनी के गठन में लगा होता है। उदाहरण के लिए, बिल गेट्स माइक्रोसॉफ्ट के प्रोमोटर हैं और फेसबुक के प्रोमोटर मार्क जकरबर्ग हैं।”

4. बेस प्राइस या आधार मूल्य : अंत में, मैं स्टॉक के आधार मूल्य की जाँच करता हूँ। यह एक नई अवधारणा है, जिसने 200 डी.एम.ए. और बुक वैल्यू के मेरे पुराने मानदंडों की जगह ली है; क्योंकि मुझे लगता है, आधार मूल्य अधिक विश्वसनीय और अधिक स्थिर होगा, यदि एक स्टॉक अपने आधार मूल्य को ऊपर की ओर पार करता है और आधार मूल्य से 10-20 प्रतिशत अधिक पर कारोबार करता है। इस स्थिति में मुझे लगता है कि खरीद मूल्य एक अच्छा मूल्य है। लेकिन इसके विपरीत, यदि स्टॉक अपने आधार मूल्य से नीचे गिरा है तो उसे खरीदने में जोखिम होगा। मैंने इस पुस्तक में आधार मूल्य की गणना के बारे में अलग से लिखा है, इसलिए आधार मूल्य को और अधिक समझने के लिए उसे अवश्य पढ़ें।

5. प्रति शेयर शुद्ध राजस्व : शेयर के प्रति वर्ष शुद्ध राजस्व की गणना करें, जैसाकि मैंने इस पुस्तक में पहले बताया है—यदि आपके स्टॉक का मूल्य आपके स्टॉक के मूल्यांकन से कम है तो यह अच्छी बात है और यदि सी.एम.पी. उससे अधिक है तो स्टॉक ने उच्च मूल्यांकन पर कारोबार किया है।

6. कोई हालिया थोक सौदा और कोई हालिया बोनस नहीं : जैसाकि मैंने आपको इस पुस्तक के अध्याय-6 में बताया है कि थोक सौदा सट्टा गतिविधियों का संकेत है। इसलिए मैं आमतौर पर ऐसे स्टॉक से बचता हूँ, जिसका हाल के दो वर्षों में कोई थोक सौदा हुआ हो।

इसी प्रकार, इस पुस्तक के अध्याय-9 में आप सीखेंगे कि बोनस और स्टॉक विभाजन एक कंपनी के मूल सिद्धांतों में परिवर्तन नहीं करते। वे सिर्फ निवेशकों पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं और एक हालिया बोनस एवं स्टॉक विभाजन के बाद शेयरों में गिरावट दर्ज की जाती है। इसलिए ऐसे शेयर से बचें, जिसका हाल के दो वर्षों में बोनस या विभाजन का मुद्दा रहा हो।

इस अध्याय का सारांश

1. जब आप दो शेयरों की कीमतों की तुलना करें तो यह जानने के लिए कि कौन सा शेयर सस्ता है, हमेशा उनके अंकित मूल्य को देखें।
2. यदि कोई शेयर वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से अधिक गिरावट दर्ज करता है तो उसे न खरीदें।
3. यदि कोई शेयर वर्ष के निम्न से 100 प्रतिशत से अधिक ऊपर उठता है तो उसे न खरीदें।
4. ऐसे शेयर से हमेशा बचें, जिसकी प्रोमोटर होल्डिंग 15 प्रतिशत से कम हो और प्रोमोटरों ने जिसकी होल्डिंग पिछले एक वर्ष में घटा दी हो।
5. ऐसे शेयर से बचें, जिसने अपने आधार मूल्य से 20 प्रतिशत पर कारोबार किया हो।
6. ऐसे शेयर का चुनाव करें, जिसने अपने एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व से नीचे कारोबार किया हो।
7. ऐसे शेयर से बचें, जिसका हाल के दो वर्षों में कोई थोक सौदा हुआ हो।
8. ऐसे शेयर से बचें, जिसका हाल के दो वर्षों में स्टॉक विभाजन या बोनस का मुद्दा रहा हो।

□

बोनस और स्टॉक विभाजन सिर्फ निवेशकों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं

बोनस कंपनी के मूलभूत सिद्धांतों को नहीं बदलते और सिर्फ निवेशकों के लिए मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

मैं इसे स्पष्ट करता हूँ। मान लीजिए, एक कंपनी में कुल 100 शेयर हैं और कंपनी एक वर्ष में 1,000 रुपए कमाती है, तो कंपनी का ई.पी.एस. $1,000/100 = 10$ होगा।

ठीक है। अब कंपनी 1:4 का बोनस घोषित करती है, यानी अगर आपके पास एक शेयर है तो कंपनी आपको 4 शेयर मुफ्त देगी। तो बोनस जारी होने के बाद शेयरों की कुल संख्या 100 से बढ़कर 500 हो जाएगी, लेकिन कंपनी का मुनाफा 1,000 ही रहेगा। बोनस के बाद कंपनी का ई.पी.एस. $1,000/500 = 2$ हो जाएगा, यानी बोनस के बाद ई.पी.एस. हल्का हो जाएगा और आपको बोनस के बाद मूल्य समायोजन देखने को मिलेगा।

इसलिए बोनस तभी लाभप्रद होता है, जब कंपनी का मुनाफा बढ़ता है, अन्यथा वह ई.पी.एस. को कमजोर कर देगा और लंबी अवधि में शेयर की कीमत पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा; लेकिन अल्पावधि में यदि कंपनी बोनस की घोषणा करती है तो आम जनता की मांग बढ़ती है, क्योंकि वह नहीं समझ पाती कि इक्विटी कमजोर हो रही है या इक्विटी बढ़ रही है? उन्हें लगता है कि कंपनी उन्हें मुफ्त में शेयर दे रही है। इसलिए अल्पावधि में कीमत बढ़ती है। लेकिन जब बोनस की खबर ठंडी हो जाती है तो यूनिटेक स्टॉक की तरह अपने को समायोजित कर लेती है (यूनिटेक एक भारतीय स्टॉक है, जिसकी कीमत बोनस और स्टॉक विभाजन मुद्दे के बाद 12,000 से घटकर 28 हो गई थी)।

ऐतिहासिक रूप से बड़ी आई.टी. कंपनियाँ, जैसे—इन्फोसिस और विप्रो बोनस मुद्दे के बाद ऊपर उठी थीं, क्योंकि उनका मुनाफा और ई.पी.एस. बढ़ गया था। इसलिए कृपया हर कंपनी की तुलना इन बड़ी कंपनियों से करने की कोशिश न करें।

इस अध्याय का सारांश

1. बोनस के मुद्दे और अंकित मूल्य में विभाजन के बाद शेयरों की संख्या बढ़ती है। इसलिए कंपनी का नेट ई.पी.एस. बोनस के बाद कमजोर हो जाता है।
2. बोनस और विभाजन एक स्टॉक खरीदने के लिए बड़े बदलाव नहीं होते।
3. एक बोनस और विभाजन के बाद निवेशक अपने अतिरिक्त स्टॉक बेच सकते हैं। इसलिए बोनस और अंकित मूल्य विभाजन के बाद स्टॉक में गिरावट आती है।

□

रिवर्स ट्रेडिंग सिस्टम

रि वर्स ट्रेडिंग सिस्टम शेयर बाजार में नुकसान से बचने के लिए मेरी विशेष प्रणाली है। 'रिवर्स ट्रेडिंग' की इस प्रणाली को नकद बाजार में 'डिलीवरी बेस्ड शॉर्ट सेलिंग' या 'वितरण आधारित लघु बिक्री' भी कहा जाता है। आमतौर पर लघु बिक्री की अनुमति इंट्रा डे ट्रेडिंग और भविष्य एवं विकल्प कारोबार में होती है; लेकिन इस लेख में मैं आपको बताऊँगा कि कैसे एक छोटा निवेशक वितरण आधारित नकद बाजार निवेश में लघु बिक्री का लाभ प्राप्त कर सकता है!

'रिवर्स ट्रेडिंग सिस्टम' को समझने के लिए मेरा यह उदाहरण देखिए—

31 दिसंबर, 2007 को जब भारतीय बाजार ने अपने इतिहास के उच्चतम स्तर पर कारोबार किया था, मैंने पुंज लायड नाम का एक इन्फ्रा स्टॉक खरीदा, जिसने 560 रुपए पर कारोबार किया। मैंने 10 स्टॉक खरीदे और पुंज लायड के स्टॉक में 5,600 रुपए निवेश किए।

उसके बाद बाजार में बहुत बुरी गिरावट आई और जब स्टॉक एक वर्ष के अंदर अपने उच्चतम से 50 प्रतिशत से अधिक गिर गया (इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में मैं आपको बता चुका हूँ कि एक साल के अंदर 50 प्रतिशत से अधिक गिरावट दर्ज करनेवाले स्टॉक से बचें) तो मैंने पुंज लायड के ये 10 स्टॉक 256 रुपए में बेच दिए और 2,560 प्राप्त कर लिये। मेरे दोस्तों ने सोचा कि मैंने $5,600 - 2,560 = 3,040$ रुपए की हानि दर्ज की है। लेकिन मैं हमेशा अपने दोस्तों से कहता हूँ कि मैंने शेयर बाजार में कभी नुकसान नहीं उठाया है। उन्हें मेरे आत्मविश्वास पर हैरानी होती है और वे इस नुकसान देनेवाले कारोबार को समझना चाहते हैं।

उसके बाद मैंने पुंज लायड का वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात नियमित रूप से देखा और जब यह अनुपात स्थिर हुआ (1.5 से कम) तो मैंने ये 10 स्टॉक 56 रुपए प्रति शेयर की कीमत पर दोबारा खरीदे। तो इस बार मेरा निवेश सिर्फ 560 रुपए था और मुझे अपनी रिवर्स ट्रेडिंग से 2,000 रुपए वापस मिल गए ($2,560 - 560 = 2,000$), और इस प्रकार मेरा पिछला खरीद मूल्य 5,600 से घटकर $5,600 - 2,000 = 3,600$ रुपए हो गया।

तो अब ये शेयर मेरे पास हैं और इन 10 पुंज लायड शेयरों की मेरी धारिता लागत 3,600 रुपए है। इसका मतलब, यदि मैं यह स्टॉक 444 रुपए प्रति शेयर की दर से बेचता हूँ तो बिना किसी नुकसान के अपना 15 प्रतिशत लाभ लक्ष्य प्राप्त कर लूँगा। मैं इसे एक बार फिर समझाता हूँ—

1. पहले पुंज लायड के दस शेयर 560 रुपए की दर से खरीदे। कुल निवेश 5,600 रुपए।
2. 256 रुपए की दर से रिवर्स बिक्री। कुल नुकसान 3,040 रुपए, लेकिन 2,560 रुपए वापस मिले।
3. एक बार फिर 10 शेयर खरीदे। इस बार 56 रुपए की दर से। कुल निवेश 560 रुपए। इस सौदे में मुझे 2,000 रुपए वापस मिले, जिससे मेरा पिछला खरीद मूल्य 560 रुपए से घटकर $5,600 - 2,000 = 3,600$ रुपए रह गया।

4. अब मेरा होल्डिंग मूल्य $5,600 - 2,000 = 3,600$ रुपए है।
5. मेरा लक्ष्य मूल्य 444 है, तो यदि मुझे यह मिल जाता है, तो यह मुझे $444 \times 10 = 4,440$ देगा और मुझे $4,440 - 3,600 = 840$ मेरे 15 प्रतिशत लाभ के रूप में मिलेगा।

मैं इसे दूसरे शब्दों में दोहराता हूँ—

मैंने 5,600 रुपए के निवेश से शुरुआत की।

पहली ट्रेडिंग

1. खरीदे 10 शेयर @560 = 5,600 रुपए।
2. बेचे @256 = 2,560।
3. नुकसान रहा— $5,600 - 2,560 = 3,040$
फिर एक बार सुधार हुआ और स्टॉक स्थिर हो गया।
पहले सौदे के साथ मैंने जो राशि छोड़ी, वह सिर्फ 2,560 रुपए है।

दूसरी ट्रेडिंग

उसी संख्या में 10 शेयर 56 रुपए प्रति शेयर की दर से खरीदे।

1. खरीदे 10 शेयर @56 = 560 रुपए।
2. शेष राशि = 2,000 ($2,560 - 560$)।

3. यदि में 444 रुपए को दर से स्टॉक बेचूंगा तो मुझे 4,440 रुपए को राशि वापस मिलेगी।
इन्हें जोड़ने पर (4,440 + 2,000) मुझे 6,440 रुपए वापस मिलेंगे।
दोनों सौदों को जोड़ने पर मुझे अपने शुरुआती निवेश 5,600 रुपए के बदले 6,440 रुपए वापस मिलेंगे और मेरा मुनाफा 840 रुपए होगा, जो 5,600 का 15 प्रतिशत है।
हाँ, तो मेरे पास ये 10 शेयर अभी भी हैं, क्योंकि अभी भी पुंज लॉयड ने मेरे लक्ष्य मूल्य 444 से नीचे कारोबार किया।
तो जब आप नुकसान उठा रहे एक कारोबार में फँस जाते हैं तो उसके वर्ष के उच्च और निम्न अनुपात का पता लगाएँ। जब स्टॉक में उसके वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से अधिक गिरावट आती है तो इसका मतलब होता है कि वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 2 से कम है। यह एक लंबी अवधि की मंदी का संकेत है और आपके लिए नुकसान बुक करने में बुद्धिमाननी होगी।
और कुछ वर्षों बाद जब इस विशेष स्क्रिप्ट में गिरावट स्थिर हो जाएगी, यानी वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 1.5 से कम हो जाएगा तो इस बार आप वही मात्रा दोबारा खरीदेंगे।

नए संस्करण का अद्यतन (अपडेट)

यदि आपने मेरी हाल में लिखी पुस्तक 'शेयर बाजार में चंदू ने कैसे कमाया और चिंकी ने कैसे गँवाया?' पढ़ी है तो आप इस नए अद्यतन से परिचित होंगे।

यहाँ मैं उन नए पाठकों के लिए कुछ रूपरेखा प्रदान कर रहा हूँ, जिन्होंने अभी तक उपर्युक्त पुस्तक नहीं पढ़ी है। (हालाँकि आपसे आग्रह किया जाता है कि आप इस अद्यतन को गहराई से समझने के लिए उपर्युक्त पुस्तक 'शेयर बाजार में...' अवश्य पढ़ें)।

अब मैं इस रिवर्स ट्रेडिंग सिस्टम को अपडेट कर रहा हूँ और आपको सिर्फ अपने पोर्टफोलियो स्टॉक्स का 200 डी.एम.ए. ट्रेक करना होगा।

आप खुद भी 200 डी.एम.ए. की गणना कर सकते हैं और इसे मनीकंट्रोल साइट पर पा सकते हैं या फिर 200 डी.एम.ए. गणना के बारे में मेरा यू-ट्यूब वीडियो देख सकते हैं—

<https://www.youtube.com/watch?v=rSVbuSddVBU>

ऐसा कोई स्टॉक न खरीदें, जिसने इस 200 डी.एम.ए. से नीचे कारोबार किया हो।

यदि स्टॉक ने 200 डी.एम.ए. के ऊपर कारोबार किया हो तो उसे होल्ड कर लें।

जब स्टॉक 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत नीचे बंद होता है तो यह आपके स्टॉक को लाभ या हानि में बेचने का संकेत है; क्योंकि 90 प्रतिशत से अधिक मामलों में मैंने देखा है कि यदि एक स्टॉक 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत या उससे अधिक नीचे बंद होता है तो वह एक लंबी अवधि की गिरावट में प्रवेश करता है तो यदि आप अपना स्टॉक इस ब्रेकईवन प्वाइंट पर बेचते हैं तो आप अपने निवेशों को आगे के नकारात्मक पक्षों से सुरक्षित कर सकते हैं।

जब सुधार खत्म हो जाता है और आपका स्टॉक 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत से अधिक पर बंद होता है तो वही मात्रा दोबारा खरीदें।

इस पद्धति की मदद से आप 200 डी.एम.ए. से -5 प्रतिशत नीचे बंद होने को स्टॉप लॉस के रूप में देख सकते हैं।

तो जब आप अपना स्टॉक 200 डी.एम.ए. 5 प्रतिशत नीचे बेचते हैं और फिर 5 प्रतिशत अधिक पर फिर से खरीदते हैं तो वास्तव में आप अपना नुकसान बुक नहीं कर रहे हैं, बल्कि रिवर्स ट्रेडिंग सिस्टम का उपयोग कर रहे हैं।

इस अपडेट को और गहराई से समझने के लिए कृपया मेरी नई पुस्तक 'शेयर बाजार में चंदू ने कैसे कमाया और चिंकी ने कैसे गँवाया?' पढ़ें।

इस अध्याय का सारांश

1. रिवर्स ट्रेडिंग आपके पैसों को नुकसान से बचा सकती है।
2. जब आप नुकसान उठा रहे एक कारोबार में फँस जाते हैं तो उसके वर्ष के उच्च और निम्न अनुपात का पता लगाएँ। जब स्टॉक में उस वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से अधिक गिरावट आती है तो इसका मतलब होता है कि वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 2 से कम है तो यह एक लंबी अवधि की मंदी का संकेत है और आपको स्टॉक बेच देना चाहिए। और कुछ वर्षों बाद जब वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 1.5 से कम हो जाता है तो उस स्टॉक को वही मात्रा में दोबारा खरीद लेना चाहिए।
3. जब स्टॉक 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत कम पर बंद होता है तो यह आपका स्टॉक लाभ या हानि में बेचने का संकेत है।

4. जब सुधार खत्म हो जाता है और आपका स्टॉक 200 डॉ.एम.ए. से 5 प्रतिशत अधिक पर बंद होता है तो वही मात्रा दोबारा खरीदनी चाहिए।



लंबी अवधि की इक्विटी एस.आई.पी. में लाभ बुक करने की मेरी सेना विधि

यदि आपके पास फैंसी स्टॉक है और आप किसी विशेष स्टॉक में काफी बड़ी हिस्सेदारी खरीदना चाहते हैं तो मैं आपको सुरक्षित निवेश और सुरक्षित लाभ बुकिंग की अपनी गोपनीय विधि बताता हूँ।

सबसे पहले अपने फैंसी स्टॉक में लंबी अवधि का इक्विटी सिस्टेमेटिक निवेश प्लान (व्यवस्थित निवेश योजना या एस.आई.पी.) बनाएँ। मान लीजिए, आपको एक कंट्री क्लब में एक बड़ी हिस्सेदारी खरीदनी है तो पाँच वर्ष के लिए कंट्री क्लब में 50 डॉलर की मासिक एस.आई.पी. बनाएँ।

पाँच वर्ष के बाद आपके पास कंट्री क्लब की बड़ी हिस्सेदारी होगी। अब आप लाभ बुक करने के लिए मेरी अनूठी सेना विधि का उपयोग करें।

मेरी अनूठी सेना विधि : इस सेना विधि को समझने के लिए, मान लीजिए, सेना के एक कैप्टन के पास 10,000 सैनिक हैं और दुश्मन उसकी पोस्ट पर हमला कर देता है, तो बचाव के लिए सही विधि क्या होगी?

1. सभी 10,000 सैनिक लड़ेंगे। और यदि दुश्मन उन सभी को मार देता है तो आप अपनी सेना की पोस्ट हार जाएंगे।

2. सभी सैनिकों को 1,000-1,000 सैनिकों के 10 गुटों में विभाजित कर देंगे। दुश्मन पहले 1,000 सैनिकों से लड़ता है, और यदि सभी 1,000 सैनिक शहीद हो जाते हैं तो 1,000 सैनिकों का दूसरा गुट लड़ेगा और यदि वह गुट भी शहीद हो जाता है तो तीसरा गुट लड़ेगा—जब तक सभी 10 गुट शहीद नहीं हो जाते।

यह कोई मजाक नहीं है। मैं आपको शेयर बाजार डिफेंस (रक्षा) के बारे में एक गंभीर तरीका बताने जा रहा हूँ।

मुझे लगता है, विकल्प '2' एक कैप्टन के लिए बचाव का सबसे अच्छा विकल्प है, जहाँ वह सभी सैनिकों को 1,000-1,000 के गुट में विभाजित कर देता है, जहाँ दुश्मन पहले 1,000 सैनिकों से लड़ता है और यदि सभी 1,000 सैनिक शहीद हो जाते हैं तो 1,000 सैनिकों का दूसरा गुट लड़ेगा और यदि वह गुट भी शहीद हो जाता है तो तीसरा गुट लड़ेगा—जब तक सभी 10 गुट शहीद नहीं हो जाते।

हाँ, तो मैं उपर्युक्त विकल्प का उपयोग अपनी लंबी अवधि के एस.आई.पी. में करता हूँ। मान लीजिए, आप कंट्री क्लब में 50 डॉलर प्रतिमाह निवेश करते हैं तो पाँच वर्ष के बाद आपके पास 2,563 स्टॉक होंगे और कंट्री क्लब के शेयर की कीमत पाँच वर्ष बाद 198 डॉलर होगी।

अब अपने प्रत्येक स्टॉक को एक सैनिक के रूप में देखें और उन 2,563 स्टॉक्स को 256-256 स्टॉक्स के 10 लॉट्स में विभाजित करें।

यदि कंट्री क्लब की कीमत किसी नजदीकी ऊँचाई से 30 प्रतिशत से अधिक गिरती है (इस उदाहरण में हम मान लेते हैं कि कंट्री क्लब की कीमत दो वर्ष बाद 198 डॉलर है) तो अपने 256 स्टॉक्स बुक कर लें। इसका मतलब है कि यदि कंट्री क्लब 198 से 30 प्रतिशत नीचे गिरता है और 138.60 को छूता है तो आपको अपनी होल्डिंग का 1/10 हिस्सा बुक करना है (90 प्रतिशत शेयर होल्ड करें और अपना एस.आई.पी. जारी रखें)।

यदि यहाँ से कीमत 30 प्रतिशत और गिरती है (138.60 का 30 प्रतिशत) तो 256 (1/10) और बुक करें। 198 मानी हुई कीमत है। आप इसके बदले कोई भी आकड़ा ले सकते हैं। मान लीजिए, आप 100 का आँकड़ा लेते हैं तो अपना पहला 1/10 70 पर बुक करें और दूसरा 70-21 (70 का 30 प्रतिशत) = 49 तीसरा 49 - 14.70 = 34.30।

मुझे लगता है, आप लंबी अवधि के इक्विटी एस.आई.पी. में लाभ बुक करने की मेरी सेना पद्धति को समझ गए हैं, और यह आपके लाभ को सुरक्षित करने के लिए आवश्यक है; क्योंकि कोई आपको यह गारंटी नहीं देता कि आपका स्टॉक आनेवाले दस वर्षों में ऊपर बना रहेगा।

इस अध्याय का सारांश

1. अपनी पसंद के स्टॉक में बड़ी हिस्सेदारी न खरीदें।
2. यदि कोई स्टॉक आपको पसंद है तो उस विशेष स्टॉक में एक लंबी अवधि का इक्विटी एस.आई.पी. करें।
3. जब आप लाभ में किसी स्टॉक की भारी मात्रा धारण करते हैं तो अपनी सभी हिस्सेदारियों में लाभ बुक न करें।

4. अपनी सभी होल्डिंग्स को 1/10 के हिस्सों में विभाजित करें और यदि इस स्टॉक में गिरावट होने लगती है तो 30 प्रतिशत की प्रत्येक गिरावट पर 1/10 हिस्सा बेच दें।



शेयर बाजार में जीत के स्वर्णिम नियम

1. सबसे पहले अपने पैसे को दो हिस्सों में विभाजित कर दें—70 प्रतिशत इक्विटी में और 30 प्रतिशत नकद और नकद म्यूचुअल फंड में (जैसे गिल्ट फंड, डेब्ट फंड या ई.टी.एफ.)।

2. कभी भी अपने पूरे पैसे को एक अकेले स्टॉक में न डालें, बल्कि 2-10 स्टॉक्स में डालें। अपने पोर्टफोलियो में खुदरा दुकान जैसे विविधतापूर्ण होने का प्रयास करें।

कम जोखिम के लिए हमेशा एक अच्छी कंपनी के शेयर में निवेश करें। अच्छी कंपनी की पहचान के लिए मैं आपको कुछ चेक प्वाइंट्स देता हूँ—

(क) उसका एक वर्ष का प्रति शेयर शुद्ध राजस्व बाजार मूल्य से अधिक होगा।

(ख) अगर कंपनी लाभांश देती है तो वो अच्छी है।

(ग) कंपनी में प्रोमोटर्स की हिस्सेदारी 15 प्रतिशत से अधिक होनी चाहिए।

3. एक समय में एक शेयर की न्यूनतम मात्रा ही खरीदें (भारतीय बाजार में एक समय में 5,000-10,000 रुपए की खरीद (लगभग 100 डॉलर-200 डॉलर) पर्याप्त है (एक मूल रूप से सुरक्षित शेयर के लिए) और पैनी शेयर में एक समय में 2,500-5,000 रुपए (लगभग 40-80 डॉलर) ही निवेश करना चाहिए। लालच न करें। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास 1,00,000 रुपए हैं तो पहले उन्हें 70:30 के अनुपात में विभाजित कर लें।

यदि आपकी कुल बचत 1,00,000 रुपए है तो इक्विटी बाजार में सिर्फ 70,000 रुपए निवेश करें और 30,000 रुपए बैंक एफ.डी. या अन्य स्कीमों में निवेश करें।

इन 70,000 रुपयों से आप प्रत्येक स्टॉक में 5,000 रुपए निवेश करके 14 कंपनियों के इक्विटी शेयर खरीद सकते हैं।

लेकिन एक ट्रेडिंग सप्ताह में हम सिर्फ एक कंपनी के शेयर खरीदते हैं, क्योंकि यदि हम चौदह हफ्तों में 14 कंपनियों के शेयर खरीदते हैं तो हमें पर्याप्त शोध करके उन्हें कम कीमत में खरीदने का मौका मिल जाता है।

4. एक ही क्षेत्र की कंपनी में खरीदने से बचें। जैसे—टी.सी.एस. और इन्फोसिस—दोनों सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हैं और यदि दोनों आपकी 4-प्वाइंट जाँच प्रणाली में सफल होती हैं, जो मैंने बताई हैं तो आप दोनों में से एक कंपनी का चुनाव करें। आपको दोनों में से एक कंपनी का चुनाव कैसे करना है, इसका एक सरल तरीका है। एक बार फिर दोनों कंपनियों की हमारी 4-प्वाइंट प्रणाली से जाँच करें और दोनों में से जिसके प्वाइंट अधिक हों, उसे चुन लें।

5. सबसे महत्वपूर्ण बात, भविष्य और विकल्प या अंतराल कारोबार मेरे फॉलोअर्स के लिए सख्ती से निषिद्ध हैं।

यदि आप एक अल्पकालिक व्यापारी हैं और बहुत कम समय में ज्यादा पैसे कमाना चाहते हैं, जैसे एक दिन या दो-तीन दिनों में, तो सिर्फ भाग्य या भगवान् आपके पैसे बचा सकता है और मुझे लगता है कि यह पुस्तक आपके लिए नहीं है।

6. उपर्युक्त नियमों के आधार पर मुझे लगता है, आप 50-100 कंपनियों का अपना सर्वोत्तम-विविध पोर्टफोलियो बना सकते हैं।

7. प्रत्येक 5 से 10 रुपए की गिरावट में अपने स्टॉक का औसत न निकालें। औसत तब निकालना चाहिए, जब आपका स्टॉक 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत ऊपर बंद हो (इस बारे में विस्तार से इस पुस्तक के अध्याय 26 में पढ़ें)।

8. शेयर बाजार में निवेश के लिए पैसे उधार न लें। एक शेयर बाजार निवेशक के लिए यह अनिवार्य है कि वह ऋण-मुक्त व्यक्ति हो। यदि आपके क्रेडिट कार्ड पर बड़े कर्ज हैं और आप अपनी आवश्यकताओं के लिए पैसे उधार लेते हैं तो सबसे पहले कृपया अपने सभी ऋण और उधार चुकाएँ और उसके बाद अपना शेयर बाजार व्यवसाय शुरू करें।

यदि आप अपना निवेश मेरी शैली में शुरू करना चाहते हैं तो मेरा सुझाव है कि अपनी मासिक आय का 10 प्रतिशत बचाएँ और अपनी पहले माह की 10 प्रतिशत राशि को अपनी मूल निवेश राशि के रूप में निर्धारित करें। मान लीजिए, आपकी मासिक आय 60,000 रुपए है तो आप 60,000 के 10 प्रतिशत, यानी 6,000 रुपए को प्रत्येक स्टॉक में अपनी मूल निवेश राशि निर्धारित कर लें। प्रत्येक वर्ष इस मूल निवेश राशि में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि करें। इस बारे में और जानकारी अगले अध्याय में पढ़ें।

इस अध्याय का सारांश

1. अपनी पूरी बचत इक्विटी में न डालें।
2. एक अकेले स्टॉक में न्यूनतम राशि का निवेश करें।
3. भविष्य और विकल्प एवं अंतराल की अटकलों में कारोबार न करें।

4. प्रत्येक गिरावट में औसत न निकालें।
5. शेयर बाजार व्यवसाय शुरू करने से पहले एक ऋण-मुक्त व्यक्ति बनना अनिवार्य है।
6. शेयर बाजार निवेश के लिए पैसे उधार न लें।



शेयर बाजार में अपना निवेश कैसे बढ़ाएँ?

पिछले अध्याय में मैंने आपको बताया है कि यदि आप शेयर बाजार में 50,000 रुपए निवेश करना चाहते हैं तो उसे 5,000-5,000 के दस हिस्सों में विभाजित कर लें। इसका मतलब एक अकेले स्टॉक में सिर्फ 5,000 रुपए निवेश करें और एक स्टॉक को कम-से-कम एक वर्ष की अवधि के लिए होल्ड करें। एक वर्ष बाद यदि आपको 15 प्रतिशत से अधिक का लाभ मिलता है तो उसे बेच दें और अपने लाभ बुक कर लें।

ठीक है, मुझे लगता है कि आप ये मेरी पुस्तक में पहले ही पढ़ चुके हैं।

लेकिन अब मैं आपको अपना एक गोपनीय फॉर्मूला बताना चाहता हूँ, जिससे मैं बाजार की हर स्थिति में अपना दिमाग शांतिपूर्ण और प्रसन्न रख सकता हूँ।

वर्ष 2005 में मैंने 1,02,600 रुपए की मूल राशि से शेयर बाजार में निवेश करना शुरू किया और प्रत्येक कंपनी में 2,700-2,700 रुपए निवेश करके 38 शेयर खरीदे।

वर्ष 2005 में जब मैंने अपना पहला स्टॉक खरीदा तो प्रत्येक स्टॉक के लिए 2,700 रुपए को मूल राशि के रूप में तय किया और हर वर्ष इस मूल राशि में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि की, जिससे वर्ष 2017 में मूल राशि 6,400 रुपए हो गई है।

मान लीजिए, मैं वर्ष 2006 में इनमें से एक हिस्सा बेच देता और 15 प्रतिशत मुनाफा कमाता तो इसका मतलब होता कि मेरा शुरुआती निवेश 2,700 रुपए था और मुझे 405 रुपए का मुनाफा मिला (दलाली घटाने के बाद)।

इसका मतलब, एक वर्ष के बाद मेरे 2,700 रुपए $2,700+405=3,105$ बन गए और अब मैं अपने पैसे एक नए स्टॉक में निवेश करना चाहता हूँ। तो मेरे लिए कौन सी रणनीति सही होगी?

1. पूरे 3,105 रुपए एक नए स्टॉक में निवेश करना।

2. मुनाफे के 405 रुपए का आनंद लेना और 3,500 रुपए की मूल राशि को दोबारा निवेश करना।

मैं जानता हूँ, अधिकांश पाठक मेरे लिए दूसरे विकल्प का चुनाव करेंगे; लेकिन यदि आप शेयर बाजार में पैसे बनाना चाहते हैं तो दोनों ही विकल्प गलत हैं।

अब मैं आपको पुनः निवेश का अपना गोपनीय फॉर्मूला बताऊँगा।

1. यदि मैं पहले विकल्प का चुनाव करता हूँ तो बाजार में कभी कमाई नहीं कर सकता। यह विकल्प एक जुए की तरह है, जहाँ जुआरी अपनी जीती हुई पूरी रकम जुए में दोबारा लगा देता है और एक दिन अपने सारे पैसे गंवा देता है।

2. दूसरे विकल्प में मेरी कमाई और लाभ हमेशा सीमित होंगे। हर कोई अपने निवेश बढ़ाना चाहता है। हर कोई अपनी कमाई बढ़ाना चाहता है।

3. तो सही विकल्प क्या है? सही सिद्धांत (या मेरा सिद्धांत) यह है कि मैं लाभ की बुकिंग के बाद पैसों को पुनः निवेश करने से पहले हमेशा अपनी मूल राशि में 7.5 प्रतिशत बढ़ा देता हूँ।

हाँ, तो 2,700 का 7.5 प्रतिशत 202.50 है, जिसे मैंने निकटतम 50 पर राउंड ऑफ कर दिया, जिससे वह 200 हो गया। इस प्रकार, मेरी पुनः निवेश राशि $2,700+200=2,900$ रुपए हो गई और शेष $3,105-2,900=205$ मेरी कमाई हो गई, जिसे मैं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करता हूँ।

4. इस फॉर्मूले को मैं हर साल घुमाता हूँ; अर्थात् हर साल मैं अपनी पुनः निवेश राशि में 7.5 प्रतिशत बढ़ाता हूँ (और उसे निकटतम 50 पर राउंड ऑफ कर देता हूँ। इस प्रकार, वर्ष 2017 में प्रत्येक स्टॉक में मेरी मूल निवेश राशि 6,400 रुपए हो गई है)।

मैं साल-दर-साल अपना निवेश किस तरह बढ़ाता हूँ, इसे समझने के लिए यह तालिका देखें—

वर्ष — 2005

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 2,700

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — —

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — —

वर्ष के लिए मूल राशि — 2,700

वर्ष — 2006

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 2,700

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 202.5

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 200

वर्ष के लिए मूल राशि — 2,900

वर्ष — 2007

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 2,900

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 217.5

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 200

वर्ष के लिए मूल राशि — 3,100

वर्ष — 2008

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 3,100

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 232.5

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 250

वर्ष के लिए मूल राशि — 3,350

वर्ष — 2009

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 3,350

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 251.25

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 250

वर्ष के लिए मूल राशि — 3,600

वर्ष — 2010

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 3,600

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 270

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 250

वर्ष के लिए मूल राशि — 3,850

वर्ष — 2011

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 3,850

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 288.75

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 300

वर्ष के लिए मूल राशि — 4,150

वर्ष — 2012

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 4,150

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 311.25

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 300

वर्ष के लिए मूल राशि — 4,450

वर्ष — 2013

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 4,450

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 333.75

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 350

वर्ष के लिए मूल राशि — 4,800

वर्ष — 2014

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 4,800

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 360

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 350

वर्ष के लिए मूल राशि — 5,150

वर्ष — 2015

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 5,150

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 386.25

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 400

वर्ष के लिए मूल राशि — 5,550

वर्ष — 2016

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 5,550

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 416.25

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 400

वर्ष के लिए मूल राशि — 5,950

वर्ष — 2017

पिछला वर्ष/ आरंभिक राशि — 5,950

7.5 प्रतिशत की वृद्धि — 446.25

निकटतम 50 में बढ़ी हुई राशि — 450

वर्ष के लिए मूल राशि — 6,400

5. इस उदाहरण में 15 प्रतिशत लाभ न्यूनतम है। कभी-कभी मुझे अपने कारोबार में 15 प्रतिशत से अधिक, जैसे 40-125 प्रतिशत तक लाभ मिल जाता है। इस स्थिति में मैं सिर्फ 7.5 प्रतिशत बढ़ाता हूँ और 7.5 प्रतिशत अपनी जेब में रखता हूँ। बचे हुए लाभ का उपयोग मैं शेयरों के लॉट्स की संख्या बढ़ाने में करता हूँ। उदाहरण के लिए, वर्ष 2008 में जब बाजार में गिरावट आई और अधिकांश स्टॉक्स ने बहुत कम कीमतों पर कारोबार किया तो मैंने एक स्टॉक में 3,350 रुपये निवेश किए और इस कारोबार में 125 प्रतिशत लाभ (4,187.50 रुपये) कमाया। फिर मैंने अपने लाभ से 3,350 रुपये का एक नया लॉट बनाया।

मैं ईमानदारी से खुलासा करता हूँ कि उपर्युक्त निवेश राशियों के उदाहरण काल्पनिक उदाहरण हैं, क्योंकि अपने आरंभिक कारोबारी वर्षों में मैंने भी निवेश राशियों में अनुशासन तोड़ा था और मूल निवेश राशियों का सख्ती से पालन नहीं किया था। लेकिन अब, मैं इस पुस्तक में दिए अपने नियमों का सख्ती से पालन करता हूँ और एक स्टॉक में 6,400 रुपये से अधिक निवेश नहीं करता हूँ, सिवाय कंट्री क्लब स्टॉक के, जिसे मैं अपनी विशेष सेप (SEP) विधि से खरीदता हूँ, जो मेरी पुस्तक 'शेयर बाजार में चंदू ने कैसे कमाया और चिंकी ने कैसे गँवाया' में बताई गई है।

इस अध्याय का सारांश

1. प्रत्येक स्टॉक में अपनी आरंभिक निवेश राशि का चुनाव करें।
2. जब स्टॉक की कीमत 15 प्रतिशत से अधिक बढ़ जाए तो अपना लाभ बुक करें और अपने पैसे एक नए स्टॉक में घुमाएँ।
3. हर बार अपनी नई निवेश राशि में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि करें।

□

स्टॉक की बदलती कीमतों के मूल कारण क्या हैं?

1. प्रत्येक स्टॉक का बाजार मूल्य दो चीजों से बनता है—
(पहली चीज) स्टॉक का अंकित मूल्य + (दूसरी चीज) स्टॉक का प्रीमियम = स्टॉक का बाजार मूल्य।
उदाहरण के लिए, रिलायंस कम्युनिकेशन का स्टॉक 65 पर कारोबार कर रहा है। इस स्टॉक का अंकित मूल्य 5 रुपए है और बाजार का प्रीमियम 60 रुपए है तो वर्तमान बाजार मूल्य $5+60=65$ होगा।
2. अंकित मूल्य सामान्य कारोबार में नहीं बदलता। यह तभी बदलता है, जब निदेशक मंडल इस प्रयोजन के लिए एक प्रस्ताव पारित करता है। व्यापार में स्टॉक प्रीमियम सिर्फ मांग और आपूर्ति के फॉर्मूले द्वारा बदलता है। मान लीजिए, मैं खुले बाजार में रिलायंस कम्युनिकेशन लिमिटेड के 1,000 स्टॉक्स खरीदने के लिए बोली लगाता हूँ और कोई भी अपने शेयर 65 रुपए की दर से (60 रुपए के प्रीमियम पर) बेचने के लिए तैयार नहीं होता तो प्रीमियम 60 से बढ़कर 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67 ... सर्किट सीमा तक यूँ ही बढ़ता रहता है।
मान लीजिए, कोई व्यक्ति अपने स्टॉक 75 रुपए की दर से बेचने को तैयार हो जाता है। इस स्थिति में उसे 70 रुपए प्रीमियम मिलेगा और यदि मेरा सौदा हो जाता है तो वर्तमान बाजार मूल्य 75 रुपए होगा, मतलब 70 (प्रीमियम) + 5 (अंकित मूल्य) = 75 ।
3. इसका मतलब यह है कि मैं 5 रुपए का एक स्टॉक 75 रुपए में खरीद रहा हूँ। कंपनी इक्विटी में मेरी हिस्सेदारी सिर्फ 5 रुपए है। यदि कंपनी मुझे 50 प्रतिशत लाभांश देती है तो वह $75/2=37.50$ नहीं होगा, बल्कि $5/2=2.5$ प्रति स्टॉक होगा। चूंकि मैं कंपनी को 5 रुपए दे रहा हूँ और 70 रुपए स्टॉक के विक्रेता को, इसलिए कंपनी की पूंजी में मेरी हिस्सेदारी सिर्फ 5 रुपए की है।
4. जब ग्राहकों की संख्या अधिक होती है (मांग उच्च होती है) तो उसकी कीमत ऊँची होती है (प्रीमियम ऊँचा होता है) और जब विक्रेता की संख्या अधिक होती है (मांग कम होती है) तो स्टॉक की कीमत नीची होती है (प्रीमियम नीचे होता है)।
5. स्टॉक प्रीमियम को कोई नियंत्रित नहीं करता। उसे खरीदार और विक्रेता के आपसी समझौते द्वारा तय किया जाता है। कभी-कभी स्टॉक एक्सचेंज स्टॉक मूल्य में अतिरिक्त अटकलों को नियंत्रित करने के लिए एक सर्किट सीमा निर्धारित कर देता है।
6. एक और उपयोगी जानकारी इस बात से संबंधित है कि एक स्टॉक खरीदने के लिए कोई प्रीमियम का भुगतान क्यों करेगा? ऐसा ई.पी.एस. (आय प्रति स्टॉक) के कारण होता है। उदाहरण के लिए, एक्स वाई जेड स्टॉक का अंकित मूल्य सिर्फ 1 रुपया है, लेकिन उसकी प्रति स्टॉक कमाई 4.78 रुपए प्रति स्टॉक है, तो फिर वह क्यों हमें अपना स्टॉक सिर्फ 1 रुपए में देगा (क्योंकि यह स्टॉक प्रति वर्ष लगभग 5 रुपए कमाता है), इसलिए वह हमें अपना स्टॉक तब देगा, जब हम उसे 199 रुपए का प्रीमियम देंगे, क्योंकि एक्स वाई जेड स्टॉक का वर्तमान बाजार मूल्य 200 है $(1+199)$, यानी हम एक स्टॉक खरीदने के लिए 40 वर्ष की आय का अग्रिम भुगतान कर रहे हैं। इस सिद्धांत को पी/ई (मूल्य/आय प्रति स्टॉक) कहते हैं। इस प्रकार एक्स वाई जेड स्टॉक का पी/ई 40 होगा।
7. एक और चीज—कभी-कभी एक कंपनी की इक्विटी कम होती है, जैसे एम.एम.टी.सी.। इस कंपनी के पास सिर्फ 10 रुपए अंकित मूल्य के 5,00,00,000 स्टॉक्स हैं और प्रोमोटर्स के पास 99.33 प्रतिशत स्टॉक्स हैं। इसलिए बाकी के 3,35,000 स्टॉक्स बाजार में कारोबार करते हैं। यदि ये स्टॉक्स कुछ शेयरधारकों के पास हैं और बाजार में मांग बनी हुई है तो इनकी कीमत बढ़ती रहती है। आपको आश्चर्य होगा कि एम.एम.टी.सी. का वर्तमान बाजार मूल्य 32,440 रुपए है और ई.पी.एस. 43 है। इस प्रकार एम.एम.टी.सी. पी/ई 754 है (अर्थात् हम एम.एम.टी.सी. का एक स्टॉक खरीदने के लिए वार्षिक आय में से 754 रुपए का भुगतान करते हैं)। (यह लेख मूल रूप से 25.06.2010 में लिखा गया था, इसलिए कीमत का जो उदाहरण दिया गया है, वह 25.05.2010 का है)।
8. अंतिम बात, प्रीमियम नकारात्मक भी हो सकता है। जैसे पैन इंडिया कॉरपोरेशन लिमिटेड का स्टॉक 10 रुपए अंकित मूल्य का है, लेकिन उसका वर्तमान बाजार मूल्य सिर्फ 0.70 है, जिसका मतलब इस स्टॉक पर प्रीमियम -9.30 है।
(यह अध्याय मूल रूप से 25.06.2010 को लिखा गया था, इसलिए उदाहरण में दी गई कीमतें 25.06.2010 के मूल्य की हैं।)

इस अध्याय का सारांश

1. स्टॉक की कीमत अंकित मूल्य और प्रीमियम से तय होती है।
2. शेयरों का प्रीमियम मांग और आपूर्ति के सिद्धांत पर निर्भर करता है।

3. इसलिए स्टॉक में ऊँचाई आने या गिरावट आने की संभावना असममित होती है (गिरावट में शून्य पर सीमित या एक्सचेंज की सूची से बाहर)।

स्टॉक्स में ऊँचाई या गिरावट की संभावना अविश्वसनीय होती है, इसलिए उन स्टॉक्स पर ऊँचा प्रीमियम न दें, जिन्हें आप व्यवसाय के लिए खरीदते हैं; क्योंकि जब बाजार की स्थिति बदलती है तो प्रीमियम तेजी से बढ़ते या घटते हैं।



शेयर बाजार का सबसे बड़ा झूठ

एक दिन जब मैं सब्जी खरीदने के लिए बाजार गया तो मेरे दुकानदार ने मुझसे कहा, “अरे साहब, आपका बाजार तो इस समय अपनी सर्वाधिक ऊँचाई पर है। मुझे लगता है, आप भारी मुनाफा कमाते होंगे।”

मैंने उसे जवाब दिया, “यह शेयर बाजार का सबसे बड़ा झूठ है।”

उसने हैरानी से पूछा, “कैसे?”

मैंने उसे समझाया, “हमारे सूचकांक (इंडेक्स) निफ्टी में 50 स्टॉक हैं और हमने 2007 से निफ्टी में 18 स्टॉक बदले हैं। इस तरह निफ्टी में लगभग 38 प्रतिशत शेयर बदल गए हैं। तो फिर हम वर्ष 2007 के निफ्टी की तुलना 2010 के निफ्टी से कैसे कर सकते हैं?”

वर्ष 1996 से 2017 तक निफ्टी में कुल 172 स्क्रिप्ट्स बदल चुकी हैं।

हाँ, यह सच है। आज मैं अपने पाठकों के सामने शेयर बाजार के इस सबसे बड़े झूठ को उजागर कर रहा हूँ। यह झूठ है—“सूचकांक एक स्थिर चर है।”

सच्चाई यह है कि “सूचकांक का आँकड़ा एक स्थिर आँकड़ा नहीं होता। शेयर बाजार सूचकांक में स्टॉक स्थिर नहीं होते हैं। एक बाजार सूचकांक में स्टॉक समय-समय पर बदलते रहते हैं।”

ये शेयर निफ्टी संविधान में वर्ष 2007 से 2010 के दौरान बदले हैं—

17 शेयर, जो 4 अप्रैल, 2007 से 1 अक्टूबर, 2010 के बीच निफ्टी में बदले हैं—

शामिल होने की तिथि— 1 अक्टूबर, 2010

शामिल सिक्योरिटीज— सेसा गोवा

बाहर हुई सिक्योरिटीज— यूनिटेक

शामिल होने की तिथि— 1 अक्टूबर, 2010

शामिल सिक्योरिटीज— डॉ. रेड्डी

बाहर हुई सिक्योरिटीज— आइडिया

शामिल होने की तिथि— 1 अक्टूबर, 2010

शामिल सिक्योरिटीज— बजाज ऑटो

बाहर हुई सिक्योरिटीज— ए.बी.बी.

शामिल होने की तिथि— 8 अप्रैल, 2010

शामिल सिक्योरिटीज— कोटक बैंक

बाहर हुई सिक्योरिटीज— ग्रेसिम

शामिल होने की तिथि— 22 अक्टूबर, 2009

शामिल सिक्योरिटीज— जे.पी. एसोसिएट्स

बाहर हुई सिक्योरिटीज— टाटा कम्युनिकेशन

शामिल होने की तिथि— 22 अक्टूबर, 2009

शामिल सिक्योरिटीज— आई.डी.एफ.सी.

बाहर हुई सिक्योरिटीज— नेशनल एल्युमीनियम

शामिल होने की तिथि— 17 जून, 2009

शामिल सिक्योरिटीज— जिंदल स्टील

बाहर हुई सिक्योरिटीज— आर.पी.एल.

शामिल होने की तिथि— 27 मार्च, 2009

शामिल सिक्योरिटीज— एक्सिस बैंक

बाहर हुई सिक्योरिटीज— जील

शामिल होने की तिथि— 12 जनवरी, 2009

शामिल सिक्योरिटीज— रिलायंस कैपिटल

बाहर हुई सिक्योरिटीज— सत्यम कंप्यूटर

शामिल होने की तिथि— 10 सितंबर, 2008

शामिल सिक्योरिटीज— रिलायंस पावर

बाहर हुई सिक्योरिटीज— डॉ. रेड्डी

शामिल होने की तिथि— 14 मार्च, 2008

शामिल सिक्योरिटीज— डी.एल.एफ.

बाहर हुई सिक्योरिटीज— ग्लैक्सो

शामिल होने की तिथि— 14 मार्च, 2008

शामिल सिक्योरिटीज— पावर ग्रिड

बाहर हुई सिक्योरिटीज— बजाज ऑटो

शामिल होने की तिथि— 12 दिसंबर, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— आइडिया

बाहर हुई सिक्योरिटीज— एम.टी.एन.एल.

शामिल होने की तिथि— 12 दिसंबर, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— केयर्न

बाहर हुई सिक्योरिटीज— हिंद पेट्रो

शामिल होने की तिथि— 5 अक्टूबर, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— यूनितेक

बाहर हुई सिक्योरिटीज— आई.पी.सी.एल.

शामिल होने की तिथि— 24 सितंबर, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— एन.टी.पी.सी.

बाहर हुई सिक्योरिटीज— डाबर

शामिल होने की तिथि— 4 अप्रैल, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— आर.पी.एल.

बाहर हुई सिक्योरिटीज— जेट एयरवेज

शामिल होने की तिथि— 4 अप्रैल, 2007

शामिल सिक्योरिटीज— एस.टी.ई.आर.

बाहर हुई सिक्योरिटीज— ओरिएंटल बैंक

इसलिए स्टॉक मूल्यांकन की जाँच करने के लिए शेयर बाजार सूचकांक सबसे अच्छा पैरामीटर नहीं है। किसी विशेष स्टॉक की जाँच करने के लिए हमेशा उस शेयर के मूल्य की गतिविधि देखें, सूचकांक की गतिविधि नहीं।

वर्ष 2017 का अपडेट : 18 सितंबर, 1996 से 31 मार्च, 2017 तक निफ्टी का संविधान 171 बार बदला है। आप निफ्टी स्क्रिप्ट्स में इन 171 बदलावों की पूरी एक्सेल शीट्स एन.एस.ई. इंडिया की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते हैं।

निफ्टी, निफ्टी जूनियर, निफ्टी मिडकैप इत्यादि के सभी बदलावों को आप इस लिंक से डाउनलोड कर सकते हैं— <https://www.nseindia.com/content/indices/IndexInclExcl.xls>

मैंने इस पुस्तक के अंतिम पन्नों में एक तालिका भी शामिल की है, जहाँ आपको निफ्टी के इन 171 बदलावों की सूची मिल जाएगी।

आपको क्या लगता है, क्या हमारा सूचकांक बाजार स्वास्थ्य का एक उचित पैरामीटर रहा है?

अपना जवाब मुझे mahesh2073@yahoo.com पर मेल करें।

इस अध्याय का सारांश

1. बाजार सूचकांक में स्टॉक समय-समय पर बदलते रहते हैं।
2. उपर्युक्त कारण से शेयर बाजार सूचकांक स्टॉक मूल्यांकन की जाँच करने के लिए सबसे अच्छा पैरामीटर नहीं है। इसके लिए हमेशा विशेष स्टॉक की मूल्य गतिविधि देखें, सूचकांक की गतिविधि नहीं।

3. मेरे व्याक्तिगत अनुभव में सूचकांक के प्रत्येक स्तर पर कुछ कंपनियों के स्टॉक अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इसलिए यदि आपके पास एक विविधतापूर्ण पोर्टफोलियो है तो आपके पास बाजार सूचकांक के प्रत्येक स्तर पर शेयर बेचने और 15 प्रतिशत मुनाफा कमाने का अवसर है।
4. निफ्टी के स्टॉक वर्ष 1996 के बाद से 171 बार बदल चुके हैं।



विकल्प कारोबार क्या है?

मैं आपको शेयर बाजार में एफ एंड ओ (F&O) क्षेत्र में कारोबार करने की सलाह नहीं दूँगा, क्योंकि एफ एंड ओ बड़े संस्थागत निवेशक के लिए एक उपकरण है। मैं यह लेख छोटे निवेशकों के शैक्षिक उद्देश्य के लिए इस पुस्तक में शामिल कर रहा हूँ।

1. विकल्प एक अनुबंध होता है, जो खरीदार को एक विशेष तिथि को या उससे पहले एक विशेष कीमत पर अंतर्निहित सुरक्षा के शेयर खरीदने या बेचने का अधिकार देता है, लेकिन दायित्व नहीं देता।

2. विकल्प दो प्रकार के होते हैं—कॉल ऑप्शन और पुट ऑप्शन।

3. कॉल ऑप्शन एक निश्चित तिथि पर या उससे पहले एक विशेष कीमत पर स्टॉक खरीदने का विकल्प या ऑप्शन है। जब आप एक कॉल ऑप्शन खरीदते हैं तो आप उसके लिए जो कीमत देते हैं, जिसे हम 'ऑप्शन प्रीमियम' कहते हैं, उस विशेष स्टॉक को एक विशेष कीमत पर, जिसे हम 'स्ट्राइक प्राइस' कहते हैं, खरीदने का आपका अधिकार सुरक्षित करती है। यदि आप स्टॉक खरीदने के लिए इस विकल्प का उपयोग न करने का फैसला करते हैं और आप उसके लिए बाध्य भी नहीं हैं तो आपकी एकमात्र लागत विकल्प प्रीमियम होगी।

4. उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए, प्रवीण गोस्वामी 20 के प्रीमियम पर 1 इन्फोसिस कंप्यूटर डी.ई.सी. 2,350 कॉल खरीदते हैं। यह कॉन्ट्रैक्ट प्रवीण गोस्वामी को वर्तमान तारीख और डी.ई.सी. के अंत के बीच किसी भी समय 2,350 रुपये प्रति शेयर की दर से इन्फोसिस के 100 शेयर खरीदने की अनुमति देता है। इस विशेषाधिकार के लिए प्रवीण गोस्वामी 2,000 रुपये की फीस का भुगतान करते हैं (100 शेयरों के लिए 20 रुपये प्रति शेयर)। एक कॉल के खरीदार ने खरीदने का अधिकार खरीद लिया है और उसके लिए वह एक प्रीमियम का भुगतान करता है। आइए, अब देखते हैं कि एक विकल्प खरीदने से किसी को लाभ कैसे मिल सकता है?

5. यदि स्टॉक 2,370 रुपये के ऊपर चढ़ता है (2,350+20) तो वह लाभ-अलाभ (ब्रेक ईवन) की स्थिति में आ जाएगा और लाभ कमाना शुरू कर देगा। मान लीजिए, स्टॉक ऊपर नहीं चढ़ता, बल्कि नीचे गिरता है तो वह विकल्प का इस्तेमाल नहीं करने का निर्णय लेगा और 20 रुपये का प्रीमियम छोड़ देगा और इस प्रकार अपने 2,000 रुपये के नुकसान को सीमित कर लेगा।

6. जब आप कीमतों के बढ़ने की उम्मीद करते हैं, तब आप कॉल्स को खरीदकर एक लंबी स्थिति ले लेते हैं। आप आशावान होते हैं।

7. जब आप कीमतों के गिरने की उम्मीद करते हैं तो आप कॉल्स को बेचकर एक छोटी स्थिति ले लेते हैं। आप मंदी में होते हैं।

8. 'पुट ऑप्शंस' वे होते हैं, जिनमें आप एक स्टॉक को एक निश्चित तारीख को या उससे पहले एक निश्चित कीमत पर बेच सकते हैं। पुट ऑप्शन के साथ आप बिक्री मूल्य तय करके स्टॉक का 'बीमा' करवा सकते हैं। यदि किसी परिस्थिति में स्टॉक की कीमत गिरती है और आपकी परिसंपत्ति को नुकसान पहुंचता है, तो आप अपने विकल्प का इस्तेमाल करके उसे उसकी बीमाकृत कीमत के स्तर पर बेच सकते हैं। यदि आपके स्टॉक की कीमत ऊपर जाती है और कोई नुकसान नहीं होता, तब आपको बीमा का इस्तेमाल करने की कोई आवश्यकता नहीं है और एक बार फिर आपकी एकमात्र लागत आपका प्रीमियम होगी।

9. उदाहरण के लिए, सत्य 20 के प्रीमियम पर 1 इन्फोसिस टेक्नोलॉजीज डी.ई.सी. 2,350 खरीदता है। यह अनुबंध सत्य को वर्तमान तिथि और अगस्त के अंत के बीच किसी भी समय 2,350 प्रति शेयर की कीमत पर 100 शेयर INTEC बेचने की अनुमति देता है। इस विशेषाधिकार के लिए सत्य 2,000 रुपये का प्रीमियम देता है (100 शेयरों के लिए 20 रुपये प्रति शेयर)। एक 'पुट' के खरीदार ने बेचने का अधिकार खरीद लिया है। 'पुट ऑप्शन' के मालिक ने बेचने का अधिकार खरीद लिया है। अब वह लाभ-अलाभ की स्थिति में तभी आएगा, जब स्टॉक 2,330 रुपये के नीचे गिरेगा (2,350-20) और मुनाफा कमाना तभी शुरू करेगा, यदि स्टॉक 2,330 रुपये के नीचे गिर जाएगा।

10. यह सूचीबद्ध विकल्पों का प्राथमिक कार्य है, जिससे निवेशकों को जोखिम प्रबंधन के तरीके मिल सकते हैं।

11. स्ट्राइक प्राइस उस मूल्य को दर्शाती है, जिस पर विकल्प के खरीदार को आधारभूत स्टॉक खरीदने या बेचने का अधिकार होता है। समय के किसी भी बिंदु पर पाँच विभिन्न स्ट्राइक कीमतें उपलब्ध होती हैं। स्ट्राइक प्राइस अंतराल करीब 20 होता है। स्ट्राइक प्राइस को 'एक्सरसाइज प्राइस' भी कहा जाता है। नकदी बाजार में आधारभूत शेयर या सूचकांक की चाल के आधार पर यह कीमत विकल्प की पूरी अवधि के लिए एक्सचेंज द्वारा तय की जाती है।

अब हम अपने असली बिंदु पर आते हैं

“कृपया ध्यान दें कि भविष्य और विकल्प आपके और मेरे जैसे छोटे निवेशकों के लिए नहीं हैं। ये म्यूचुअल फंड्स और एफ.आई.आई. जैसे बड़े खिलाड़ियों के लिए उपयोगी उपकरण हैं। यदि कोई छोटा खिलाड़ी इस खेल को खेलता है तो वह हमेशा अपनी कड़ी मेहनत से कमाए पैसे खो देगा। मैंने कभी एक छोटे निवेशक को एफ एंड ओ (F&O) से स्थायी पैसे बनाते नहीं देखा है। वह कुछ समय के लिए अटकलों का आनंद लेता है और अंत में अपने सारे पैसे एफ एंड ओ में खो देता है।”

इस अध्याय का सारांश

1. भविष्य और विकल्प कारोबार छोटे निवेशकों के लिए नहीं है। यह बड़े संस्थागत निवेशकों और सट्टेबाजों के लिए एक उपकरण है।
2. इसलिए अपनी कड़ी मेहनत के पैसे की सुरक्षा के लिए भविष्य और विकल्प और इंद्रा डे ट्रेडिंग से बचने में बुद्धिमानी है।

□

टी.वी. विश्लेषक हमें भ्रमित कैसे करते हैं?

इस अध्याय में आगे बढ़ने से पहले कृपया ध्यान दें कि टी.वी. पर आनेवाला हर विश्लेषक गलत नहीं होता; लेकिन हम उनकी तकनीकी भाषा को समझने में गलती करते हैं, क्योंकि तकनीकी शब्द सिर्फ व्यापारियों के लिए सही काम करते हैं। यदि आप एक निवेशक हैं तो मूल सिद्धांतों के आधार पर निवेश करना उचित होता है।

उदाहरण के लिए—

दिल्ली की रीता वर्ष 2005 में 220 रुपए की दर से 2.20 लाख रुपए में 1,000 आई.टी.सी. शेयर खरीदती है, जब वह सुनती है कि आई.टी.सी. के शेयरों में बहुत जारी है और पिछले दो वर्षों में उनकी कीमत 70 से 220 पर पहुँच गई है। वह टी.वी. पर एक तकनीकी विश्लेषक को भी कहते सुनती है कि इस शेयर का चार्ट पैटर्न बहुत अच्छा है और लंबी अवधि के अपट्रेंड (बढ़त) में है।

यदि शेयर लक्ष्य 200 को पार कर लेता है तो वह 400 पर जाता है और अगला लक्ष्य 600 का है तो 1,000 पर। वह एक मौलिक विश्लेषक को यह कहते भी सुनती है कि यह एफ.एम.सी.जी. व्यवसाय में एक ब्लू चिप कंपनी है और हर वर्ष 20 से 30 प्रतिशत बढ़ती है, इसलिए यदि आप लंबी अवधि के क्षितिज में निवेश करेंगे तो आपको एक अच्छा रिटर्न मिलेगा।

उसके निवेश के बाद शेयर 240 पर पहुँच जाता है; लेकिन वह उसे बेचकर लाभ बुक नहीं कर सकती, क्योंकि उसने लंबी अवधि के क्षितिज में निवेश किया है। फिर शेयर 200 पर आ जाता है और वह उनका औसत करके 500 और शेयर खरीद लेती है (1.10 लाख रुपए)। उसके बाद शेयर 150 पर आ जाता है और वर्ष 2006 एवं 2007 में 150 से 180 का कारोबार करता है।

उसे अपने निवेश पर कोई रिटर्न नहीं मिला। फिर उसने टी.वी. पर उसी तकनीकी विश्लेषक से अपने निवेश के बारे में पूछा। उसने जवाब में कहा कि आप 200 रुपए का स्टॉप लॉस क्यों नहीं करती? शेयर गिरावट की प्रवृत्ति में है। आप नुकसान बुक करके रिलायंस जैसे किसी तकनीकी रूप से मजबूत शेयर की ओर जाइए, जिसके शेयर 3,000 पर कारोबार कर रहे हैं और हमारा मूल्य लक्ष्य एक वर्ष में 4,500 है।

उसके स्थानांतरण के बाद रिलायंस 1,200 पर आ गया और आई.टी.सी. 350 पर पहुँच गई।

हालाँकि रीता ने शेयर बाजार को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया और अब वह हमेशा शेयर बाजार और उसकी अटकलों की आलोचना करती है।

इस अध्याय का सारांश

1. टी.वी. के हर विश्लेषक पर आँखें बंद करके भरोसा न करें। निवेश करने से पहले अपने खुद की वैचारिक शक्ति का उपयोग करें।
2. एक अल्पावधि की तकनीकी टिप और लंबी अवधि के मौलिक निवेश के बीच के अंतर को समझने का प्रयास करें।
3. नुकसान उठा रहे एक स्टॉक से दूसरे में खरीदारी करना एक अच्छी नीति नहीं है।



व्यापारियों के लिए आध्यात्मिक सुझाव

अब हम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बाजार पर चर्चा करेंगे। बाजार तीन ग्रहों—सूर्य, राहु और शनि पर निर्भर करता है। इसलिए कभी-कभी आप अपने बाजार के कारोबार में अवांछित नुकसान महसूस करते हैं। और आप देखते हैं कि आपका दोस्त, जिसे आपसे कम अनुभव है, जिसकी व्यापार शैली बेवकूफी और जोखिम भरी है, अपने हर सौदे में मुनाफा कमा रहा है, जबकि आपको हर सौदे में नुकसान हो रहा है। ज्योतिषी कहते हैं कि ऐसा कुंडली में ग्रहों की चाल के कारण होता है। गुजरात में बाजार के कुछ व्यापारी कोई भी कारोबारी निर्णय लेने से पहले हमेशा ज्योतिषियों से सलाह लेते हैं।

क्या आप इन चीजों में विश्वास करते हैं?

ठीक है। मेरी दृष्टि में ये चीजें सही हैं और मैं इन उपायों को मानता हूँ।

आज मैं आपको बाजार में आपका नुकसान रोकने के लिए एक साधारण सा टोटका (आध्यात्मिक फॉर्मूला) बताता हूँ। लेकिन यह सिर्फ अन्य निवेशकों के साथ मेरे विचार साझा करने के लिए है। कृपया इस सुझाव के आधार पर बाजार में आखें बंद करके अटकलें न लगाएँ, अन्यथा मैं किसी नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होऊँगा, क्योंकि इस बात की न कोई गारंटी है और न ही कोई वैज्ञानिक कारण कि यह टोटका काम करेगा। लेकिन इसे आजमाने का विचार बुरा नहीं है। और इसे आजमाने के बाद आप टिप्पणी भी दीजिए कि यह काम करता है या नहीं।

यह है वह आध्यात्मिक फॉर्मूला—मंगलवार को शीशम के पेड़ की छाल का एक छोटा टुकड़ा (करीब 3 से 7 इंच का) लें। उसे साफ पानी से धोकर सुखा लें।

जब भी आप बाजार में काम करें तो उस छाल को हमेशा जेब में रखें। कहा जाता है कि यह आपको बाजार में सही फैसले लेने में मदद करता है, कारोबार के समय आपके दिमाग को शांत रखता है और आपके आत्मविश्वास का स्तर बढ़ाता है। यह भी कहा जाता है कि यह आपको विजयी फैसले लेने में मदद करता है। इस टोटके का उपयोग करके देखें और हमें बताएँ कि इसके इस्तेमाल के बाद आपको अपने कारोबार में क्या अंतर देखने को मिले!

मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। कोई भी सौदा करने से पहले कृपया अस्वीकरण पढ़ लें। लेखक किसी भी नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं है और इस टिप की सफलता की कोई गारंटी नहीं देता।

इस अध्याय का सारांश

1. कहा जाता है कि यदि एक व्यापारी अपनी जेब में शीशम (डालबर्गिया साइसोओ) के पेड़ की छाल रखता है तो वह व्यापार में भाग्यशाली होगा।
2. छोटे निवेशक भी इस टोटके का इस्तेमाल करते हैं। जब वे बाजार में खरीदने या बेचने के लिए ऑर्डर देते हैं तो बेहतर किस्मत के लिए जेब में शीशम की छाल रखते हैं।

□

छोटे निवेशकों के लिए आसान तकनीकी विश्लेषण

यदि आप स्टॉक्स का तकनीकी विश्लेषण सीखना चाहते हैं, लेकिन आपको यह मुश्किल लगता है तो चिंता न करें। आप सही जगह पर हैं। मैं ये बिंदु छोटे निवेशकों और दैनिक कारोबारियों के लिए आसान भाषा में लिख रहा हूँ, जिन्हें स्टॉक्स के तकनीकी विश्लेषण के बारे में सीखने में परेशानी होती है। इसलिए निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान से पढ़ें और चरणबद्ध तरीके से आसान तकनीकी विश्लेषण सीखें—

1. तकनीकी विश्लेषण बाजार की गतिविधि, पिछली कीमतों और मात्रा से उत्पन्न आँकड़ों के विश्लेषण द्वारा एक चार्ट पढ़ने की तकनीक और स्टॉक का मूल्यांकन करने की विधि है।

2. मैं आपको यह नहीं सिखाऊँगा कि चार्ट कैसे बनाए जाते हैं और आर.एस.आई., चालू औसत आदि की गणना कैसे की जाती है; क्योंकि कंप्यूटर के इस युग में आपको ऐसी 100 साइट्स मिल जाएँगी, जो तत्काल आपके लिए एक स्टॉक चार्ट तैयार कर देंगी।

इसलिए, हम सरलतम संभव तरीके से चार्ट पढ़ना सीखेंगे।

3. यदि एक स्टॉक अपने निम्न (या उसके निकट) पर खुलता है और उच्च के निकट बंद होता है तो यह बुलंद पैटर्न होगा। मान लीजिए, इन्फोसिस का शेयर 1,190.55 पर बंद होता है और उसका उस दिन का निम्न 1,185.02 है और दिन का उच्च 1,210.33 है। अगले दिन वह 1,184.35 पर बंद होता है, 1,225.33 के उच्च तक जाता है और अंत में 1,217.52 पर बंद होता है। यह भी एक तेजी वाला पैटर्न है और आप इस स्टॉक के साथ लंबे समय तक रहेंगे।

4. यदि स्टॉक अपने उच्च पर (या उसके निकट) खुलता है और काफी गिरावट के बाद अपने निम्न के निकट बंद होता है तो यह मंदी का पैटर्न होगा। इसके अलावा, यदि उपर्युक्त उदाहरण में शेयर 1,212.55 पर खुलता है और 1,187.22 पर बंद होता है तो यह मंदी का पैटर्न होगा और आप इस स्टॉक के साथ ज्यादा आगे नहीं जाएँगे।

5. यदि कोई स्टॉक अपने 50 दिन या 100 दिन के चालू औसत से ऊपर कारोबार करता है तो यह तेजी का पैटर्न होगा और आप अपने स्टॉक को 'होल्ड' या 'राइड' कर सकते हैं।

6. यदि एक स्टॉक अपने 50 या 100 दिन के चालू औसत से नीचे कारोबार करता है तो यह मंदी का पैटर्न है और आप अपना लाभ या हानि बुक कर सकते हैं।

7. अपने चार्ट पर आर.एस.आई. (रिलेटिव स्ट्रेंथ इंडेक्स या सापेक्ष शक्ति सूचकांक) देखें। यदि आर.एस.आई. 70 से ऊपर है तो स्टॉक अधिक खरीद की स्थिति में और जोखिम वाला है। इस तरह के स्टॉक में आपको लंबा कारोबार नहीं करना चाहिए और अपना लाभ बुक कर लेना चाहिए। लेकिन यदि आर.एस.आई. 30 से कम है तो आप अपना निवेश शुरू कर सकते हैं।

8. प्रतिरोध—यह मौजूदा बाजार मूल्य से ऊपर का एक मूल्य स्तर होता है, जिस पर बिक्री का दबाव इतना मजबूत होना चाहिए, जो खरीदारी के दबाव को दूर कर सके और इस प्रकार कीमतों को और ऊपर जाने से रोक सके। इसलिए आप प्रतिरोध के पहले अपना लाभ बुक कर लें।

9. समर्थन—यह मौजूदा बाजार मूल्य से नीचे का मूल्य स्तर होता है, जिस पर खरीद का दबाव इतना मजबूत होना चाहिए कि वह बिक्री के दबाव को दूर कर सके और इस प्रकार कीमतों को और नीचे जाने से रोक सके। इसलिए समर्थन से ऊपर खरीदना शुरू कर दें।

मुझे लगता है, ये नौ बिंदु छोटे निवेशकों के लिए स्टॉक की गतिविधियाँ जानने में सहायक होंगे। याद रखें, तकनीकी विश्लेषण हमेशा सही नहीं होता, इसलिए कुछ मौलिक प्रश्नों को समझने का भी प्रयास करें।

इस अध्याय का सारांश

1. एक छोटे निवेशक के लिए तकनीकों की कुछ जानकारी होना आवश्यक है; लेकिन उसे निवेश हमेशा मूल सिद्धांतों के आधार पर ही करना चाहिए।

2. कोई भी निवेश करने से पहले कृपया चालू औसतों, आर.एस.आई., समर्थन और प्रतिरोध की जाँच कर लें, ताकि आप एक सही निर्णय ले सकें।



पैनी स्टॉक्स में निवेश करने के लिए मेरे मूल सिद्धांत

एक दिन मेरे बॉस (मैं तहसील कार्यालय में काम करता हूँ, इसलिए तहसीलदार मेरे बॉस हैं) ने मुझसे पूछा कि मुझे पैनी स्टॉक्स क्यों पसंद नहीं हैं? उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि इन पैनी स्टॉक्स में एक स्क्रेप व्यवसाय की तरह कारोबार किया जा सकता है। उन्होंने मुझे स्क्रेप की एक दुकान में जाकर दुकानदार का इंटरव्यू लेने की सलाह दी। सौभाग्य से मेरी मुलाकात एक कबाड़ी (स्क्रेप व्यवसायी) से हुई और मैंने उससे पूछा कि उसकी स्क्रेप में कितनी कमाई हो जाती थी? उसने मुझे बताया कि यह बहुत आसान है। उसे स्क्रेप लगभग मुफ्त में मिल जाता था, क्योंकि वह लोहे का एक स्क्रेप 5 रुपए किलो के भाव से खरीदता है और उसे दिल्ली के स्क्रेप बाजार में 10 गुना अधिक दाम में, यानी 50 रुपए प्रति कि.ग्रा. में बेचता है। उसने मुझे बताया कि वह स्क्रेप व्यवसाय में लगभग 1,000 प्रतिशत मार्जिन बना लेता है। तो अब मैंने अपना शेयर स्क्रेप व्यवसाय (यानी पैनी स्टॉक्स में कारोबार) शुरू करने के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया है, क्योंकि सिर्फ पैनी स्टॉक्स हमें आश्चर्यजनक रिटर्न देते हैं और हमारा वांछित 15 प्रतिशत लाभ कम कीमत के स्टॉक से आसान हो जाता है।

एक अच्छे पैनी स्टॉक का चुनाव कैसे करें?

पैनी स्टॉक्स स्क्रेप की तरह होते हैं, क्योंकि अधिकांश कंपनियाँ, जिनके स्टॉक इतनी कम कीमत पर कारोबार करते हैं, बीमार इकाइयाँ होती हैं। इसलिए एक अच्छा पैनी स्टॉक चुनना मुश्किल होता है।

आज मैं आपको अपने खुद के निवेश के लिए एक अच्छा पैनी स्टॉक चुनने के अपने मापदंड बताता हूँ—

मैं पैनी स्टॉक में निवेश करने के लिए इन नियमों का सख्ती से पालन करता हूँ—

1. उसका वर्ष का उच्च/वर्ष का निम्न अनुपात 2 से अधिक नहीं होना चाहिए, जैसाकि मैंने इस पुस्तक में पहले भी बताया है।

2. उसकी प्रोमोटर होल्डिंग 20 प्रतिशत से अधिक होनी चाहिए और पिछले एक वर्ष में प्रोमोटरों की हिस्सेदारी घटी नहीं होनी चाहिए।

3. उसका बाजार मूल्य प्रति शेयर एक वर्ष के शुद्ध राजस्व से कम होना चाहिए और शुद्ध बिक्री या शुद्ध राजस्व शून्य नहीं होना चाहिए।

4. पिछले तीन वर्षों के दौरान कोई स्टॉक विभाजन या बोनस इश्यू गतिविधि नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अधिकांश स्टॉक विभाजन और बोनस शेयरों में वे लगभग तीन से पाँच वर्षों तक फिर से चलायमान नहीं होते।

5. पिछले दो वर्षों के दौरान कोई थोक सौदे नहीं होने चाहिए।

मैं अपने खुद के निवेश के लिए प्रतिदिन कई पैनी कंपनियों को स्कैन करता हूँ और यदि मुझे इन सभी मानदंडों को पूरा करनेवाली कोई कंपनी मिल जाती है तो मैं इन पैनी स्टॉक्स में बहुत छोटा सा एक निवेश कर देता हूँ।

इस अध्याय का सारांश

1. पैनी स्टॉक्स में अपनी कुल निवेश राशि का सिर्फ 10 प्रतिशत निवेश करें, क्योंकि इनमें जोखिम होता है।
2. यदि आप एक अच्छे पैनी स्टॉक का चुनाव करते हैं तो ये स्टॉक्स आपको बहुत अधिक रिटर्न्स दे सकते हैं।

3. पैनी स्टॉक स्क्रेप की तरह होते हैं, क्योंकि अधिकतर कंपनियाँ, जिनके स्टॉक इतनी कम कीमत पर कारोबार करते हैं, बीमार इकाइयाँ होती हैं। इसलिए एक अच्छे पैनी स्टॉक का चुनाव करना काफी मुश्किल काम है।

□

शॉर्ट टर्म ट्रेडिंग के लिए फॉर्मूला

सबसे पहले मैं अपने पाठकों को यह बता दूँ कि मैं इंट्राडे ट्रेडिंग से हमेशा बचता हूँ। यहाँ दिया गया फॉर्मूला इंट्राडे ट्रेडिंग के लिए नहीं है; लेकिन यह 7 से 30 दिनों की डिलीवरी बेस ट्रेडिंग और भविष्य एवं विकल्प स्थितियों के लिए उपयोगी है।

मैं अपनी पुस्तक में यह फॉर्मूला क्यों दे रहा हूँ, जो सिर्फ निवेशकों के लिए है?

मैं यहाँ यह फॉर्मूला इसलिए दे रहा हूँ, ताकि यदि कोई व्यापारी मेरी पुस्तक खरीदता है तो उसे उसके खरीद मूल्य की पूरी कीमत मिल जाए, या फिर अन्य निवेशकों को स्टॉक में अल्पावधि की वृद्धि और गिरावट के संकेतों को पहचानने की शिक्षा मिल जाए।

अब मैं आपको इंट्राडे चार्ट पढ़ने का सिद्धांत और स्टॉक्स में कारोबार करने के लिए कुछ तकनीकी विश्लेषण बताता हूँ।

यह फॉर्मूला मेरे दोस्तों के बीच 'इंट्राडे ट्रेडिंग के शेयर जीनियस फॉर्मूला' के नाम से लोकप्रिय है।

यह एक आसान-सा फॉर्मूला है (आसानी मेरी विशेषता है)। बस, पिछले दिन जिस कीमत पर शेयर खुले थे और बंद हुए थे, उसे देखें, फिर खुलने और बंद होनेवाली कीमतों को घटाएँ और उस आँकड़े को नोट करके देखें कि यह आँकड़ा नकारात्मक है या सकारात्मक? अगले दिन फिर देखें कि किस कीमत पर स्टॉक खुला है। उसे उस कीमत से घटाएँ, जिस पर पिछले दिन स्टॉक बंद हुआ था और आँकड़े को नकारात्मक या सकारात्मक के रूप में नोट करें।

ठीक है, अब डे ट्रेडिंग के इस शेयर जीनियस फॉर्मूला को याद रखें।

1. यदि पिछले दिन की बंद कीमत—पिछले दिन की खुली कीमत = नकारात्मक आँकड़ा है और पिछले दिन के बंद—आज की खुली कीमत भी नकारात्मक है तो आप छोटी पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में मंदी है।

2. यदि पिछले दिन की बंद कीमत—पिछले दिन की खुली कीमत = सकारात्मक आँकड़ा है और पिछले दिन की बंद—आज की खुली कीमत भी सकारात्मक है तो आप लंबी पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में तेजी है।

उदाहरण के लिए, आप अरविंद लिमिटेड का यह मूल्य डेटा देख सकते हैं—

17.12.12 और 18.12.12 के मूल्य डेटा की जाँच करें।

17.12.12 बंद - 17.12.12 खुला है $92.95 - 90.95 = 2$. यह एक सकारात्मक आँकड़ा है और 17.12.12 बंद - 18.12.12 खुला है $93.25 - 92.95 = 0.30$ । यह भी एक सकारात्मक आँकड़ा है। इसलिए आप 18.12.12 को अरविंद में एक लंबी स्थिति ले सकते हैं (बाजार साबित करता है कि इस तेजी के संकेत के बाद आपको 106 का लक्ष्य मिला)।

अब 11.01.13 और 14.01.13 के अनुपात की जाँच करें (बाजार 12.01.13 और 13.01.13 को बंद हुआ)।

11.01.13 बंद - 11.01.13 खुला है $102.80 - 103.7 = (-) 0.90$, जो नकारात्मक आँकड़ा है और 11.01.13 बंद - 14.01.13 खुला है $102.80 - 103 = (-) 0.20$, यह भी एक नकारात्मक आँकड़ा है, और बाजार यह साबित करता है, क्योंकि 19.01.13 पर अरविंद 96 की गिरावट पर है।

इस फॉर्मूले ने हमें छोटी या लंबी स्थिति बनाने के लिए 70-80 प्रतिशत सटीकता प्रदान की है।

नया अपडेट : उपर्युक्त अल्पावधि व्यापार फॉर्मूला मैंने वर्ष 2010 में तैयार किया था, लेकिन और अधिक अनुभव और शोध के बाद मुझे लगता है कि यदि हम इस फॉर्मूले में कुछ बदलाव लाएँगे तो यह डे ट्रेडिंग के लिए उपयोगी होगा।

डे ट्रेडिंग के लिए संशोधित फॉर्मूला इस प्रकार है—

1. यदि पिछला बंद - पिछला खुला = नकारात्मक आँकड़ा है और आज का खुला - पिछला बंद भी नकारात्मक है तो आप छोटी पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में मंदी है।

2. यदि पिछला बंद - पिछला खुला = सकारात्मक आँकड़ा है और आज का खुला - पिछला बंद भी सकारात्मक आँकड़ा है तो आप लंबी पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में तेजी है।

आप यह संशोधित फॉर्मूला डे ट्रेडिंग के लिए उपयोग में ला सकते हैं।
इंट्राडे ट्रेडिंग के लिए पहले ऐसे दस शेयरों का चयन करें, जिन्होंने अपने 200 डी.एम.ए. और 30 डी.एम.ए. के ऊपर कारोबार किया हो।

आपको 200 डी.एम.ए. और 30 डी.एम.ए. मनीकंट्रोल साइट पर मिल जाएँगे। आपको उनकी गणना करने की आवश्यकता नहीं है।

अब इस फॉर्मूले को उन दस शेयरों में लागू करें, जिनका आपने चुनाव किया है।

आपको 3-4 स्टॉक ऐसे मिलेंगे, जो इन शर्तों को पूरा करते हैं—

पिछला बंद - पिछला खुला = सकारात्मक आँकड़ा और आज का खुला - पिछला बंद भी सकारात्मक आँकड़ा है। इन 3-4 स्टॉक्स में लंबी स्थिति बनाएँ, लेकिन 30 डी.एम.ए. का उपयोग अपने स्टॉप लॉस के रूप में करें। आप देखेंगे कि आप 70 प्रतिशत से 90 प्रतिशत व्यापार में मुनाफा कमा रहे हैं।

छोटी स्थितियों के लिए पहले ऐसे 10 स्टॉक्स का चयन करें, जिन्होंने अपने 200 डी.एम.ए. और 30 डी.एम.ए. के नीचे कारोबार किया हो।

आपको 200 डी.एम.ए. और 30 डी.एम.ए. मनीकंट्रोल साइट पर मिल जाएँगे। आपको गणना करने की आवश्यकता नहीं है।

अब इस फॉर्मूले को उन 10 स्टॉक्स में लागू करें, जिनका आपने चुनाव किया है।

आप देखेंगे कि 3-4 स्टॉक्स इन शर्तों को पूरा करते हैं—

पिछला बंद-पिछला खुला = नकारात्मक आँकड़ा और आज का खुला-पिछला बंद भी नकारात्मक आँकड़ा है।

इन 3-4 स्टॉक्स में छोटी स्थिति बनाएँ, लेकिन 30 डी.एम.ए. का उपयोग अपने स्टॉप लॉस के रूप में करें। आप देखेंगे कि आप 70 से 90 प्रतिशत कारोबार में मुनाफा कमा रहे हैं।

इस अध्याय का सारांश

1. 2 से 30 दिनों की पोजीशनल कॉल के लिए इस फॉर्मूले का उपयोग करें—

क. यदि पिछला बंद-पिछला खुला = नकारात्मक आँकड़ा है और पिछला बंद-आज का खुला भी नकारात्मक आँकड़ा है तो आप शॉर्ट पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में मंदी है।

ख. यदि पिछला बंद-पिछला खुला = सकारात्मक आँकड़ा है और पिछला बंद-आज का खुला भी सकारात्मक आँकड़ा है तो आप लॉन्ग पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में तेजी है।

लेकिन आप ऐसे स्टॉक्स का चयन करें, जिन्होंने 200 डी.एम.ए. के ऊपर कारोबार किया हो और 200 डी.एम.ए. का उपयोग स्टॉप लॉस के रूप में करें।

2. इंट्राडे कॉल्स के लिए इस फॉर्मूले का उपयोग करें—

(क) यदि पिछला बंद-पिछला खुला = नकारात्मक आँकड़ा और आज का खुला-पिछला बंद भी नकारात्मक आँकड़ा है तो आप शॉर्ट पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में मंदी है।

(ख) यदि पिछला बंद-पिछला खुला = सकारात्मक आँकड़ा है और आज का खुला-पिछला बंद भी सकारात्मक आँकड़ा है तो आप लॉन्ग पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में तेजी है।

लेकिन आप ऐसे स्टॉक्स का चुनाव करें, जिन्होंने 30 डी.एम.ए. और 200 डी.एम.ए. के ऊपर कारोबार किया हो और 30 डी.एम.ए. का उपयोग स्टॉप लॉस के रूप में करें।

□

म्यूचुअल फंड्स निवेश

आमतौर पर मैं म्यूचुअल फंड्स में निवेश नहीं करता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि जब हम म्यूचुअल फंड्स में निवेश करते हैं तो बाजार को सीखने की संभावना खो देते हैं और सीधे निवेश के रोमांच को गँवा देते हैं।

जब मैं स्टॉक में सीधे निवेश करता हूँ और स्टॉक 25 प्रतिशत के ऊपर चला जाता है तो मैं बहुत उत्साहित हो जाता हूँ और अपने शोध में अधिक खुशी महसूस करता हूँ। लेकिन म्यूचुअल फंड्स के मामले में मुझे लगता है, ये बहुत धीरे-धीरे और बाजार के अनुसार ही चलते हैं। यदि बाजार 20-25 प्रतिशत पर चलता है तो ये 30 प्रतिशत पर चलते हैं, लेकिन जब बाजार 15 प्रतिशत से नीचे होता है तो ये भी 15 प्रतिशत से 20 प्रतिशत नीचे हो जाते हैं।

मुझे अचरज होता है कि टी.वी. पर विशेषज्ञ हमेशा स्टॉप लॉस सिद्धांत का सुझाव देते हैं, लेकिन म्यूचुअल फंड्स स्टॉप लॉस को लागू क्यों नहीं करते हैं? फंड एन.ए.वी. बाजार के अनुसार क्यों गिरते हैं? वर्ष 2007 में बाजार 60 प्रतिशत सही था और सभी म्यूचुअल फंड्स का एन.ए.वी. भी 50-70 प्रतिशत सही था। तो मेरा प्रश्न है, “वे एक छोटे निवेशक की तरह स्टॉप लॉस लागू क्यों नहीं करते? यदि वे 15-20 प्रतिशत की गिरावट पर स्टॉप लॉस लागू कर देते हैं तो उसका एन.ए.वी. 20 प्रतिशत से अधिक नहीं गिरेगा।”

इसलिए आमतौर पर मैं म्यूचुअल फंड्स से बचता हूँ; लेकिन सुरक्षित मुनाफा कमाने के लिए मैं सबसे बड़े कोष आकार निधि में एक अकेला एस.आई.पी. बनाना पसंद करता हूँ (और इस एस.आई.पी. में मैं अपना स्वयं का लाभ बुक करने का सिद्धांत उपयोग में लाता हूँ, जो मैं आपको इस पुस्तक में आगे बताऊँगा)।

म्यूचुअल फंड्स का चुनाव करने के मेरे मानदंड

1. मेरे फॉलोअर्स में से अधिकांश मुझसे म्यूचुअल फंड्स में सर्वोत्तम कर (टैक्स) बचत योजना के बारे में पूछते हैं। मुझे लगता है, आप समझ चुके होंगे कि मेरे विचार सामान्य सलाहकारों से हमेशा अलग होते हैं। और मेरे पास मेरे विचारों को सही साबित करने के लिए कारण भी हैं।

2. सामान्य सलाहकारों और व्यावसायिक पुस्तकों के लिए एक म्यूचुअल फंड के पिछले प्रदर्शन उनके मानदंड होते हैं, इसलिए वे प्रति वर्ष अपनी शीर्ष पसंद बदलते हैं और छोटे निवेशकों को उनके पैसे एक फंड से दूसरे में स्थानांतरित करने की सलाह देते हैं, क्योंकि पिछले प्रदर्शन की कोई गारंटी नहीं होती और अलग-अलग फंड और समय के अनुसार बदलती रहती है।

3. मेरा मानदंड लंबी अवधि के लिए अधिक स्थिर है।

4. मैं म्यूचुअल फंड की वह स्कीम चुनता हूँ, जिसके फंड का आकार सबसे बड़ा होता है; क्योंकि मुझे लगता है, सबसे बड़े फंड आकार वाली योजना बाजार का नेतृत्व करती है और फंड मैनेजर के पास अपने निवेशकों को स्थिर रिटर्न देने के लिए पोर्टफोलियो में विविधता लाने हेतु अधिक पैसे होते हैं।

इस अध्याय का सारांश

1. म्यूचुअल फंड निवेश एक निष्क्रिय निवेश होता है।
2. आपको निवेश सिर्फ एस.आई.पी. विधि में करना चाहिए।
3. ऐसे फंड्स का चुनाव करें, जिनके कोष का आकार सबसे बड़ा हो।
4. अपने म्यूचुअल फंड एस.आई.पी. में समय से लाभ बुक करना न भूलें।
5. पिछले प्रदर्शन पर आधारित सुझाव हर बार बदल सकते हैं, इसलिए अपने सबसे बड़े कोष आकार के फंड्स को किसी अन्य चालू फंड में स्वेप न करें; क्योंकि लंबी अवधि में सबसे बड़े कोष आकार फंड को ही जीत मिलेगी।

□

ई.एल.एस.एस. (ELSS) में लाभांश विकल्प का चुनाव करें

जब आप इनकम टैक्स बचाने के लिए म्यूचुअल फंड्स में निवेश करते हैं (भारत जैसे कुछ देशों में इक्विटी लिंक्ड बचत योजनाएँ या ई.एल.एस.एस. कर-मुक्त हैं) तो आपकी ई.एल.एस.एस. की इकाइयाँ तीन साल के लिए लॉक हो जाती हैं। इसलिए यदि आप ई.एल.एस.एस. पर लाभांश विकल्प चुनते हैं तो आप अपनी ई.एल.एस.एस. की लॉकड इकाइयों पर प्रत्येक वर्ष लाभांश का आनंद उठा सकते हैं।

याद रखें, कुछ देशों में म्यूचुअल फंड इकाइयों पर लाभांश कर-मुक्त होते हैं। इसलिए मेरे सिद्धांत के अनुसार, आपको 'लॉक इन अवधि' के साथ म्यूचुअल फंड्स स्कीम की बचत इक्विटी लिंक का लाभांश विकल्प चुनना चाहिए और एक व्यवस्थित निवेश योजना (समान मासिक किस्तों में निवेश) में निवेश करना चाहिए।

इस अध्याय का सारांश

1. ई.एल.एस.एस. में लाभांश विकल्प चुनें, क्योंकि लाभांश कर-मुक्त हैं (भारत में), ताकि आप अपने 'लॉक इन पीरियड' अवधि में लाभांश का आनंद ले सकें।
2. ई.एल.एस.एस. में केवल एस.आई.पी. पद्धति में निवेश करें।



म्यूचुअल फंड्स एस.आई.पी. में लाभ कैसे बुक करें?

जब बाजार में तेजी की प्रवृत्ति होती है तो अधिकांश निवेशक अपने म्यूचुअल फंड्स में से लाभ बुक नहीं करते, क्योंकि उन्हें टी.वी. चैनल उलझन में डाल देते हैं, जहाँ विशेषज्ञ कहते हैं कि भारत की विकास की कहानी बीस से तीस वर्षों की लंबी अवधि की कहानी है, इसलिए यह समय खरीदने और होल्ड करने का है (वर्ष 2007 में यह वाक्य टी.वी. पर आम था), और जब वर्ष 2008 में बाजार ध्वस्त हो गया तो उन्होंने अपने सभी अचेतन मुनाफे खो दिए।

इसलिए मैंने दीर्घकालिक म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निवेश योजनाओं में लाभ बुक करने के लिए एक फॉर्मूले का आविष्कार किया।

1. यह एक म्यूचुअल फंड के एस.आई.पी. में लाभ बुक करने के लिए बहुत सरल, लेकिन बहुत शक्तिशाली फॉर्मूला है। आप इसे किसी भी पुराने फंड पर लागू कर सकते हैं।

2. मुझे लगता है कि आपको यह फॉर्मूला बहुत पसंद आएगा, क्योंकि इसका आविष्कार मैंने म्यूचुअल फंड्स के पिछले इतिहास पर एक कठिन शोध के बाद किया है।

3. इस फॉर्मूले में जब आपके पोर्टफोलियो की कुल कीमत में 11 प्रतिशत की वृद्धि होती है, तब आप अपना 33 प्रतिशत का कोष बुक करके अपना एस.आई.पी. जारी रख सकते हैं।

4. उदाहरण के लिए, आप एक म्यूचुअल फंड में 10 के एन.ए.वी. पर 500 रुपए का एस.आई.पी. शुरू करते हैं। आपके एस.आई.पी. के 15 महीनों बाद मान लीजिए, आपकी कुल इकाइयाँ 733 हैं, कुल निवेश $15 \times 500 = 7,500$ है और अब एन.ए.वी. 11.36 हो गया है तो आपके पोर्टफोलियो का वर्तमान मूल्य $11.36 \times 733 = 8,326.88$ होगा।

अब आपका शुद्ध लाभ $8,326.88 - 7,500 = 826.88$ है, जो आपके वांछित लाभ से 11 प्रतिशत ऊपर है तो अब आप अपनी $1/3$ (33 प्रतिशत) होल्डिंग बुक करेंगे। यानी आपके पास 733 इकाइयाँ हैं तो आप $733/3 = 244.33$ यूनिट्स बेचेंगे, जिससे आपको $244.33 \times 11.36 = 2,775.58$ मिलेगा। इस 2,775.58 में मान लीजिए कि आप अपना पूरा लाभ 826.88 बुक कर लेते हैं और आपके पास $2,775.58 - 826.88 = 1,948.70$ बचेगा, जो आपका मूल निवेश है, जिसे आप लाभ के रूप में बुक करेंगे।

अब एस.आई.पी. में आपका बचा हुआ निवेश है $7,500 - 1,948 = 5,551.30$ अब अपना एस.आई.पी. जारी रखें और मूल राशि में हर महीने 500 रुपए जोड़ें और कुल निवेश में 11 प्रतिशत की अगली वृद्धि की प्रतीक्षा करें।

उपर्युक्त फॉर्मूले के संदर्भ में मेरे एक पाठक ने मुझे इ-मेल किया कि “प्रिय महेश, मैं काफी समय से आपके लेखों को पढ़ता आ रहा हूँ। मैंने आपके लाभ बुकिंग सूत्र के लिए, जो पहले आपके ब्लॉग में उल्लिखित था, एक एक्सेल शीट तैयार की है (जब लाभ एक निश्चित स्तर पर पहुँच जाए तो अपनी कुल इकाइयों/शेयरों के $1/3$ से लाभ बुक करें)। मैं आपके साथ यह साझा करना चाहता हूँ, ताकि यह जान सकूँ कि क्या इसमें कोई विसंगति मौजूद है, जिसके कारण मुझे आप जैसे परिणाम नहीं प्राप्त हो रहे हैं?”

मैंने इस पाठक की शीट की जाँच की तो पता चला कि वह लाभ की बुकिंग करने के बाद मूल राशि को नहीं घटाता।

मुझे लगता है, अब आप समझ गए होंगे कि जब आपका निवेश 11 प्रतिशत बढ़ता है तो आप अपनी होल्डिंग का $1/3$ बुक कर सकते हैं और 11 प्रतिशत लाभ घटाने के बाद बची हुई मूल राशि का इस्तेमाल अपने व्यक्तिगत उपयोग और ऋण कोषों के लिए कर सकते हैं।

यह सुरक्षित करेगा कि आपको बाजार की किसी भी गिरावट में मुनाफा मिले और साथ ही ऋण एवं इक्विटी में आपके पोर्टफोलियो को भी संतुलित करेगा, क्योंकि एफ.डी. या बचत खाते जैसे ऋण साधनों में अपनी मूल राशि (जो आपको लाभ बुक करने पर मिलेगी) का उपयोग करने की मेरी सलाह से आपको इस मूल राशि में भी 5 से 7 प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलेगा।

इस अध्याय का सारांश

1. म्यूचुअल फंड्स एस.आई.पी. में लाभ बुक करना न भूलें।
2. यह बाजार की किसी भी गिरावट में आपके लाभ को सुरक्षित रखेगा। साथ ही ऋण और इक्विटी में आपके पोर्टफोलियो को संतुलित करेगा।



स्टॉक होल्ड करने के मानदंड

अब मैं आपको 15 प्रतिशत मुनाफे के आगे एक स्टॉक होल्ड करने के अपने मानदंड बताता हूँ। यदि स्टॉक की कीमत चढ़ी हुई है और बाजार की स्थितियाँ आपके स्टॉक के लिए अनुकूल हैं तो उसे होल्ड करें।

आमतौर पर मैं एक स्टॉक को कम-से-कम एक वर्ष के लिए होल्ड करता हूँ, क्योंकि भारतीय कानून के अनुसार, एक वर्ष के बाद होल्ड किए स्टॉक्स पर रिटर्न कर-मुक्त हो जाता है। इसलिए मेरे कुछ स्टॉक इस एक वर्ष की होल्डिंग अवधि में 15 प्रतिशत से अधिक चलते हैं। उदाहरण के लिए, मैंने अगस्त 2013 में 16.35 दर पर प्रीकोल लिमिटेड की सिफारिश की और स्टॉक खरीदे और जुलाई 2014 में प्रीकोल लिमिटेड की सी.एम.पी. 46.65 थी, यानी स्टॉक मुझे जुलाई 2014 में 185.23 प्रतिशत लाभ दे चुका था; लेकिन मैं उसे नहीं बेच सकता था, क्योंकि मेरा एक वर्ष पूरा नहीं हुआ था। अगस्त 2014 के बाद जब इस स्टॉक के लिए मेरी न्यूनतम होल्डिंग अवधि पूरी हो गई तो मैंने इसे 55.30 पर बेच दिया और 238.22 प्रतिशत का कर-मुक्त लाभ प्राप्त कर लिया।

एक और बात याद रखना महत्वपूर्ण है कि यदि स्टॉक की कीमत उसकी शुद्ध बिक्री प्रति शेयर प्रति वर्ष को पार कर लेती है और शेयर आधार मूल्य से 20 प्रतिशत अधिक पर कारोबार करता है तो लाभ बुक करना बुद्धिमाना होगी।

कुल मिलाकर, बाहर निकलने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। सबकुछ लालच और शेयर बाजार में आपके अनुभव पर निर्भर करता है।

हम यह कैसे तय कर सकते हैं कि हमें बाहर निकलने के लिए कौन सी रणनीति का पालन करना है?

इस पुस्तक में मैं तीन रणनीतियाँ दे रहा हूँ—

- प्रवेश मूल्य से 15 प्रतिशत मुनाफे का लक्ष्य मूल्य।

- आधार मूल्य का 20 प्रतिशत +

- अनुमानित लक्ष्य मूल्य (टारगेट प्राइस) टी.पी. = (एन.एस.पी.वाई. + बुक वैल्यू+बेस प्राइस) / 3, जहाँ एन.एस.पी.वाई. का अर्थ है—शुद्ध बिक्री प्रति वर्ष (प्रति शेयर)।

अनुमानित लक्ष्य मूल्य (टारगेट प्राइस) टी.पी. = (एन.एस.पी.वाई. + बुक वैल्यू + बेस प्राइस) / 3 सबसे अच्छा है; लेकिन व्यक्तिगत रूप से मैं इसका पालन नहीं करता। एक वर्ष की मेरी होल्डिंग के बाद यदि मेरा लाभ 15 प्रतिशत से ऊपर होता है तो मैं अपना लाभ बुक कर लेता हूँ, क्योंकि मैं अपने पैसे घुमाता हूँ और लाभ बुक करना हमें हमेशा नुकसान से बचाता है।

इस अध्याय का सारांश

1. यदि स्टॉक की कीमत में अच्छा चढ़ाव है और बाजार की स्थिति आपके स्टॉक के अनुकूल है तो उसे होल्ड करें।

2. बाहर निकलने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं होता। सबकुछ लालच और शेयर बाजार में आपके अनुभव पर निर्भर करता है।

□

शेयर बाजार में अपने नुकसान की पुनःप्राप्ति कैसे करें?

यह संभव है कि आपने यह पुस्तक खरीदने में देर कर दी हो और आपका पोर्टफोलियो नुकसान में चल रहा हो।

अब मैं आपको आपके पोर्टफोलियो के नुकसान की वसूली के लिए एक निश्चित तरीका बताता हूँ।

अपने स्टॉक के 200 डी.एम.ए. की जाँच करें। यदि आपके नुकसान उठानेवाले स्टॉक ने अपने 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत या उससे भी नीचे कारोबार किया हो और स्टॉक ने यह 200 डी.एम.ए. ऊँची कीमत से निचली कीमत पर पार कर लिया हो तो उसे किसी भी बाजार मूल्य पर बेच दें और अपना नुकसान बुक करें।

उदाहरण के लिए, आप 105 रुपए प्रति शेयर की दर से स्टॉक 'ए' में निवेश करते हैं। जब आप निवेश करते हैं तो स्टॉक 'ए' का 200 डी.एम.ए. 98 है। कुछ दिनों बाद आपका स्टॉक 'ए' 105 से गिरकर 92 पर आ जाता है। इसका मतलब आपका स्टॉक अपने 200 डी.एम.ए. से 5 प्रतिशत या अधिक नीचे आ गया है और स्टॉक ने इस 200 डी.एम.ए. की ऊपरी कीमत (105) से निचली कीमत (92) पर पार कर लिया है। यह ताज़ा कमजोरी का संकेत है और स्टॉक की कीमत और नीचे गिर सकती है, इसलिए जब भी आप ऐसी स्थिति में फँस जाएँ तो अपना स्टॉक बेच दें।

अब प्रतिदिन अपने स्टॉक को 200 डी.एम.ए. देखें। आप 200 डी.एम.ए. की गणना खुद भी कर सकते हैं और उसे मनीकंट्रोल साइट पर भी देख सकते हैं। इसके बारे में मेरा यू-ट्यूब वीडियो देखें—

<https://www.youtube.com/watch?v=rSVbuSddVBU>

जब आपका स्टॉक इस 200 डी.एम.ए. को कम कीमत से अधिक कीमत पर पार करता है तो यदि आप उसे बेच चुके हैं तो उसे फिर से खरीद लें और यदि आप उसे बेचने से चूक गए हैं और अभी भी नुकसान में होल्ड कर रहे हैं तो उसमें दोहरी राशि निवेश करें—इस स्तर पर औसत निकालें और उसी स्टॉक में दोहरी राशि निवेश करें।

उदाहरण के लिए, जब आपका स्टॉक नीचे की ओर अपना 200 डी.एम.ए. 98 पार करता है तो स्टॉक के गिरने के साथ डी.एम.ए. भी गिरता है, और यदि आप उसे 90-93 के आसपास बेचते हैं तो संभव है कि स्टॉक अगले तीन से छह महीने में 50 से 60 के आसपास गिर जाए। इस स्थिति में डी.एम.ए. भी 67 से 72 के करीब आ जाएगा। इसलिए जब स्टॉक इस डी.एम.ए. की ऊपरी कीमत पार करे तो यदि आप उसे पहले खरीद चुके हैं तो दोबारा खरीद लें।

यदि आप गिरावट में 90-93 के करीब नहीं बेचते हैं और इस नुकसान उठा रहे स्टॉक को रोककर रखते हैं, जो आपने 105 रुपए की दर पर खरीदा था तो इस बार जब स्टॉक ऊँचाई की ओर अपने 200 डी.एम.ए. को पार करता है तो औसत करने के लिए दोगुनी राशि का निवेश करें और आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि 80 प्रतिशत से अधिक मामलों में आप 30 दिनों के भीतर अपना नुकसान वसूल कर लेंगे।

विस्तृत जानकारी के लिए मेरा यू-ट्यूब वीडियो देखें।

यू-ट्यूब के सर्च बॉक्स में टाइप करें—'महेश कौशिक हाउ टू रिकवर लॉस?' आपको वीडियो की लिंक मिल जाएगी।



सारांश

आप यह पुस्तक पूरी पढ़ चुके हैं और मुझे लगता है कि आप समझ चुके होंगे कि शेयर बाजार में निवेश करना दुनिया का सबसे आसान व्यवसाय है; लेकिन फिर भी, लोग इसमें पैसे गँवा देते हैं, क्योंकि वे इस व्यवसाय को व्यवसाय के रूप में नहीं देखते। वे बाजार में अटकलें लगाते हैं और कुछ आसान तरीके से पैसे कमाने की कोशिश करते हैं। इसलिए यदि आप इस पुस्तक की अवधारणाओं को अपने निवेश में लागू करते हैं और मेरे सिद्धांत के अनुसार एक अच्छे स्टॉक का चुनाव करने में कड़ी मेहनत करते हैं तो आप शेयर बाजार में हमेशा सफल हो सकते हैं।

मुझे बताएँ कि यह पुस्तक आपको कितनी पसंद आई? कृपया अपनी टिप्पणियाँ मुझे mahesh 2073 @yahoo.com पर भेजें।

इस पुस्तक को लिखने के पीछे मेरा मुख्य उद्देश्य आपको आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि आप इस पुस्तक में दिए सुझावों और तकनीकों की सहायता से अच्छे स्टॉक्स का चुनाव कर सकें। लेकिन यदि आपको फिर भी निवेश के लिए एक स्टॉक चुनने में मुश्किल होती है तो कृपया गूगल प्ले स्टोर से बिना संकोच मेरा निःशुल्क ऐप 'मल्टीबैगर स्टॉक्स शेयरजीनियस' डाउनलोड कर लें।

इस ऐप में मैंने स्टॉक्स की पूर्ण शोध रिपोर्ट प्रकाशित की हैं, जो पुस्तक में दिए गए नियमों को पूरा करती हैं और उन स्टॉक्स के नाम भी बताए हैं, जिन्होंने अपने 30, 50, 150 और 200 डी.एम.ए. पार कर लिये हैं।

मैंने इस पुस्तक को लिखने में अपने 12 कीमती वर्ष लगाए हैं। यदि आपको पुस्तक में दिया कोई शब्द समझ में नहीं आता तो कृपया नकारात्मक समीक्षा न दें, क्योंकि पाठकों की नकारात्मक समीक्षा मेरा दिल तोड़ देती है। इसलिए कोई नकारात्मक टिप्पणी लिखने से पहले कृपया अपनी समस्या मुझे इ-मेल कर दें। मैं आपकी समस्या सुलझाने की कोशिश करूँगा और यदि आप तब भी संतुष्ट नहीं हुए तो आप अपनी नकारात्मक टिप्पणी देने के लिए स्वतंत्र होंगे।

मेरा इ-मेल एड्रेस है— mahesh 2073 @yahoo.com

25,000 फॉलोअर्स होने के कारण मैं आप सबकी फोन कॉल्स नहीं ले पाता और सभी इ-मेल के जवाब नहीं दे पाता, इसलिए कृपया धैर्य रखें और यदि आपको सात दिनों के अंदर इ-मेल का जवाब नहीं मिलता तो दोबारा मेल भेजें।

आगे इस पुस्तक का सारांश दिया हुआ है। यदि आप इन बिंदुओं को याद रखेंगे और इनका पालन करेंगे तो आप पाएँगे कि शेयर बाजार का व्यवसाय दुनिया का सबसे आसान व्यवसाय है, क्योंकि शेयर बाजार व्यापार में आप अपना कारोबार बहुत छोटी पूँजी से शुरू कर सकते हैं। यदि आपके पास सिर्फ 100 डॉलर हैं तो भी आप एक कंपनी का स्टॉक या म्यूचुअल फंड की कुछ यूनिट्स खरीदकर अपना शेयर बाजार व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इसलिए कृपया शेयर बाजार निवेश के लिए एक बार फिर इन सुनहरे बिंदुओं को याद कर लें—

1. अपने शेयर बाजार व्यवसाय को एक खुदरा दुकान की तरह समझें और अपने पोर्टफोलियो में विभिन्न प्रकार के स्टॉक्स रखें।

2. हमेशा एक अच्छा लाभांश देनेवाले स्टॉक का चुनाव करें।

3. नए स्टॉक्स हमेशा बाजार में गिरावट के समय खरीदें, जब अच्छे स्टॉक्स डिस्काउंट में कारोबार करते हैं।

4. एक गैर-निष्पादित स्टॉक से औसत कभी न निकालें।

5. अपने स्टॉक्स तब बेचें, जब एक स्टॉक आपको 15 प्रतिशत से अधिक रिटर्न दे रहा हो। अपने पैसे को घुमाएँ। कभी किसी कंपनी से भावनात्मक रूप से न जुड़ें, क्योंकि एक दुकानदार अपनी दुकान का सामान अपने पास रोककर नहीं रखता। जब खरीदार उसे लाभ देता है तो वह अपनी दुकान का सामान बेचने में संकोच नहीं करता।

6. अपनी खरीदारी हमेशा एक कम कीमतवाले स्टॉक से शुरू करें, जो मूल रूप से अच्छा हो। उदाहरण के लिए, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल फॉर्मेट में सभी स्टॉक्स की मूल्य सूची डाउनलोड करें और फिर इस सूची को सबसे छोटी बंद कीमत से सबसे बड़ी में क्रमबद्ध करें। फिर सबसे छोटी बंद कीमत के स्टॉक की बुनियादी बातों की जाँच करें। यदि वह आपके मानदंडों की पूर्ति करता हो तो उसकी न्यूनतम मात्रा खरीद लें और यदि पूर्ति न करता हो तो अगले स्टॉक की जाँच करें। इस प्रक्रिया को दोहराएँ और अपनी शेयर बाजार की खुदरा दुकान का निर्माण करें।

7. किसी विशेष स्टॉक में न्यूनतम निवेश राशि तय करें। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास 50,000 डॉलर हैं तो आप एक कंपनी में निवेश करने के लिए 100 डॉलर निर्धारित करेंगे और अपने खुद के शोध के आधार पर

500 अच्छे लाभांश देनेवाली कंपनियों के शेयर खरीदेंगे।

8. एक ट्रेडिंग सप्ताह में एक से अधिक कंपनी न खरीदें, क्योंकि इससे आपको कंपनियों के मूल सिद्धांतों पर शोध करने का समय मिल जाएगा और आपको कम कीमत पर खरीदने का अवसर मिलेगा।

9. एक स्टॉक को हमेशा उसके तीन वर्ष के औसत मूल्य से 20 प्रतिशत कम पर खरीदें (जिसे मैं आधार मूल्य कहता हूँ) और आधार मूल्य से 20 प्रतिशत अधिक पर लाभ बुक करने का प्रयास करें।

10. जब आपका कारोबार आपको 15 प्रतिशत मुनाफा देता है तो उसे पीछे के स्टॉप लॉस के साथ होल्ड करें। 15 प्रतिशत मुनाफे की न्यूनतम सीमा होती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपने स्टॉक 15 प्रतिशत के ट्रिगर मूल्य पर बेच दें। 15 प्रतिशत के बाद अपने स्टॉक को बारीकी से देखें।

11. यदि स्टॉक की कीमत मात्रा में ऊपर है और बाजार की स्थिति आपके स्टॉक के लिए अनुकूल है तो उसे होल्ड करें।

12. इससे बाहर निकलने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। सबकुछ आपके लालच और शेयर बाजार में आपके अनुभव पर निर्भर करता है।

13. कभी एक कंपनी के शुद्ध लाभ न देखें। हमेशा उसका शुद्ध राजस्व या शुद्ध बिक्री देखें।

14. ऐसे स्टॉक्स का चुनाव करें, जिनमें प्रति शेयर उच्च शुद्ध राजस्व हो। इसके लिए मेरा नया शब्द है— एन.एस.पी.एस. (नेट सेल पर शेयर)।

15. खरीद तब करें, जब स्टॉक का बाजार मूल्य उसके एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व से 20 प्रतिशत कम हो और बिक्री तब करें, जब स्टॉक का वर्तमान बाजार मूल्य एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व को पार कर ले।

16. इस प्रयोजन के लिए स्टॉक को बेचने के लिए अपना मूल लक्ष्य तय करें। इसके लिए प्रति शेयर शुद्ध राजस्व, बुक वैल्यू और स्टॉक के आधार मूल्य का औसत निकालें और उसे 10 प्रतिशत कम कर दें। यह स्टॉक का मूल लक्ष्य होगा।

17. मुनाफा कमाने के लिए मूल लक्ष्य से 15 प्रतिशत कम पर खरीदें, क्योंकि हम अपने स्टॉक तब बेचते हैं, जब उनकी कीमत मूल लक्ष्य कीमत को पार कर लेती है।

18. यदि स्टॉक न अपने मूल लक्ष्य से 25 प्रतिशत या और ऊपर कारोबार किया है तो उससे बचें, क्योंकि स्टॉक का मूल्यांकन ऊँचा है और बाजार की गिरावट के समय वह कम कीमत पर उपलब्ध हो सकता है।

19. अपने फैंसी स्टॉक में बड़ी होल्डिंग न खरीदें।

20. यदि कोई स्टॉक आपकी फैंसी है तो उस विशेष स्टॉक में एक लंबी अवधि की एस.आई.पी. बनाएँ।

21. जब आप किसी स्टॉक को बड़ी मात्रा लाभ में होल्ड कर रहे हैं तो अपने सभी होल्डिंग्स में लाभ बुक न करें।

22. अपनी पूरी होल्डिंग को 1/10 हिस्सों में बाँटें और यदि उस स्टॉक में गिरावट होने लगे तो कीमत की प्रत्येक 30 प्रतिशत गिरावट में 1/10 हिस्सा बेच दें।

23. प्रत्येक स्टॉक के लिए अपनी आरंभिक निवेश राशि का चुनाव करें।

24. जब स्टॉक 15 प्रतिशत से अधिक बढ़ रहा हो तो लाभ बुक कर लें और अपने पैसे एक नए स्टॉक में घुमाएँ।

25. हर बार अपनी नई निवेश राशि में 7.5 प्रतिशत की वृद्धि करें।

26. बड़े व्यापारी शेयर बाजारों में मूल्य-निर्धारण का अनुमान लगाते हैं। आप थोक सौदों के इतिहास के माध्यम से इन अटकलों की पहचान करने का प्रयास करें।

27. ऐसे स्टॉक से बचें, जिसका हाल में थोक (ब्लॉक) सौदा हुआ हो। जब किसी ऐसे स्टॉक में थोक सौदे होते हैं, जिसने अपने वर्ष के उच्च और हर समय के उच्च के आसपास कारोबार किया हो तो उस स्टॉक में आनेवाले एक-दो महीनों में गिरावट शुरू हो सकती है।

28. अंकित मूल्य के नीचे के स्टॉक में जोखिम होता है। इसलिए अंकित मूल्य से नीचे स्टॉक्स खरीदने से पहले हमेशा आधार मूल्य या बेस प्राइस, एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व, हाल के थोक सौदे, हाल के स्टॉक विभाजन और बोनस जैसे अन्य मूलभूत बिंदुओं की जाँच कर लें।

29. जब आप दो स्टॉक्स की कीमतों की तुलना करें तो यह जानने के लिए कि कौन सा स्टॉक सस्ता है, हमेशा उसका अंकित मूल्य देखें।

30. यदि कोई स्टॉक वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से अधिक गिरता है तो उसे न खरीदें, न ही ऐसा स्टॉक खरीदें, जो वर्ष के उच्च से 100 प्रतिशत से अधिक ऊपर जा रहा हो।

31. जब आप किसी नुकसान उठा रहे निवेश में फँस जाते हैं तो उसके वर्ष के उच्च और वर्ष के निम्न अनुपात पर नजर रखें। यदि स्टॉक वर्ष के उच्च से 50 प्रतिशत से अधिक गिरता है तो इसका अर्थ है कि वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 2 से अधिक है, जोकि दीर्घकालिक मंदी का संकेत है और आपको यह स्टॉक बेच देना चाहिए। कुछ वर्षों बाद जब वर्ष का उच्च/निम्न अनुपात 1.5 से कम हो जाता है तो इस बार आप वही मात्रा दोबारा खरीद लें।

32. ऐसे स्टॉक से हमेशा बचें, जिसकी प्रोमोटर होल्डिंग 15 प्रतिशत से कम हो या जिसमें प्रोमोटरों ने पिछले एक वर्ष में होल्डिंग घटा दी हो।

33. ऐसे स्टॉक से बचें, जिसने अपने आधार मूल्य से 20 प्रतिशत ऊपर कारोबार किया हो।
34. ऐसे स्टॉक का चुनाव करें, जिसने अपने एक वर्ष के प्रति शेयर शुद्ध राजस्व से नीचे कारोबार किया हो।
35. ऐसे स्टॉक से बचें, जिसका पिछले दो वर्षों में हालिया थोक सौदा हुआ हो।
36. ऐसे स्टॉक से बचें, जिसका पिछले दो वर्षों में हालिया स्टॉक विभाजन हुआ हो या बोनस जारी हुआ हो, क्योंकि बोनस जारी होने और अंकित मूल्य में विभाजन होने के बाद शेयरों की संख्या बढ़ती है, इसलिए बोनस के बाद कंपनी का शुद्ध ई.पी.एस. कमजोर हो जाता है।
37. भविष्य और विकल्प (फ्यूचर एंड ऑप्शन) और इंद्रा-डे अटकलों में व्यापार न करें। प्रत्येक गिरावट पर औसत न निकालें।
38. शेयर बाजार में निवेश के लिए पैसे उधार न लें।
39. यदि पिछली बंद कीमत-पिछली खुली कीमत = नकारात्मक आँकड़ा है और पिछली बंद कीमत-आज की खुली कीमत भी नकारात्मक है तो आप शॉर्ट पोजीशन बना सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में मंदी है।
40. यदि पिछली बंद कीमत-पिछली खुली कीमत = सकारात्मक आँकड़ा है और पिछली बंद कीमत-आज की खुली कीमत भी सकारात्मक आँकड़ा है तो आप लॉन्ग पोजीशन ले सकते हैं, क्योंकि स्टॉक में तेजी है।
41. शेयर बाजार का सूचकांक निवेश के लिए उचित मानदंड नहीं है, क्योंकि बाजार सूचकांक में स्टॉक समय-समय पर बदलते रहते हैं। हमेशा विशेष शेयर की मूल्य गतिविधि देखें, सूचकांक की गतिविधि पर ध्यान न दें।
42. म्यूचुअल फंड निवेश में सिर्फ एस.आई.पी. पद्धति में निवेश करें। म्यूचुअल फंड एस.आई.पी. में लाभ बुक करना न भूलें। इससे बाजार में गिरावट की स्थिति होने पर भी आपका लाभ सुरक्षित रहेगा और यह आपके पोर्टफोलियो को भी संतुलित करेगा। ऋण और इक्विटी में म्यूचुअल फंड निवेश एक निष्क्रिय निवेश है।
43. ई.एल.एस.एस. में लाभांश विकल्प का चुनाव करें।
44. पैनी स्टॉक्स आपको अनेक रिटर्न्स दे सकते हैं, यदि आप एक अच्छे पैनी स्टॉक का चुनाव करें। पैनी स्टॉक्स में अपनी कुल निवेश राशि का सिर्फ 10 प्रतिशत निवेश करें, क्योंकि इनमें जोखिम होता है।
45. एक छोटे निवेशक के लिए तकनीकों का थोड़ा ज्ञान होना आवश्यक है और निवेश करने से पहले आपको चालू औसत, आर.एस.आई., समर्थन और प्रतिरोध की जांच करने की सलाह दी जाती है, ताकि आप एक अच्छा निर्णय ले सकें। लेकिन निवेश आपको हमेशा मूल सिद्धांतों के आधार पर ही करना चाहिए।
46. माना जाता है कि यदि एक व्यापारी अपनी जेब में डालबर्गिया साइसोओ (शीशम) वृक्ष की छाल रखता है तो व्यापार में भाग्य उसका साथ देता है।
47. टी.वी. के हर विश्लेषक का आँखें बंद करके विश्वास न करें। निवेश करने से पहले खुद की समझ का प्रयोग करें।
48. एक अल्पकालिक तकनीकी टिप और दीर्घकालिक मूल निवेश के बीच के अंतर को समझने का प्रयास करें।
49. एक नुकसान उठा रहे स्टॉक से दूसरे में खरीदारी करना एक अच्छी नीति नहीं है।
50. भविष्य और विकल्प व्यापार छोटे निवेशकों के लिए नहीं है। यह बड़े संस्थागत निवेशकों और सट्टेबाजों के लिए एक उपकरण है।
51. यदि आप शुरुआत में 100 डॉलर निवेश करते हैं और उसमें 10 डॉलर प्रतिमाह जोड़ते हैं और आपका धन 84 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ रहा है तो 20 वर्ष बाद आपके पास लगभग 7,18,03,722 डॉलर होंगे।

गूगल प्ले स्टोर से मेरा 'मल्टीबैगर स्टॉक्स शेयरजीनियस ऐप' डाउनलोड करें। यह नि:शुल्क है। इस ऐप की सहायता से आप भविष्य की मेरी सभी सिफारिशें प्राप्त कर सकते हैं और मुझसे अपनी समस्याओं पर चर्चा भी कर सकते हैं।

□

परिशिष्ट

निफ्टी में 171 बदलावों की सूची

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — ए.बी.बी. इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — एशियन पेंट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — ईस्ट इंडिया होटल्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — ग्लैक्सो (इंडिया) लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — नेस्ले इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — चंबल फर्टिलाइजर्स एंड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि —

स्क्रिप का नाम — केमिकल्स लिमिटेड

विवरण —

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — हीरो होंडा मोटर्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — अपोलो टायर्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — इंडियन एल्युमीनियम कंपनी लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — मद्रास रिफाइनरीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 18-09-96

स्क्रिप का नाम — नागार्जुन फर्टिलाइजर्स

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-05-97

स्क्रिप का नाम — महानगर टेलीफोन निगम लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-05-97

स्क्रिप का नाम — ब्रुक बांड लिप्टन इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 14-05-97

स्क्रिप का नाम — भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 14-05-97

स्क्रिप का नाम — हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 14-05-97

स्क्रिप का नाम — एस.सी.आई.सी.आई. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 14-05-97

स्क्रिप का नाम — डॉ. रेड्डी 'ज' लैबोरेटरीज लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 24-12-97

स्क्रिप का नाम — भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 24-12-97

स्क्रिप का नाम — एस्सार गुजरात लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — बैंक ऑफ इंडिया

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — सिप्ला लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — हीरो होंडा मोटर्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — इन्फोसिस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — एन.आई.आई.टी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — प्रॉक्टर एंड गैबल इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — स्मिथक्लीन बीकम कंज्यूमर हेल्थकेयर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — थर्मैक्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — आंध्रा वैली पावर सप्लाय कंपनी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — अशोक लेलैंड लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — इंडो गल्फ कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — मंगलौर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 07-10-98

स्क्रिप का नाम — पॉण्ड्स इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — डॉ. रेड्डी 'ज' लैबोरेटरीज लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — नोवार्टिस इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — रेकिट एंड कोलमैन इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — अरविंद मिल्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग कंपनी लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 26-05-99

स्क्रिप का नाम — रिलायंस कैपिटल लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 08-09-99

स्क्रिप का नाम — ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 08-09-99

स्क्रिप का नाम — सत्यम कंप्यूटर सर्विसेज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 08-09-99

स्क्रिप का नाम — इंडस्ट्रियल फाइनेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 08-09-99

स्क्रिप का नाम — इंडियन रेयॉन एंड इंडस्ट्रीज लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 10-05-00

स्क्रिप का नाम — डाबर इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 10-05-00

स्क्रिप का नाम — टी.वी.एस. सुजुकी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 24-05-00

स्क्रिप का नाम — एच.सी.एल. इन्फोसिस्टम्स लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 24-05-00

स्क्रिप का नाम — जी टेलीफिल्म्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 24-05-00

स्क्रिप का नाम — ई.आई.एच. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 24-05-00

स्क्रिप का नाम — इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-09-00

स्क्रिप का नाम — डिजिटल इक्विपमेंट (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-09-00

स्क्रिप का नाम — बैंक ऑफ इंडिया

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 17-01-02

स्क्रिप का नाम — सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 17-01-02

स्क्रिप का नाम — विप्रो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 17-01-02

स्क्रिप का नाम — एच.सी.एल. इन्फोसिस्टम्स लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 17-01-02

स्क्रिप का नाम — कोच्ची रिफाइनरीज लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 25-01-02

स्क्रिप का नाम — आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 25-01-02

स्क्रिप का नाम — रेकित बैंकिसर (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 31-05-02

स्क्रिप का नाम — विदेश संचार निगम लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 31-05-02

स्क्रिप का नाम — आई.सी.आई.सी.आई. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 10-10-02

स्क्रिप का नाम — शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 10-10-02

स्क्रिप का नाम — रिलायंस पेट्रोलियम लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-10-02

स्क्रिप का नाम — भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-10-02

स्क्रिप का नाम — एच.सी.एल. टेक्नोलॉजीज लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-10-02

स्क्रिप का नाम — प्रॉक्टर एंड गैबल इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-10-02

स्क्रिप का नाम — एशियन पेंट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 02-05-03

स्क्रिप का नाम — गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 02-05-03

स्क्रिप का नाम — नेशनल एल्युमीनियम कं. लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 02-05-03

स्क्रिप का नाम — नोवार्टिस इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 02-05-03

स्क्रिप का नाम — कैस्ट्रोल (इंडिया) लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-08-03

स्क्रिप का नाम — स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-08-03

स्क्रिप का नाम — नेस्ले इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-03-04

स्क्रिप का नाम — भारती टेली-वेंचर्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-03-04

स्क्रिप का नाम — मारुति उद्योग लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-03-04

स्क्रिप का नाम — ग्लैक्सो स्मिथक्लीन कंज्यूमर हेल्थकेयर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-03-04

स्क्रिप का नाम — एन.आई.आई.टी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 12-04-04

स्क्रिप का नाम — ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 12-04-04

स्क्रिप का नाम — डिजिटल ग्लोबल सॉफ्ट लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 24-05-04

स्क्रिप का नाम — पंजाब नेशनल बैंक

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 24-05-04

स्क्रिप का नाम — लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 10-12-04

स्क्रिप का नाम — लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 10-12-04

स्क्रिप का नाम — ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 25-02-05

स्क्रिप का नाम — टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 25-02-05

स्क्रिप का नाम — इंडियन होटल्स कंपनी लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 26-09-05

स्क्रिप का नाम — जेट एयरवेज (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 26-09-05

स्क्रिप का नाम — कोलगेट पाल्मोलिव (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-06-06

स्क्रिप का नाम — सुजलोन एनर्जी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-06-06

स्क्रिप का नाम — सीमेंस लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-06-06

स्क्रिप का नाम — शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-06-06

स्क्रिप का नाम — टाटा केमिकल्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-09-06

स्क्रिप का नाम — रिलायंस कम्युनिकेशंस लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-09-06

स्क्रिप का नाम — टाटा टी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-04-07

स्क्रिप का नाम — रिलायंस पेट्रोलियम लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-04-07

स्क्रिप का नाम — स्टारलाइट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-04-07

स्क्रिप का नाम — जेट एयरवेज (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-04-07

स्क्रिप का नाम — ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 24-09-07

स्क्रिप का नाम — एन.टी.पी.सी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 24-09-07

स्क्रिप का नाम — डाबर इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 05-10-07

स्क्रिप का नाम — यूनितेक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 05-10-07

स्क्रिप का नाम — इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉरपोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 12-12-07

स्क्रिप का नाम — आइडिया सेल्युलर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 12-12-07

स्क्रिप का नाम — केयर्न इंडिया, लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 12-12-07

स्क्रिप का नाम — महानगर टेलीफोन निगम लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 12-12-07

स्क्रिप का नाम — हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 14-03-08

स्क्रिप का नाम — डी.एल.एफ. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 14-03-08

स्क्रिप का नाम — पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 14-03-08

स्क्रिप का नाम — ग्लैक्सो स्मिथक्लिन फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 14-03-08

स्क्रिप का नाम — बजाज ऑटो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 10-09-08

स्क्रिप का नाम — रिलायंस पावर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 10-09-08

स्क्रिप का नाम — डॉ. रेड्डी 'ज' लैबोरेटरीज लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 12-01-09

स्क्रिप का नाम — रिलायंस कैपिटल लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 12-01-09

स्क्रिप का नाम — सत्यम कंप्यूटर सर्विसेज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-03-09

स्क्रिप का नाम — एक्सिस बैंक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-03-09

स्क्रिप का नाम — जी एंटरटेनमेंट इंटरप्राइजेज लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 17-06-09

स्क्रिप का नाम — जिंदल स्टील एंड पावर लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 17-06-09

स्क्रिप का नाम — रिलायंस पेट्रोलियम लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 22-10-09

स्क्रिप का नाम — जयप्रकाश एसोसिएट्स लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 22-10-09

स्क्रिप का नाम — इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फाइनेंस कंपनी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 22-10-09

स्क्रिप का नाम — टाटा कम्युनिकेशंस लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 22-10-09

स्क्रिप का नाम — नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 08-04-10

स्क्रिप का नाम — कोटक महिंद्रा बैंक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 08-04-10

स्क्रिप का नाम — ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — सेसा गोवा लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — डॉ. रेड्डी 'ज' लैबोरेटरीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — बजाज ऑटो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — यूनिटेक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — आइडिया सेल्युलर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-10-10

स्क्रिप का नाम — ए.बी.बी. इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 25-03-11

स्क्रिप का नाम — ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 25-03-11

स्क्रिप का नाम — सुजलोन एनर्जी लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 10-10-11

स्क्रिप का नाम — कोल इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 10-10-11

स्क्रिप का नाम — रिलायंस कैपिटल लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-04-12

स्क्रिप का नाम — एशियन पेंट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-04-12

स्क्रिप का नाम — बैंक ऑफ बड़ौदा

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-04-12

स्क्रिप का नाम — रिलायंस कम्युनिकेशंस लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-04-12

स्क्रिप का नाम — रिलायंस पॉवर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-09-12

स्क्रिप का नाम — ल्युपिन लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-09-12

स्क्रिप का नाम — अल्ट्रा टेक सीमेंट लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-09-12

स्क्रिप का नाम — स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-09-12

स्क्रिप का नाम — स्टरलाइट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-04-13

स्क्रिप का नाम — इंडसइंड बैंक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-04-13

स्क्रिप का नाम — एन.एम.डी.सी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 01-04-13

स्क्रिप का नाम — सीमेंस लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 01-04-13

स्क्रिप का नाम — विप्रो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-09-13

स्क्रिप का नाम — विप्रो लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-09-13

स्क्रिप का नाम — रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-03-14

स्क्रिप का नाम — जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-03-14

स्क्रिप का नाम — रैनबैक्सी लैबोरेटरीज लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-03-14

स्क्रिप का नाम — टेक महिंद्रा लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-03-14

स्क्रिप का नाम — यूनाइटेड स्पिरिट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 19-09-14

स्क्रिप का नाम — यूनाइटेड स्पिरिट्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 19-09-14

स्क्रिप का नाम — जी एंटरटेनमेंट इंटरप्राइजेज लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-03-15

स्क्रिप का नाम — डी.एल.एफ. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-03-15

स्क्रिप का नाम — जिंदल स्टील एंड पॉवर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 27-03-15

स्क्रिप का नाम — आइडिया सेल्युलर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 27-03-15

स्क्रिप का नाम — येस बैंक लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 29-05-15

स्क्रिप का नाम — आई.डी.एफ.सी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 29-05-15

स्क्रिप का नाम — बॉश लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 28-09-15

स्क्रिप का नाम — एन.एम.डी.सी. लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 28-09-15

स्क्रिप का नाम — अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — केयर्न इंडिया लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — पंजाब नेशनल बैंक

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — वेदांता लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — ऑरोबिंदो फार्मा लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — भारती इन्फ्राटेल लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — आयशर मोटर्स लिमिटेड

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 04-01-16

स्क्रिप का नाम — टाटा मोटर्स लिमिटेड डीवीआर

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 31-01-17

स्क्रिप का नाम — भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि.

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 31-03-17

स्क्रिप का नाम — आइडिया सेल्युलर लिमिटेड

विवरण — सूचकांक से अपवर्जन

बदलाव की तिथि — 31-03-17

स्क्रिप का नाम — इंडियाबुल्स हाउसिंग फाइनेंस लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

बदलाव की तिथि — 31-03-17

स्क्रिप का नाम — इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि.

विवरण — सूचकांक में शामिल

□□□